अरुणिमा

अंक-35 अर्धवार्षिक, 2024-25

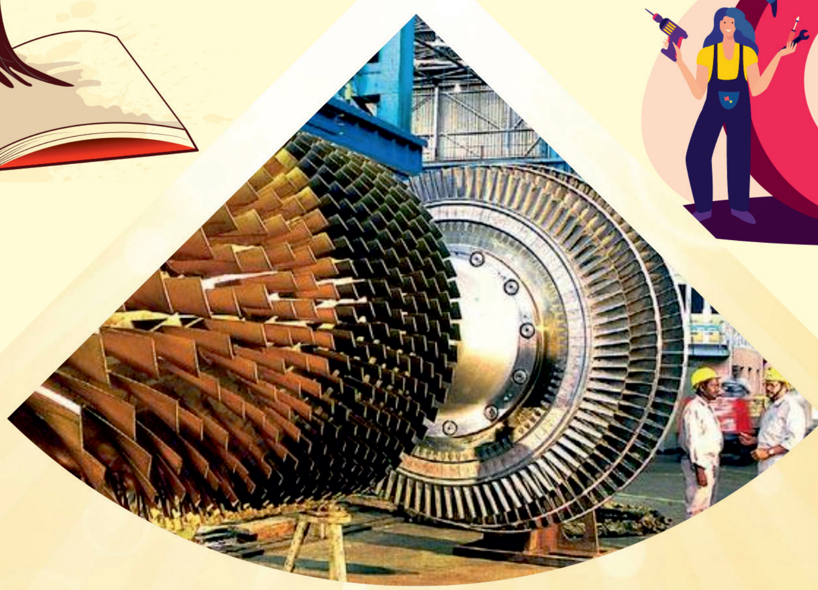

भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

अंतर इकाई राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत 18 इकाइयां पुरस्कृत

माननीय सीएमडी महोदय द्वारा बीएचईएल अंतर इकाई राजभाषा शील्ड योजना 2022–23 के अंतर्गत विभिन्न श्रेणियों में 18 इकाइयों / प्रभागों को पुरस्कृत किया गया। ये पुरस्कार 17 फरवरी, 2024 को आयोजित प्रबंध समिति की बैठक के दौरान विजेता इकाइयों / प्रभागों के प्रमुखों को प्रदान किए गए। शील्ड वितरण समारोह के दौरान सभी निदेशकगण भी उपस्थित थे।

तीन इकाइयों– कॉर्पोरेट कार्यालय, हरिद्वार इकाई और कॉर्पोरेट आरएंडडी हैदराबाद को विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कुल पाँच इकाइयों –एचईआरपी वाराणसी, पीईएम नोएडा, एचईपी भोपाल, पीएसईआर नोएडा और आरसीपुरम हैदराबाद को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। 10 इकाइयों को द्वितीय अथवा तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर माननीय सीएमडी महोदय द्वारा मौलिक हिंदी पुस्तक लेखन योजना के दो विजेताओं – श्री आदित्य कुमार, प्रबंधक पीएसईआर, कोलकाता तथा श्री अभिषेक कुमार सिंह, उप प्रबंधक, त्रिची को भी पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

पावर उद्योग अक्षय ऊर्जा रक्षा और अंतरिक्ष

निदेशक (मानव संसाधन)

संदेश

जैसा कि हम सब जानते हैं हमारे संविधान में हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में दर्ज किया गया है और भारत सरकार के उपक्रम में कार्यरत होने के नाते अपना कार्यालयी कार्य हिन्दी में करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार प्रतिवर्ष राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है, जिसमें हिंदी प्रयोग के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। हमें 2024–25 के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का भरसक प्रयास करना है।

हिन्दी अपने विचारों को देश के अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने का सर्वाधिक सशक्त माध्यम भी है। आज यह व्यापार और व्यवसाय की भाषा के रूप में भी स्थापित हो चुकी है। अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, जिनके ऊपर हिन्दी में काम करने की कोई संवैधानिक बाध्यता नहीं है, भारत में अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए हिन्दी को अपना रही हैं।

बीएचईएल में हिन्दी का प्रयोग न केवल संवैधानिक आवश्यकता है बल्कि यह हमारे व्यवसाय की दृष्टि से भी आवश्यक है। हिन्दी के माध्यम से हम कंपनी संबंधी कोई भी सूचना या उपलब्धि आसानी से कंपनी के प्रत्येक कर्मचारी तक पहुंचा पाते हैं। इससे हमारा आंतरिक संचार (internal communication) भी सुदृढ़ होता है। जब हम सोशल मीडिया पर हिन्दी में पोस्ट करते हैं या प्रेस विज्ञप्ति हिन्दी में जारी करते हैं तो हम अपनी उपलब्धियों को आसानी से एक बड़े पाठक वर्ग तक पहुंचा पाते हैं।

अरुणिमा में प्रकाशित रचनाओं के ज्यादातर लेखक तकनीकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि से हैं। इसके बावजूद उनकी उच्च कोटि की रचनाशीलता व सृजनशीलता को देखकर मैं अभिभूत हूँ। कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों ने भी बहुत ही सुंदर रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। मुझे विश्वास है कि अरुणिमा भविष्य में भी कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की लेखन क्षमता को उचित मंच प्रदान करती रहेगी।

मैं राजभाषा विभाग से जुड़े हमारे साथियों के साथ–साथ "अरुणिमा" के सभी पाठकों, लेखकों, संपादक मण्डल तथा पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी लोगों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाएँ !

(कृष्ण कुमार ठाकुर)

महाप्रबंधक एवं प्रमुख (मानव संसाधन)

संदेश

'अरुणिमा' शब्द का अर्थ है – उगते सूरज की लालिमा। जैसे रात के अंधेरे को छांटते हुए सुबह की पहली किरण हम सबमें ऊर्जा और उत्साह का संचार करती है, वैसे ही बीएचईएल की हिन्दी पत्रिका अरुणिमा हिन्दी प्रसार एवं राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में पिछले डेढ़ दशक से अधिक समय से हम सबमें नए जोश और उमंग का संचार करती रही है।

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि अरुणिमा के 35वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पिछले अंकों की भांति इस अंक में भी कविता, कहानी, तकनीकी आलेख, यात्रा संस्मरण समेत अनेक साहित्यिक विधाओं में की गई रचनाओं को बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस अंक में योग और चिकित्सा संबंधी कुछ बहुत ही उपयोगी आलेखों को सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, कॉर्पोरेट कार्यालय सहित संपूर्ण बीएचईएल में चल रही राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों और उपलब्धियों को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है।

इसमें प्रकाशित रचनाएँ हिन्दी भाषी कर्मचारियों के साथ – साथ हिंदीतर भाषी कर्मचारियों को भी आकर्षित करती रही हैं जिसकी वजह से 'ग' क्षेत्र में अवस्थित इकाइयों में भी हिन्दी का प्रयोग तेजी से बढ़ा है।

मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी यह पत्रिका बीएचईएल में हिंदी प्रसार की भूमिका को बखूबी निभाती रहेगी। वरिष्ठ अधिकारियों से भी मैं यह अपील करता हूँ कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएँ भेजें। इससे कर्मचारी हिंदी प्रयोग के लिए प्रेरित होंगे।

कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन में अरुणिमा की अभूतपूर्व सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ !

श्रीधर

(एम श्रीधर)

संपादकीय

हिन्दी गृह पत्रिका **'अरुणिमा'** के 35वें अंक को आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हम सबके समेकित प्रयासों से 'अरुणिमा' को पिछले कई वर्षों से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम – 1), दिल्ली द्वारा 'श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका' श्रेणी के अंतर्गत लगातार पुरस्कृत किया जा रहा है। ये पुरस्कार हमें प्रेरित और प्रोत्साहित तो करते ही हैं, साथ ही **'अरुणिमा'** को बेहतर बनाने के लिए हममें नई ऊर्जा का संचार भी करते हैं।

पिछले अंकों की भांति, इस बार भी आपने विभिन्न विषयों पर अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक और सारगर्भित आलेख, तकनीकी आलेख, यात्रा संस्मरण, कविताएं इत्यादि भेजकर इस पत्रिका के प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कहानियां और लघुकथाएं हमारे जीवन को विशेष रूप से प्रभावित करती हैं। ये हमारे संचार कौशल को बेहतर बनाने में मदद करती हैं। इनसे विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने की क्षमता विकसित होती है। इसलिए हमें हर बार आपसे कहानियों एवं लघुकथाओं की प्रतीक्षा रहती है। अतः आपसे अनुरोध है कि कहानियाँ या लघुकथा भी लिखें और उन्हें हमारे पास भेजें।

मैं इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। आप सबको ज्ञात ही है कि विभिन्न तकनीकी एवं साहित्यिक विषयों पर हिन्दी में लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ लेखों में से 15 लेखों को पुरस्कृत भी किया जाता है। इस अंक के भी श्रेष्ठ 15 रचनाकारों को नकद पुरस्कार प्रदान कर पुरस्कृत किया जाएगा।

आप सभी के निरंतर सहयोग से **अरुणिमा 35** अंकों और 17 वर्षों की अपनी यात्रा पूरी कर चुकी है। भविष्य में भी आप सबसे इसी सहयोग की अपेक्षा है ताकि साहित्य एवं ज्ञान की यह सरिता निरंतर प्रवाहित होती रहे।

हार्दिक शुभकामनाएं !!

(आर. के. श्रीवास्तव)
महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

संपादक मण्डल

संरक्षक
श्री कोप्पू सदाशिव मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक
श्री कृष्ण कुमार ठाकुर
निदेशक (मा.सं.)

मुख्य परामर्शदाता
श्री एम. श्रीधर
महाप्रबंधक एवं प्रमुख (मा.सं.)

मुख्य संपादक
श्री आर के श्रीवास्तव
महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन)

संपादक
सुश्री चन्द्रकला मिश्र
अपर महाप्रबंधक (राजभाषा)

सह संपादक
श्री अनुराग मिश्र
उप प्रबंधक (राजभाषा)

परामर्शदाता मंडल

सुश्री दीपिका शर्मा
वरि. उप महाप्रबंधक (डिजिटल एचआर–एनालिटिक्स समूह)

श्री उदयराज मीणा
उप महाप्रबंधक (कैपेक्स एवं एसएस एंड पी)

सुश्री अर्चना महाराम यादव
वरि. प्रबंधक (वित्त)

संपादन सहयोग

सुश्री रेणू दास
वरिष्ठ कार्यपालक (राजभाषा)

श्री सुरेश कुमार
सहायक अधिकारी (अनुवाद)

संपर्क सूत्रः
राजभाषा विभाग, बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय,
बीएचईएल न्यू बिल्डिंग, प्लॉट नं. 25, सेक्टर 16ए नोएडा–201301
दूरभाषः 0120–6748470, ईमेलः cmishra@bhel.in, मो.: 9810619923

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं, सरकार अथवा बीएचईएल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

अनुक्रमणिका

क्रं	शीर्षक	रचना वर्ग	लेखक (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पेज नं.
1	तेल एवं गैस क्षेत्र में बीएचईएल के लिए उभरती संभावनाएं	तकनीकी आलेख	शिवांगी	8–10
2	चंद्रयान	कविता	भगत सिंह	10
3	सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का हमारे समाज पर प्रभाव	तकनीकी आलेख	रमेश कुमार बहल	11–14
4	युवा माता–पिता का वित्तीय प्लान	वित्तीय आलेख	विवेक रंजन मल्लिक	15–16
5	चार आंखें (माता–पिता)	कविता	गजेंद्र प्रकाश खंडेलवाल	16
6	लोकल से ग्लोबल	कविता	काव्या सहगल	16
7	जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संरक्षण और बीएचईएलः अनंत ऊर्जा के भंडार की ओर एक कदम	तकनीकी आलेख	दीपक पांडे	17–20
8	जगद्गुरु रामभद्राचार्य एवं गुलजार को ज्ञानपीठ पुरस्कार	समाचार	संकलित	20
9	बच्चों के विकास में योग का महत्व	लेख	सतीश कुमार सिंह	21–22
10	हँसो हरदम – खुशियाँ या गम	आलेख	कविन्दर कुमार	23
11	जीवन–एक संघर्ष	कविता	मनीष कुमार देव	23
12	पक्षियों का समाज एवं रहन–सहन	आलेख	सत्य नारायण पाल	24–25
13	मेरा प्यारा गाँव	कविता	सुदीप कुमार	25
14	पथ सही पहचान कर ले	कविता	शशि रंजन चौधरी	25
15	बीएचईएल, एचईआरपी वाराणसी के ग्रीनको ब्रोंज (कांस्य) प्रमाणित इकाई बनने का सफर	तकनीकी आलेख	प्रत्यूष कुमार उपाध्याय	26–27
16	वेद वाङ्मय परिचय	आलेख	डॉ. दुर्गेश चन्द्र गुप्त	28–30
17	मेरी जिन्दगी की लाइब्रेरी	कविता	आँचल चौधरी	30
18	आजाद हिंदुस्तान का परिदृश्य	कविता	नरेन्द्र कुमार	30
19	ब्रोंकाइटिस क्या है (BRONCHITIS)	स्वास्थ्य संबंधी आलेख	डॉ स्मिता सिंघल	31–32
20	नया दौर (सन्नाटा)	कविता	संदीप सिंह बुदियाल	32
21	कार्यस्थल पर स्वच्छता	आलेख	मिथलेश कुमार	33
22	मेरा सपनाः भारत–2047	आलेख	अरविन्द कुमार गुप्ता	34–35
23	हिन्दी – मेरा अभिमान	कविता	गौरव अब्रोल	35
24	माँ	कविता	नन्द किशोर गुप्ता	35
25	बेसिक लाइफ सपोर्ट देने से बच सकता है संकट में फंसा जीवन	स्वास्थ्य संबंधी आलेख	डॉ. एस.पी. सिंह	36–37
26	हम जीतेंगे	कविता	चन्दन कुमार सिंह	37
27	तेलंगाना के भूले–बिसरे स्वतंत्रता सेनानी	आलेख	मंगल स्वरूप त्रिवेदी	38–40
28	माँ गंगा तुझे प्रणाम	कविता	प्रतिभा शाही	40
29	सिद्धि सदा श्रम से मिलती	कविता	नवल किशोर सिंह	40
30	कांगड़ा किले की यात्रा	यात्रा संस्मरण	असद अली	41
31	'डिजिटल इंडिया' में साइबर क्राइम और सोशल मीडिया की भूमिका	आलेख	अतुल मालवीय	42–43
32	कंपनी में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां	समाचार	संकलित	44–49
33	राजभाषा संबंधी सामान्य जानकारियां	राजभाषा ज्ञान	संकलित	50–51
34	'अनुवाद' बना नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार स्तंभ	आलेख	प्रो. पूरन चंद टंडन	52–53
35	भाषा और अनुवाद	आलेख	लेखा सरीन	53–54
36	गृह (GRIHA)–ग्रीन रेटिंग फॉर इंटीग्रेटेड हैबिटेट असेसमेंट)–एक परिचय	तकनीकी आलेख	शरद कुमार तिवारी	55–56
37	उसने कहा था	कहानी	चंद्रधर शर्मा गुलेरी	56–58

तेल एवं गैस क्षेत्र में बीएचईएल के लिए उभरती संभावनाएं

शिवांगी

भूमिकाः ऊर्जा के स्रोत हमारे जीवन में महत्पूर्ण स्थान रखते हैं। तेल एवं गैस इन्हीं ऊर्जा स्रोतों के प्रकार हैं जिनके ऊपर हम अपनी दिनचर्या की कई छोटी–मोटी जरुरतों के लिए आश्रित रहते हैं। तेल और गैस दोनों का ही जीवन में उच्च स्थान है। बिजली से घर रौशन करना हो, परिवहन का साधन हो, खाना बनाना हो आदि सारे कार्य इनके बिना नहीं हो सकते। घर की तरह ही, तेल एवं गैस, भारत की अर्थव्यवस्था के भी अभिन्न अंग हैं। इनका उपयोग केवल परिवहन, ताप और बिजली तक ही सीमित नहीं है। एक महत्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत होने के अलावा, इनका उपयोग फार्मास्यूटिकल्स, उर्वरक, सॉल्वैंट्स और प्लास्टिक में भी किया जाता है।

आज कच्चे तेल का उत्पादन वैश्विक स्तर पर 80 मिलियन बैरल प्रति दिन से भी ऊपर है। शीर्ष तीन उत्पादक संयुक्त राज्य अमेरिका, सऊदी अरब और रूस हैं। भारत इस सूची में 24वें स्थान पर है और प्रतिदिन 0.8 मिलियन बैरल कच्चे तेल का उत्पादन करता है, जो भारत में कुल कच्चे तेल की खपत का केवल 18% है। अतः भारत तेल और गैस आयात पर बहुत अधिक निर्भर है। हमें कच्चे तेल की कुल जरूरत का 82% और प्राकृतिक गैस की कुल जरूरत का 45% आयात करना पड़ता है। इन आंकड़ों से हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि भारत में तेल और गैस क्षेत्र एक बड़ा और बढ़ता हुआ बाज़ार है, जिसमें अभियांत्रिकी एवं विनिर्माण के अनेक अवसर हैं। बीएचईएल के पास इस क्षेत्र में निपुणता और 50 वर्षों से भी अधिक का व्यापक अनुभव है। इस क्षेत्र में यदि हम अपनी दक्षता और ज्ञान को केंद्रीकृत करें तो हमारे लिए अनेक संभावनाओं के द्वार खुल सकते हैं।

तेल एवं गैस का इतिहासः अग्नि की खोज के बाद से ही मानव ऊर्जा स्रोतों की खोज में लग गया। उसे ऐसे साधन चाहिए थे जो अग्नि से उत्पन्न ऊर्जा को एकत्रित करके सकारात्मक उपयोग में ला सकें और जीवन के कार्य को आसान कर सकें। इसी क्रम में पहले लकड़ियों का उपयोग होता था। उसके बाद जैसे–जैसे कैलोरिफिक माप और ऊर्जा घनत्व मानव की समझ में आया वैसे–वैसे कोयला, तेल एवं गैस उपयोग में आए। फिर भी तेल और गैस का उपयोग 5000 वर्षों से भी अधिक समय से किया जा रहा है लेकिन इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन 19वीं शताब्दी में शुरु हुआ। सन 1859 में पेंसिल्वेनिया के एडविन ड्रेक नामक व्यापारी ने पहला आधुनिक तेल का कुआं खोदा था। तब से लेकर आज तक इसमें उत्तरोत्तर प्रगति हुई है और आज दुनिया भर में 70,000 से अधिक तेल और गैस के कुएं हैं।

संभावित अवसरः भारत में प्रति व्यक्ति ऊर्जा खपत वैश्विक औसत का एक तिहाई है। प्रति व्यक्ति ऊर्जा खपत किसी भी देश के आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक है। इसको बढ़ाने के लिए भारत को आयात पर निर्भर रहना पड़ता है। तेल और गैस अपनी उत्तम ऊर्जा घनत्व की वजह से आयात किए जाते हैं। इस आयात पर, भारत की निर्भरता ने विदेशी मुद्रा भंडार पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। मार्च 2023 में तेल और गैस आयात के कारण भारत का आयात बिल लगभग 868 करोड़ रुपए था। अगले कुछ वर्षों में इसके और बढ़ने की उम्मीद है क्योंकि घरेलू उत्पादन में गिरावट जारी है और उपयोग में लगातार वृद्धि हो रही है।

भारत सरकार तेल और गैस आयात पर निर्भरता कम करने की कोशिश कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2015 के 'ऊर्जा संगम' सम्मेलन में बोलते हुए कहा था कि 2022 में जब भारत अपनी आजादी का 75वां वर्ष मनाएगा तब तक भारत को तेल आयात निर्भरता को 67% तक कम करने की जरूरत है। परन्तु अभी हम इस लक्ष्य से कुछ कदम दूर हैं।

ऊर्जा सुरक्षा के लिए आयात निर्भरता को कम करना अत्यंत आवश्यक है। लेकिन, ऐसा तभी संभव हो सकेगा जब भारत में तेल एवं गैस के व्यापक इंफ्रास्ट्रक्चर बने। आत्मनिर्भर भारत के तहत पूरे तेल व गैस के वैल्यू चेन में भारत को स्वदेशी तकनीक का प्रयोग करके अपनी पहचान बनानी होगी। पेट्रोल, डीजल, एलपीजी व अन्य गैसों का उत्पादन एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया है और इसकी वैल्यू चेन में विभिन्न चरण शामिल हैं। तेल और गैस उद्योग को अपस्ट्रीम, मिडस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम में विभाजित किया जा सकता है। अपस्ट्रीम में कच्चे तेल की खोज, ड्रिलिंग और उत्पादन शामिल है। यह सबसे अधिक कैपिटल इंटेंसिव चरण है। मिडस्ट्रीम में कच्चे तेल का परिवहन और भंडारण शामिल है। डाउनस्ट्रीम गतिविधियों में मुख्य रूप से कच्चे तेल का शुद्धिकरण और उसके बाद उससे निकलने वाले पेट्रोल, डीजल, केरोसिन, जेट ईंधन, एलपीजी, एलएनजी, आदि जैसे उत्पादों का विपणन शामिल है। इसको और अधिक समझने के लिए हम नीचे दिए गए चित्र को देख सकते हैं। (साभारः गूगल)

बीएचईएल के लिए संभावनाएंः बीएचईएल की नींव भारत में

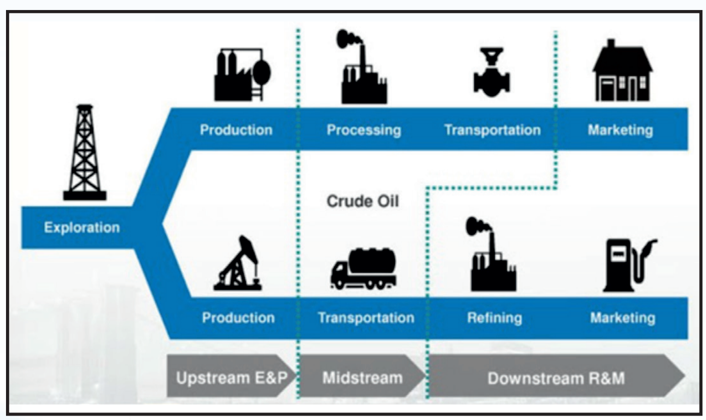

आत्म निर्भरता लाने के लिए ही रखी गई थी। इसी क्रम में आज हम वैश्विक अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रों जैसेः ऊर्जा, परिवाहन, रक्षा, पारेषण आदि की बढ़ती जरुरतों की पूर्ति के लिए 180 से अधिक उत्पाद बनाने वाली भारत में अपनी तरह की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग और विनिर्माण

कंपनी में से एक हैं जो उत्पादों, सेवाओं की एक विस्तृत शृंखला के डिजाइन, इंजीनियरिंग, निर्माण, परीक्षण, कमीशनिंग और सर्विसिंग का कार्य कर रही है। तेल व गैस के क्षेत्र में बीएचईएल का इतिहास सन 1970 के दशक का है जब हमारी कम्पनी ने ओएनजीसी के खोज कार्यक्रमों के लिए ऑन–शोर तेल रिग सप्लाई किया। इसके बाद हमने इस क्षेत्र में पीछे मुड़कर नहीं देखा और आज कई तरह के छोटे–बड़े उपकरणों की आपूर्ति कर रहे हैं। जैसे–जैसे इसके बाजार का विस्तार होगा वैसे–वैसे हमारी कंपनी के लिए असीमित संभावनाओं का द्वार खुलेगा। बीएचईएल पांच दशकों से अधिक समय से इस क्षेत्र में सेवा दे रहा है। भारत में अधिकांश रिफाइनरियां और पेट्रो–रसायन उद्योग बीएचईएल द्वारा आपूर्ति किए गए अनेक उपकरणों से सुसज्जित हैं। घोषणा यह भी की जा चुकी है कि भारत में डाउनस्ट्रीम तेल और गैस 2030 तक 249 मिलियन टन प्रतिवर्ष से 450 मिलियन टन प्रति वर्ष तक बड़े पैमाने पर विस्तार के लिए तैयार है। अगले 4–5 वर्षों में डाउनस्ट्रीम तेल और गैस खंड में 2 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश किए जाने हैं। कई रिफाइनरियां और पेट्रो–रसायन उद्योग की विस्तार परियोजनाएं भी पाइपलाइन में हैं। इन आगामी परियोजनाओं में सेन्ट्रीफ्यूगल कम्प्रेसर, फायर्ड हीटर, हीट एक्सचेंजर्स, वाल्व, उच्च टन भार वाले कॉलम आदि जैसे औद्योगिक उत्पादों में व्यावसायिक अवसर अपेक्षित हैं। हमारी कंपनी ने पिछले कुछ वर्षों में इस अवसर को अत्यंत गंभीरता से लिया है। इसके विकास के लिए अनेक कार्य योजनाएं बनाई गई हैं। कुछ उत्पाद और उनसे संबंधित समुचित अवसर इस प्रकार हैः

अपस्ट्रीमः

कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना भारत सरकार का लक्ष्य है। इसमें देश में नए तेल और गैस भंडार की खोज और विकास शामिल है। सरकार सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों की कंपनियों को नए हाइड्रोकार्बन भंडार की खोज के लिए अन्वेषण गतिविधियों में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। चूंकि बीएचईएल पिछले कई दशकों से इस क्षेत्र के उपयोग में आने वाले उपकरण दे रहा है, इन गतिविधियों की वजह से और अधिक संभावनाएं उत्पन्न होंगी जैसेः

1. तेल रिगः 1974 में हमने पहला तेल रिग ओएनजीसी को आपूर्ति किया था। उसके बाद से बीएचईएल ने तेल–क्षेत्र के उपकरणों में व्यापक अनुभव प्राप्त किया है और पैकेजिंग ड्रिलिंग रिग्स में आत्मनिर्भर बन गया है। बीएचईएल द्वारा आपूर्ति किए गए रिग्स भारत के पश्चिमी भाग के उथले क्षेत्रों के साथ–साथ केजी बेसिन के जटिल क्षेत्रों में अपने प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं।

2. कंप्रेसरः हमने कंप्रेसर के बाजार में अपनी अलग पहचान बनाई है। हमारा उद्देश्य हमेशा से उद्योग को प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उच्च गुणवत्ता मानकों वाले टिकाऊ उत्पाद सप्लाई करना है। इसी क्रम में हमने अनेक तेल व गैस उद्योगों को संयंत्र दिए हैं।

3. वॉल्व (वेल हेड क्रिसमस ट्री): बीएचईएल ने अब तक भारत और विदेशों में ओएनजीसी, ऑयल इंडिया लिमिटेड और अनेक निजी ड्रिलिंग कंपनियों को विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए 10,000 पीएसआई रेटिंग तक के वेल हेड असेंबली और क्रिसमस ट्री वाल्व के कई हज़ार सेट का विनिर्माण और आपूर्ति की है। बीएचईएल देश में वेल हेड्स और क्रिसमस ट्री उपकरण के बाजार में अग्रणी है। हमारा लक्ष्य है कि हम इसी गति के साथ आगे बढ़ते रहें और आने वाले समय में बाजार में अपने वर्चस्व को कायम रख सकें।

4. यांत्रिक पैकेज जैसे हीटर, प्रेशर वेसल, हीट एक्सचेंजर और विद्युत पैकेज जैसे मोटर, अल्टरनेटर, ड्राइव्सः अपस्ट्रीम अनुभाग में कच्चे तेल को निकालने के लिए अनेक तरह के उपकरणों का प्रयोग होता है। बीएचईएल पांच दशकों से इस तरह के उपकरणों का विनिर्माण कर रहा है। इन उत्पादों की गुणवत्ता में हमारी कंपनी की अलग पहचान है। आने वाले समय में जब इनकी मांग बढ़ेगी तब इनके माध्यम से हमारी कंपनी के विविधीकरण को दिशा मिलेगी।

अपस्ट्रीम तेल और गैस क्षेत्र में किए जा रहे पूंजीगत व्यय के अनुरुप इन यंत्रों के खपत में वृद्धि होने की संभावना है। इस परिस्थिति में बीएचईएल के लिए आने वाले समय में सुनहरा मौका है क्योंकि इन उपकरणों की मांग के हिसाब से हम आपूर्ति करने में पूर्णतः सक्षम हैं।

5. सकर रॉड पंपः भारत के ''आत्मनिर्भर भारत मिशन'' के तहत, बीएचईएल ने सकर रॉड पंप के तीन मॉडल विकसित करने का दायित्व लिया। यह एक तेल इकट्ठा करने वाली कृत्रिम लिफ्ट प्रणाली है जिसका उपयोग अपस्ट्रीम तेल और गैस कंपनियों द्वारा पुराने कुओं में किया जाता है जो अब तक आयात किए जा रहे थे। हमारी कंपनी ने हाल ही में इसका फील्ड परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है और अब स्वदेशी रुप से विकसित सकर रॉड पंपों की आपूर्ति करने में पूरी तरह सक्षम है। जैसे–जैसे हमारे देश में तेल के कुएं पुराने होंगे, वैसे–वैसे इस क्षेत्र में बहुत अवसर आएंगे जो हमारी कंपनी के विविधीकरण प्रयासों को सुदृढ़ करते हुए इसे आगे ले जाने में सहायक होंगे।

मिडस्ट्रीम सेक्टरः

इसके अंतर्गत तेल व गैस के भंडारण टैंक और पाइपलाइन निर्माण शामिल हैं। हमने हाल ही में इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड के साथ सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है जिसके मुताबिक हमें सीएनजी और हाइड्रोजन दोनों का भंडारण करने में सक्षम टाइप–IV सिलेंडरों की उन्नति, उत्पादन और कार्यान्वयन पर मिलकर काम करना है। आने वाले समय में हम इन भण्डारण टैंको का उपयोग अन्य गैसों के लिए भी कर सकते हैं। इस प्रकार हम मिडस्ट्रीम में भी अपने लिए संभावित अवसर ढूंढ सकते हैं।

डाउनस्ट्रीम सेक्टरः

1. गैस टरबाइनः गैस के उत्पादन के विस्तार के साथ ही देश में गैस टरबाइन की मांग बढ़ेगी। गैस टरबाइन अपनी कम संचालन लागत की वजह से अत्यधिक लोकप्रिय हैं। जितने भी गहन ऊर्जा वाले उद्योग हैं जैसे पेट्रोकेमिकल, रिफाइनरी, सीमेंट, उर्वरक आदि वे अपने कैप्टिव उपयोग के लिए गैस टरबाइन आधारित पावर प्लांट बनाना चाहते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि इस क्षेत्र में बीएचईएल एकमात्र भारतीय ओईएम है जिसके देश में 230 गैस टर्बाइन सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं। भारतीय रिफाइनरियों की योजनाबद्ध क्षमता विस्तार से गैस टर्बाइनों की मांग और बढ़ेगी।

2. सल्फर पुनर्प्राप्ति इकाई (एस आर यू): डाउनस्ट्रीम सेक्टर में तेल रिफाइनिंग की प्रक्रिया में सल्फर को हटाना बहुत आवश्यक होता है। यह हवा से प्रतिक्रिया कर जहरीला अम्लीय गैस बनाता है जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है। बीएचईएल को हाल ही में इंडियन आयल से पहले एस आर यू प्रोजेक्ट का कार्य मिला है। इसको सफलतापूर्वक निष्पादन के साथ बीएचईएल डाउनस्ट्रीम तेल और गैस क्षेत्र के लिए इस तरह के समाधान को पेश करने के लिए अच्छी स्थिति में है।

3. रिफाइनिंगः इसमें कच्चे तेल को पेट्रोलियम उत्पादों में परिष्कृत करने में उपयोग किए जाने वाले उपकरण शामिल हैं जैसे आसवन टावर, रिएक्टर और हीट एक्सचेंजर्स आदि। एस आर यू की तरह ही रिफाइनरी में प्रयुक्त होने वाले अनेक प्रकार के पैकेज की आपूर्ति में हम सक्षम हैं। बस आवश्यकता है ग्राहक इंटरफ़ेस में बढ़ोतरी की और उसमें भी हमारे प्रयासों में कोई कमी नहीं है। वह दिन दूर नहीं है जब ये प्रयास फलीभूत होंगे और संभावनाओं का पिटारा खुलेगा।

उपसंहारः दक्षता आधारित प्रक्रियाओं और प्रतिबद्ध पेशेवरों की टीम के माध्यम से बीएचईएल ने हमेशा सभी की अपेक्षाओं को पार किया है। यह विविधीकरण का समय है और बीएचईएल को ऑर्डर बुकिंग की गति को बनाए रखने के लिए इस तेल और गैस क्षेत्र को एक बड़े अवसर के रूप में देखना होगा। इस क्षेत्र को हमारी वर्तमान रणनीतिक योजना 2022–2027 में भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसके विकास के लिए अनेक कार्य योजनाएं बनाई गई हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें विनिर्माण के अवसर के साथ हमारी इकाइयों की क्षमता का अच्छा तालमेल है। इसमें योगदान देना हमें आत्म–विकास के समुचित अवसर तो देगा ही साथ ही आत्मनिर्भर भारत की ओर एक मजबूत कदम बढ़ाने में हमारी मदद करेगा। हमारे व्यापक योगदान से तेल व गैस क्षेत्र आगे बढ़ेगा तो भारत में ऊर्जा सुरक्षा प्रशस्त होगी। इसके साथ ही आयात बिल में कमी आएगी और इनके न्यायसंगत उपयोग से भारत 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनने की ओर अपना मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

वरिष्ठ प्रबंधक,
बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

चंद्रयान

भगत सिंह

तल पग जमाए सोम, चंद्रयान देखो,
ब्रह्मांड में, भारत का बढ़ता मान देखो
हाथ लगती निराशा, आशा में बदली
हार के पथ पर, खड़ी थी जीत अगली
सोया हुआ सौभाग्य, अब तो जग चुका है
इसरो का अग्निबाण अब तो चल चुका है
पुरातन का नव हुआ उत्थान देखो
ब्रह्मांड में भारत का बढ़ता मान देखो।।
चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर खड़ा विक्रम
इसरो का फैला रहा चहुं ओर परचम
प्रज्ञान पहिए सोम पर ज्यों ही विचरते
प्रतिद्वंद्वियों के माथे भय से स्वेद झरते
विश्व भी है ले रहा संज्ञान देखो
ब्रह्मांड में भारत का बढ़ता मान देखो।।
मही का प्रज्ञान चंद्रज्ञान लाएगा,
आज खुद घूमेगा कल, इंसा घुमाएगा
चंद्रपथ का पथ सुगम अब हो रहा है
नव स्वप्न के बीज भारत बो रहा है
भरसक प्रयासों से हुआ निर्माण देखो,
ब्रह्मांड में, भारत का बढ़ता मान देखो।।
चाँद की धरती से दूरी, दूरी ना रह जाएगी,
चाँद पर भी टूर आने वाली पीढ़ी जाएगी
सूर्य से लोचन मिलाने चल दिए हैं,
आदित्य को एल1 बिठाने चल दिए हैं
संभावना की हर दिशा प्रस्थान देखो,
ब्रह्मांड में भारत का बढ़ता मान देखो।।
शुक्र और मंगल के जो भी प्रश्न ठहरे,
ब्रह्मांड के खुल जाएंगे कुछ राज गहरे
भागीदारी की पहल भारत करेगा,
सुकृत्यों से सोचा हुआ सब सच करेगा
"वसुधैव एक परिवार" का आह्वान देखो,
ब्रह्मांड में भारत का बढ़ता मान देखो।।

अभियंता, एचपीबीपी, तिरुचि

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास का हमारे समाज पर प्रभाव

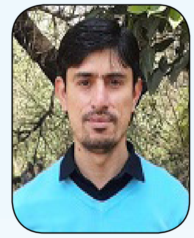

रमेश कुमार बहल

तकनीक के विकास का हमारे समाज पर हमेशा व्यापक प्रभाव रहा है। सभ्यता के उद्भव के साथ ही, हर नए अविष्कार का लोगों की जीवन शैली पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। तकनीक के बदलने से लोगों के रहन–सहन, व्यवहार और उनकी संस्कृति में बदलाव हुए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने लोगों को अधिक जागरूक बनाया है और उनके जीवन स्तर में अकल्पनीय बदलाव किया है। यह सूचना प्रौद्योगिकी ही है जिसने एक नए संपन्न वर्ग को जन्म दिया है जो आज एक बड़ी आबादी को रोजगार दे रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ हमारे पढ़ने, लिखने और सीखने के तरीके भी बदल गए हैं। इंटरनेट के अविष्कार और विकास ने आज सब कुछ ही ऑनलाइन कर दिया है। अगर हम पिछले कुछ दशकों को देखें, तो पाएंगे कि इंटरनेट ने हमारे जीवन और समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हैं।

जब से मानव धरती पर आया है तभी से उसने एक दूसरे को सूचना आदान–प्रदान करने के लिए अनेक तरह के अविष्कार किए हैं जैसे–पहले धुएं से, फिर पक्षियों और जानवरों द्वारा, उसके बाद डाक, टेलीफोन, मोबाइल, ई–मेल, व्हाट्सअप, मैसेंजर, वीडियो कॉलिंग, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इत्यादि।

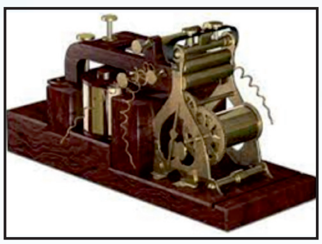

विद्युत टेलीग्राफ

टेलीफोन

1844 ई. में विद्युत टेलीग्राफ के अविष्कार के साथ सूचना प्रौद्योगिकी में क्रान्तिकारी बदलाव शुरू हुआ। 1876 ई. में महान वैज्ञानिक ग्राहम बेल द्वारा टेलीफोन का पेटेंट कराया गया और इससे पहला संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजा गया। इस घटना के 30–40 साल के भीतर ही टेलीफोन हमारे घर और कार्यालयों के लिए एक महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य यन्त्र बन गया। लेकिन, एक स्थान पर स्थिर होने के कारण इससे निजता की सुरक्षा और सुविधानुकूल उपयोग मुश्किल हो रहा था। इसके बाद 1973 ई. में मोटोरोला कंपनी ने मोबाइल फोन का निर्माण किया, जिसने सूचना प्रौद्योगिकी को बदल कर रख दिया और निरंतर विकास के द्वार खोल दिए। इसी समयावधि में अमेरिका में एक और क्रांतिकारी अविष्कार हो रहा था, जिसे हम 'इंटरनेट' कहते हैं। इंटरनेट के विकास का श्रेय वैसे तो बहुत से वैज्ञानिक और अभियंताओं को जाता है, जिनके सतत प्रयास से 1969 ई. से 1983 ई. के बीच इसका उत्तरोत्तर विकास हुआ। परन्तु, प्रमुख रूप से इसके जनक के रूप में हम अमेरिकी वैज्ञानिक लियोनार्ड क्लेनरॉक, बॉब कान और विन्ट सेर्फ को याद करते हैं, जिन्होंने एक ऐसे नेटवर्क पर काम किया जो आगे चलकर इंटरनेट के रूप में जाना गया।

आखिर ये इंटरनेट है क्या ?

दरअसल, इंटरनेट एक प्रकार से आपस में जुड़े हुए कंप्यूटर/मोबाइल की वैश्विक संरचना या जाल है। इंटरनेट को 'नेटवर्क्स का एक नेटवर्क' कहा जा सकता है, जिससे पब्लिक, प्राइवेट बिजनेस, एकेडमिक और सरकारी नेटवर्क्स, लोकल से ग्लोबल स्तर तक इलेक्ट्रॉनिक, वायरलेस या फिर ऑप्टिकल नेटवर्किंग टेक्नॉलॉजी के द्वारा जुड़े होते हैं। इंटरनेट में दो या दो से अधिक कंप्यूटर को जोड़ने के लिए इंटरनेट प्रोटोकॉल (IP) एवं सूचना आदान–प्रदान के लिए ट्रांसमिशन कन्ट्रोल प्रोटोकॉल (TCP) का प्रयोग किया जाता है। TCP डाटा को भेजने से पहले पैकेट्स में डिवाइड करता है और रिसीव करने से पहले असेम्बल करता है। दूसरी तरफ IP एक यात्रा संयोजक की तरह इन्फॉर्मेशन या फिर कहा जाये तो डाटा के मूवमेंट को स्टार्ट पॉइंट से लेकर एन्ड पॉइंट तक पहुँचाने का काम करता है।

साल 1978 में भारतीय मूल के अमेरिकन, वी ए शिवा अय्यदुरई ने एक कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार किया, जिसे ई–मेल कहा गया। इसमें इनबॉक्स, आउटबॉक्स, फोल्डर्स, मेमो, अटैचमेंट्स आदि सभी सुविधा होने के कारण, ये तेजी से सन्देश पहुँचाने के लिए एक सुगम माध्यम बन गया। आज ये फीचर हर ई–मेल सिस्टम के हिस्से हैं। भारत में आम जन–मानस के लिए इंटरनेट की शुरुआत 15 अगस्त 1995 को हुई। देश में इस सुविधा को विदेश संचार निगम लिमिटेड (VSNL) ने कोलकाता में शुरू किया था। समय के साथ सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा बहुत से यन्त्र और तंत्र विकसित हुए जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:–

मोबाइल फोन / स्मार्टफोन

यह एक ऐसा यन्त्र है जिसके माध्यम से आज हम दुनिया में कहीं भी एक जगह से दूसरी जगह न केवल बातचीत और लिखित संदेश भेज सकते हैं बल्कि इंटरनेट की मदद से कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के द्वारा त्वरित सन्देश भी एकल और सामूहिक रूप से भेज सकते हैं। वीडियो कॉलिंग के विकास के साथ तो हम एक स्थान पर बैठकर कहीं भी किसी से लाइव बातचीत कर सकते हैं। मोबाइल फोन आज जनसामान्य की एक भौतिक जरूरत बन

गया है, उसके बिना रहना आज अकल्पनीय सा लगता है। दुनिया के लगभग प्रत्येक व्यक्ति तक किसी न किसी रूप में इस यन्त्र की पहुँच हो चुकी है।

ई–मेल

आज हस्तलिखित पत्राचार का चलन बहुत कम हो गया है और उसकी जगह ई–मेल ने ले ली है क्योंकि यह एक त्वरित सेवा है। आप कुछ ही सेकेंड में कोई सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचा सकते हैं। अगर हम व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की बात करें तो आज वहां अपने कार्मिकों और ग्राहकों से संवाद करने या सूचना देने के लिए ई–मेल का ही उपयोग होता है।

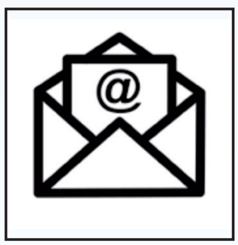

सभी शैक्षिक संस्थान भी आजकल विद्यार्थियों के अभिभावकों से संपर्क करने के लिए या विद्यार्थियों को सूचना/ सन्देश देने के लिए ई–मेल का प्रयोग करते हैं। ई–मेल से सूचना के आदान–प्रदान में समय, धन और पेपर की बचत होने के कारण, यह लगभग सभी प्रकार के संस्थानों/प्रतिष्ठानों द्वारा संपर्क करने, सूचना भेजने का एक प्रमुख विकल्प बन गया है।

ऑनलाइन बातचीत

सभी ई–मेल सुविधा देने वाली कंपनियाँ ऑनलाइन चैट की सुविधा भी प्रदान करती हैं। यह अपने विचारों, सूचनाओं, भावनाओं को एक दूसरे के साथ विमर्श करने का एक बहुत आसान तरीका है। इस सुविधा के द्वारा हम बिना किसी मोबाइल के भी कम्प्यूटर/लैपटॉप की मदद से वर्तमान समय में दूसरों से बातचीत कर सकते हैं। इसके साथ ही अपनी व्यक्तिगत सूचनाओं को भी एक दूसरे से साझा करने का यह एक सरल तरीका है।

दृश्य–श्रव्य (वीडियो) कॉलिंग

वीडियो कॉलिंग सुविधा के प्रादुर्भाव के बाद, हम दुनिया में बैठे किसी व्यक्ति/व्यक्तियों से किसी भी समय अपनी सुविधानुसार बिल्कुल वैसे ही बातचीत कर सकते हैं जैसे कि हम आमने–सामने बैठकर करते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी की यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। इस सुविधा के जन्म के साथ ही हमारे सीखने, पढ़ने, काम करने के तरीके पूर्णरूप

से परिवर्तित हो गए हैं। सोचिए, अगर उपर्युक्त प्रौद्योगिकी का विकास न हुआ होता तो COVID–19 के समय बच्चे कैसे अपनी शिक्षा जारी रख पाते और कैसे हम अपने कामकाज कर पाते।

ब्लॉग्स

यह एक ऐसा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जहाँ हम अपने विचारों, भावनाओं, ज्ञान या किसी विषय के बारे में अपनी जानकारी को सामूहिक रूप से साझा करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी की यह विधा प्रचलन में आई है और खूब चर्चित भी रही है। कई प्रकार की प्रौद्योगिकी इकाइयों ने, सूचना प्रौद्योगिकी की इस विधा को अपने प्रचार–प्रसार और सूचना देने का एक प्रमुख हथियार बना लिया है। आज कोई भी सामान्य या विशिष्ट व्यक्ति इस विधा को अपनी जानकारी, विचार या शिकायत प्रकट करने के लिए उपयोग कर रहा है।

सोशल नेटवर्किंग

पिछले दो दशकों में इंटरनेट आधारित सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उद्भव हुआ है। ये सोशल नेटवर्किंग साइट्स, एक ऐसा प्लेटफार्म हैं, जो सामूहिक रूप से जुड़ने, विचार/जानकारी साझा करने और समान रुचि रखने वाले लोगों को आपस में बातचीत करने, फोटो, वीडियो, फाइल आदि शेयर करने की अनुमति देते हैं। आज हम कई ऐप/ वेबसाइट्स जैसे– फेसबुक, व्हाट्सएप्प, इंस्टाग्राम, ट्विटर, लिंक्डइन या अन्य ज्ञानवर्धक वेबसाइट का इस्तेमाल करते हैं।

त्वरित संदेश भेजने, सामूहिक रूप से अपने विचार प्रकट करने, कोई छायाचित्र/चलचित्र लोगों तक पहुँचाने के लिए कई सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट मौजूद हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी में तकनीकी विकास का हमारे जीवन पर प्रभाव

मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ हमारे जनसंपर्क/सूचना आदान–प्रदान के तरीके भी निरंतर विकसित हुए हैं। पहले नुकीले पत्थर और बाद में नुकीली धातु से पत्थरों पर चित्रों, शिलालेखों द्वारा सूचनाओं या संदेशों का प्रचार–प्रसार किया जाता था। फिर नुकीली लकड़ी या पक्षी के पंखों से कपड़े पर लिखकर, उसके बाद पेपर–पेन, प्रिंटिंग प्रेस, टाइप राईटर, टेलीग्राफ, कंप्यूटर, पेजर, मोबाइल, लैपटॉप, टेबलेट से स्मार्ट फोन तक हमारे सूचना प्रौद्योगिकी में लगातार विकास होता रहा है, जो आज भी जारी है। इंटरनेट के आविष्कार के बाद ई–मेल और संदेश भेजने के त्वरित तरीके ने शायद सूचना प्रौद्योगिकी में बदलाव को सर्वाधिक प्रभावित किया। प्रिंटिंग प्रेस, कंप्यूटर के आने से पहले किसी प्रलेख/दस्तावेज की प्रतिलिपि बनाने के लिए, उसे फिर से लिखना या टाइप करना पड़ता था जो कि एक बहुत मुश्किल और खर्चीला कार्य था। इसी प्रकार, किसी को सन्देश डाक द्वारा भेजना पड़ता था, जिसे पहुंचने में बहुत अधिक समय और पैसा खर्च करना पड़ता था। टेलीग्राम आने के बाद भी हमको शब्द सीमा में बंधकर ही अपना संदेश भेजना होता था। आज देखें तो ये सब अप्रासंगिक सा लगता है। आज कंप्यूटर और इंटरनेट ने सभी प्रकार के लेखन, चित्रकारी, त्रुटि सुधार प्रक्रिया या लेखाचित्र बनाने की प्रक्रिया को अत्यधिक सरल और कम खर्चीला बना दिया है। इंटरनेट के द्वारा आज संदेश/सूचना भेजने और प्राप्त करने के लिए दूरी कोई बाधा नहीं है।

कोई भी संदेश या लिखित सामग्री दुनिया के किसी कोने में तुरंत भेजी जा सकती है। संक्षेप में कहें तो, तकनीकी विकास ने हमारे समय और पैसे की बचत का एक सरल रास्ता खोल दिया है।

वर्तमान में तकनीकी विकास की पहुँच बड़े शहरों से लेकर छोटे गाँव तक है, जिससे आज हमें दूर–दराज के क्षेत्रों में भी बहुत सी सुविधाएं पहुचाने में मदद मिल रही है। लोग गूगल, यूट्यूब और अन्य वेबसाइट्स की मदद से नई विधाएं सीख रहे हैं और अपने हुनर को जन–जन तक पहुंचा रहे हैं, जिससे कि रोजगार के नए अवसर मिल रहे हैं। इंटरनेट के रूप में आज सामान्य आदमी के पास विश्व के हर कोने तक पहुँच बनाने का एक विकल्प मौजूद है, जिसकी मदद से बहुत सी प्रतिभाओं को वैश्विक मंच मिल जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने जन–जन के जीवन को न केवल छुआ है बल्कि चमत्कारिक रूप से बदल कर रख दिया है। आज हर व्यक्ति, संस्था या व्यावसायिक गतिविधि, सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से प्रभावित है। हमारे जनप्रतिनिधि चुनने के तौर–तरीके भी बदल गए हैं। आज संपर्क के लिए, घर–घर पर दस्तक देकर अपने कार्य और योजनाओं को बताने की आवश्यकता नहीं है बल्कि आप अपने ऑफिस/घर में बैठकर भी जन–जन तक पहुँच सकते हैं और उनको अपने कार्य और योजनाओं की जानकारी दे सकते हैं। यही कारण है कि आज पूरे विश्व में लगभग हर राजनैतिक पार्टी न केवल सोशल मीडिया/इंटरनेट की ताकत को समझ रही है बल्कि जन–मानस को प्रभावित करने के लिए उसका भरपूर प्रयोग भी कर रही है।

जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, वैसे ही तकनीकी अविष्कार के भी सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हमारे समाज और जीवन पर पड़ते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के सकारात्मक प्रभाव–

तकनीक के विकास को हमें हर उस सीमा तक प्रोत्साहित करना चाहिए, जहाँ तक हमें उसके सकारात्मक प्रभाव दिखें। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव प्रदर्शित किये हैं जैसे:

- समय की बचत
- त्वरित सामूहिक संदेश भेजना
- दूर–दराज के क्षेत्रों तक पहुँच बनाना
- हर क्षेत्र/व्यक्ति/कला को वैश्विक पहचान बनाने में मदद
- शिक्षा, शैक्षिक सामग्री और शिक्षण के तौर तरीकों को सरल/सुगम्य बनाने में मदद
- अपने नए/पुराने मित्रों, संबंधियों और परिवार–जनों से दूरी की बाधा को मिटाकर उनसे संपर्क को उत्तम और सरल बनाने में मदद
- दुनिया की किसी सामग्री, वस्तु, कला, इतिहास, संस्कृति, भौगोलिक, राजनैतिक या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी को हर किसी की पहुँच में लाने में मदद, इत्यादि।

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के हमारे जीवन पर सकारात्मक प्रभाव अनगिनत हैं, जिनसे आज हमारा जीवन पूर्णतः बदल गया है। आज हम जो जीवन जी रहे हैं ऐसा विगत 50 साल में कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था और शायद आने वाले 50 सालों में सूचना प्रौद्योगिकी में बदलाव, हमारे जीवन को किस तरह प्रभावित करेंगे उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने हमारी खरीददारी (शॉपिंग) के तरीके भी बदल दिए हैं। आज हम छोटे से छोटे घरेलू सामान से लेकर बड़ी से बड़ी वस्तु/मशीन घर बैठकर, ऑनलाइन

शॉपिंग के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

एक अति महत्वपूर्ण बदलाव, हमारे स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण देखने को मिलता है। टेलीमेडिसिन के उपयोग द्वारा दूर–दराज और दुर्गम क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुँचाना संभव हुआ है। कोरोना काल की अति–विपरीत परिस्थिति में भी हम लोगों को स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने में समर्थ हो पाए, इसका श्रेय सूचना प्रौद्योगिकी में हुए तकनीकी विकास को जाता है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में सीमित साधनों द्वारा हम टेलीमेडिसिन की मदद से ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रभावित कर सकते हैं। आज के समय, बहुत से वर्चुअल लैब/चिकित्सालय और हेल्थ एटीएम भी अस्तित्व में आ चुके हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के नकारात्मक प्रभाव–

सूचना प्रौद्योगिकी ने जहाँ बहुत से नए रोजगारों को जन्म दिया है वहीं बहुत से रोजगारों पर संकट भी खड़ा कर दिया है। वर्तमान युग में किसी भी कार्यालय, संस्था तथा उपक्रम में अधिकांश कार्य कंप्यूटर और टेक्नोलॉजी के द्वारा ही किए जाने लगे हैं। जिस कार्य को पहले कई व्यक्ति मिलकर करते थे, आज उस कार्य को एक व्यक्ति, कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर की मदद से कर देता है। जिसके कारण बेरोजगारी में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। कंप्यूटर या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर हम जो भी कार्य करते हैं, या किसी भी प्रकार के फॉर्म इत्यादि भरते हैं, वह सभी डाटा और सूचनाएं किसी न किसी रूप में स्टोर हो जाती हैं जिससे हमारी निजी जानकारियां व बैंक से संबंधित जानकारियां, गोपनीय रखना एक चुनौती बन गया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने जहाँ सब कुछ सरल बनाया है, वहीं इसके साथ धोखा–धड़ी के नए तरीकों का भी उद्‌भव हुआ है और इससे आज बहुत से लोग प्रभावित हो रहे हैं। इसी प्रकार, आज रिकॉर्ड कागजों में ना रखकर मैग्नेटिक माध्यम से कंप्यूटर में रखा जाता है। यदि कंप्यूटर सिस्टम में वायरस आ जाए या अन्य खराबी आ जाए तो पूरा का पूरा डेटाबेस कुछ ही सेंकेंड में नष्ट हो सकता है। यदि डेटाबेस का बैकअप नहीं रखा गया हो तो पूरे के पूरे रिकॉड्‌र्स नष्ट हो जाते हैं।

उपर्युक्त खतरों के साथ–साथ, वर्तमान में अधिकांश व्यक्ति कंप्यूटर एवं स्मार्ट फोन के आदी हो चुके हैं और ये उपकरण उनकी दिनचर्या के अभिन्न अंग बन चुके हैं। हर व्यक्ति दिमागी कार्यों के लिए कंप्यूटर या स्मार्टफोन का उपयोग करता है जिस कारण गणितीय क्रियाओं को बिना टेक्नॉलॉजी के करना मुश्किल होता जा रहा है। इसी के साथ कागजी किताबों को पढ़ने का चलन भी कम होता जा रहा है, जो दिमागी कार्य क्षमता को प्रभावित कर रहा है। टेक्नोलॉजी की बढ़ती आदत का सबसे बड़ा प्रभाव हमारे दिमाग, स्वास्थ्य और सामाजिक ताने–बाने पर पड़ रहा है। लोग एक घर या ऑफिस में रहते हुए भी साथ में नहीं होते हैं। सभी अपने–अपने मोबाइल/लैपटॉप/कंप्यूटर या टैबलेट पर व्यस्त रहते हैं। लगातार स्क्रीन देखने के कारण बच्चे या बड़े, सभी चिड़चिड़े होते जा रहे हैं। जिससे परिवार और कार्यालयों का माहौल ही बदल रहा है। लोग मानसिक तनाव और विभिन्न शारीरिक समस्याओं के शिकार हो रहे हैं। परिवारों के बिखरने का भी एक कारण इंटरनेट आधारित वेबसाइट और ऐप्स बन रहे हैं। इंटरनेट एडिक्शन (इंटरनेट की लत) किसी नशे की लत की तरह ही है। जैसे किसी नशे की लत लगने

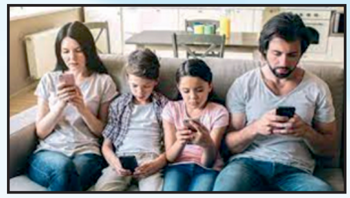

से इंसान अपना दिमागी संतुलन खो बैठता है, ठीक वैसे ही इंटरनेट के अत्यधिक इस्तेमाल से इंसान अपनी ही दुनिया में व्यस्त रहता हैं और आस–पास क्या हो रहा है, उसे उससे कोई मतलब नहीं रहता। जिसका सीधा प्रभाव उसकी मानसिक स्थिति और उसके निजी जीवन के रिश्तों पर पड़ता है।

आजकल हम बच्चों को घंटों फोन में आँखें गड़ाए गेम्स खेलते/सोशल वेबसाइट्स का इस्तेमाल करते देखते हैं। अगर ऐसे बच्चों (जिनको कि इनकी लत लग चुकी है) को हम रोकते हैं तो वे अत्यधिक गुस्सैल और चिड़चिड़े हो जाते हैं। शोध से पता चला है कि इंटरनेट के अत्यधिक इस्तेमाल से व्यक्ति के अवसाद (डिप्रेशन) के शिकार होने का खतरा भी बढ़ जाता है। विशेष रूप से विद्यार्थियों और किशोरों में यह स्थिति बहुत खतरनाक है। ज्यादा समय ऑनलाइन बिताने का सीधा असर विद्यार्थियों की पढ़ाई पर दिखाई देता है। जहाँ इंटरनेट का असली मकसद विद्यार्थियों/लोगों को उचित व बेहतर सामग्री उपलब्ध करवाना था वहीं इसके दुरुपयोग के कारण, यह नई बीमारियों और अवसाद का कारण बन रहा है।

निष्कर्ष

आज के युग में इंटरनेट/मोबाइल के बिना जीवन की कल्पना भी मुश्किल दिखाई देती है। अतः हमें तकनीक के सदुपयोग और दुरुपयोग में अंतर समझना होगा। दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के इन नवाचारों को आत्मसात करना जरूरी है नहीं तो भौतिक/आर्थिक उन्नति की दौड़ में हम बहुत पीछे रह सकते हैं। आज बहुत जरूरी हो गया है कि हम ये समझें और अपने बच्चों/विद्यार्थियों को भी समझाएं कि कैसे और कब हमें सूचना प्रौद्योगिकी के इन नवाचारों का उपयोग करना चाहिए और कब नहीं। बच्चों के लिए इंटरनेट/मोबाइल उपयोग की प्रतिदिन समय सीमा तय कर दी जानी चाहिए। नौनिहाल/छोटे बच्चों को जितना हो सके स्क्रीन से दूर रखना होगा, जिससे उनमें बचपन से ही इनकी लत न लगे। जब सभी लोग सूचना प्रौद्योगिकी के अच्छे–बुरे, दोनों पहलुओं को भली–भांति समझेंगे, तो उसका सदुपयोग भी उचित तरीके से कर पाएंगे और तभी हम तकनीकी नवाचारों से अपने भविष्य को उज्ज्वल बना पाएंगे।

प्रबंधक, बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

युवा माता-पिता का वित्तीय प्लान

विवेक रंजन मल्लिक

शादी के तुरंत बाद नव दम्पति घूमने–फिरने और नई–नई चीजें खरीदने में लगे रहते हैं। सभी चिंताओं से बेफिक्र होकर खूब खर्च करते हैं। नई नौकरी, नई कार, . . . नया उमंग, जैसे आज ही सब हासिल करना है, कल किसने देखा है। लेकिन जैसे ही परिवार में एक नए सदस्य का आगमन होता है, सारी बेफिक्री गायब हो जाती है। नव दम्पति से वे युवा माता–पिता बन जाते हैं, मानो दुनिया ही बदल जाती है। बच्चे के भविष्य की चिंता होने लगती है और तरह–तरह के प्लान बनने शुरू होते हैं। यदि आप भी एक युवा अभिभावक हैं और अपने बच्चे के सुनहरे भविष्य के लिए वित्तीय प्लान बनाने की सोच रहे हैं तो यह लेख आपके लिए एक चेकलिस्ट का काम करेगी।

सबसे पहले, यह सुनिश्चित करें कि आपके पास पर्याप्त जीवन बीमा हो। तरह–तरह के जटिल नाम वाले प्लान, मनी बैक प्लान, गारंटीड प्लान, यूलिप, एक लाख दो और दो लाख पाओ जैसे प्लान नहीं, बल्कि एक शुद्ध सिम्पल टर्म इंश्योरेंस प्लान जिसमें मृत्यु लाभ के अलावा कोई अन्य प्रलोभन नहीं हो। याद रखें बीमा सुरक्षा के लिए लेते हैं रिटर्न के लिए नहीं। यदि विरासत में आपको बहुत सारी दौलत नहीं मिली है, तो सम्पत्ति बनाने में काफी समय लगेगा और इस दौरान जीवन बीमा वह जरूरी बैक–अप देता है जो धीरे–धीरे धन सृजन करने के लिए आवश्यक है। यदि पति–पत्नी दोनों नौकरी करते हों तो दोनों को अलग–अलग व्यक्तिगत टर्म प्लान लेना चाहिए।

दूसरा, एक आकस्मिक फंड (emergency fund) का निर्माण करें। अपने मौजूदा बचत और निवेश पर नजर डालें, देखें कि इसमें से कितना पैसा तुरंत उपलब्ध हो सकता है यदि अकस्मात कोई घटना हो जाए तो। नौकरी गँवाना, अचानक बीमार होना, सड़क दुर्घटना का शिकार होना, आदि परिस्थितियों के लिए तैयार रहने की जरूरत है क्योंकि विपत्ति बता कर नहीं आती। इसके लिए लगभग 6 महीने का खर्च ऐसे साधनों में होना चाहिए जो तुरंत उपलब्ध हों। बैंक बचत खाता या लिक्विड म्यूचुअल फंड जैसे विकल्पों पर आप विचार कर सकते हैं।

तीसरा महत्वपूर्ण मुद्दा, बच्चे की देखभाल और अपने करियर के लिए बहुत सोच–समझ कर निर्णय लें। बच्चे का पालन–पोषण और साथ में नौकरी पर ध्यान देना आसान काम नहीं, खासकर उन महिलाओं के लिए जो स्वयं अपने बच्चे की देखभाल करती हैं। यदि आपको जॉब बदलनी हो या वर्क फ्रॉम होम करना हो या बच्चे के लिए आया रखनी हो या ऐसा ही कोई अन्य परिवर्तन करना हो तो इसमें होने वाले अतिरिक्त खर्च का हिसाब करना ना भूलें। अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से बात करें और जानें कि उन्होंने जीवन के इस पड़ाव को कैसे पार किया था। फिर अपनी परिस्थिति के अनुसार अपना विकल्प चुनें। यदि आप जॉब से कुछ समय के लिए ब्रेक लेने का प्लान बनाएं तो यह सुनिश्चित करें कि इसके लिए भी पर्याप्त फंड मौजूद हो। लेकिन ऐसा भी ना हो कि आपके करियर के चक्कर में आपका बच्चा स्वयं को उपेक्षित महसूस करे।

चौथी कड़ी, बचत करने की आदत डालना जरूरी है। और बचत करना आपके घर–खर्च पर निर्भर करता है। हो सकता है आपको अकाउंटिंग की समुचित जानकारी नहीं हो और आप एक विस्तृत बजट न बना पाएं, लेकिन मुख्यतः आपके खर्च कहाँ हो रहे हैं, यह आपको पता होना चाहिए। लोन, EMIs, परिवहन, राशन–पानी और दूध–सब्जी पर होने वाले खर्च को जोड़ कर देखें। ये खर्च आपकी आमदनी के 50% से अधिक नहीं होना चाहिए। अब अपने अन्य इच्छा आधारित खर्च पर नजर डालें – बाहर घूमना–खाना, मनोरंजन, कपड़े, आदि पर आमदनी के 30% से ज्यादा खर्च नहीं होना चाहिए। यदि आप अपनी आय का 20% बचत कर पा रहे हैं तो यह एक अच्छी शुरुआत है। आगे चलकर इस बचत दर को और बढ़ाने की कोशिश करें।

पाँचवीं बात, अपने बड़े खर्चों के प्रति अपनी सोच पर ध्यान दें। नया एयर कंडीशनर लगवाना, पुराने फर्निचर बदलना, तरह–तरह के रसोई उपकरण खरीदना, आदि ऐसे काम हैं जो अभी तुरंत जरूरी लगते हैं। लेकिन क्या आपको वास्तव में ब्लेंडर या सैंडविच मेकर की जरूरत है? कहीं आप आवेश में खरीदारी के शिकार तो नहीं हो रहे! या हर त्योहार पर लगने वाली सेल में दिख रही भयंकर छूट का लोभ तो नहीं है? ऐसी बहुत सारी इच्छाएँ (wants) हैं जो आपको आवश्यकताएं (needs) प्रतीत होंगी। आपको अपनी इच्छा और आवश्यकता में भेद करना होगा ताकि आप भविष्य के लिए उचित बचत कर पाएं।

छठा कदम, क्या आप झटपट लोन लेने में विश्वास रखते हैं? आजकल खर्च करने पर बहुत जोर दिया जा रहा है। झूठी शान–ओ–शौकत दिखाने में लोग आकंठ कर्ज में डूबे हुए हैं। क्रेडिट कार्ड और व्यक्तिगत ऋण धड़ल्ले से बाँटे जा रहे हैं। ठीक है कि आपके पास एक स्थायी नौकरी है और आप भविष्य में आमदनी बढ़ने के लिए आश्वस्त हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आज आप बड़े EMIs देने को तत्पर हो जाएं। जब आपकी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा EMI की भेंट चढ़ जाएगा और अचानक कोई परेशानी आ जाएगी तो आप स्वयं को मजबूर पाएंगे और फिर एक लोन लेने की जरूरत महसूस करेंगे। इस दुष्चक्र से निकलना बहुत मुश्किल हो जाएगा। पर्सनल लोन लेने से बचें और क्रेडिट कार्ड बिल का समय से भुगतान करें।

सात, आप अपने बचत के साथ क्या करते हैं? क्या आपकी सारी बचत आपके बैंक बचत खाता में पड़ा रहता है? या स्वीप–इन द्वारा सावधि जमा में चला जाता है? बचत के संबंध में आपको मुद्रास्फीति या महँगाई का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। यदि आप इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में SIP द्वारा निवेश कर रहे हैं तो अच्छी बात है। लेकिन अप्रत्याशित लाभ के लिए IPO खरीदना या दोस्तों की सलाह पर शेयर बाजार में ट्रेडिंग करना नुकसानदायक हो सकता है। बिना सोचे–समझे सिर्फ टैक्स बचत के लिए यूलिप या अन्य अनावश्यक उत्पाद में निवेश करना ठीक नहीं

है। एक अच्छे सलाहकार की मदद से अपना निवेश पोर्टफोलियो बनाएं जिसमें उचित विविधता हो और धीरे–धीरे अपना ज्ञान बढ़ाएं ताकि भविष्य में आप अपना निवेश स्वयं कर सकें। सही एसेट में निवेश ही आपको वित्तीय स्वतंत्रता दिला सकता है।

आठवाँ बिंदु, अपने बच्चे के नाम निवेश शुरु करें। इससे आपको दो फायदे होंगे: पहला, बच्चे के नाम पर निवेशित धन को आप जल्दी से नहीं निकालेंगे क्योंकि इससे आपकी भावनाएं जुड़ी हैं। और यह लम्बी अवधि के निवेश में उचित अनुशासन लाता है। दूसरा, यदि आप इस पैसे को बच्चे के बालिग होने तक नहीं निकालते हैं तो यह पूर्णतः आयकर मुक्त हो जाता है। तो बच्चे के नाम से लम्बी अवधि वाले ग्रोथ उत्पाद जैसे इक्विटी म्यूचुअल फंड में सिस्टमैटिक इंवेस्टमेंट प्लान (Systematic Investment Plan) द्वारा निवेश करें। और हाँ, इसे सरल रखें, एक या दो फंड, बस। ऐसा जटिल पोर्टफोलियो ना बना लें जिसे लागू करना और ध्यान रखना मुश्किल हो जाए।

नौवीं बात, अपने व्यवहार पर नजर रखें। रातों–रात अमीर बनने के ख्वाब से दूर रहें। यू–ट्यूब, टेलीग्राम, व्हाट्सएप्प, इंस्टाग्राम, आदि सोशल मीडिया पर चल रहे खतरनाक ट्रेंड से बचने का प्रयास करें। ज्यादा लोभ में पड़कर इंट्रा डे ट्रेडिंग या एफ एन ओ (futures-options) में हाथ आजमाने की कोशिश न करें। किसी ने कहा है, "फ्यूचर्स और ऑप्शंस में ट्रेड करने के बाद, न तो फ्यूचर (यानी भविष्य) बचता है और न ही कोई ऑप्शंस (यानी विकल्प) रह जाता है।" क्रिप्टोकरेंसी जैसे नए निवेश साधन जो अभी रेगुलेटेड नहीं है, में प्रयोग करने से बचें। धन–सृजन एक धीमी प्रक्रिया है, जैसे पेंट को सूखते हुए देखना। इसमें जोश या उत्तेजना ढूंढ़ने की गलती ना करें।

और अंतिम बात, इन सब योजनाओं के बीच अपने सेवानिवृत्ति लक्ष्य को न भूलें। याद रखें, आप अपनी सभी आवश्यकताओं के लिए ऋण ले सकते हैं, रिटायरमेंट के लिए नहीं। इसलिए इस महत्वपूर्ण लक्ष्य के लिए अवश्य निवेश करें। और भविष्य की अपनी सभी गणना में इन्फलेशन यानी महँगाई का जरूर ध्यान रखें।

बचत और निवेश को बहुत जटिल बनाने की जरूरत नहीं है। अपनी आय को बचाने और बढ़ाने पर ध्यान दें, अपने खर्चों को कम करने की सोचें, बचत की आदत डालें और सही उत्पाद में निवेश करें। आप अपना हर लक्ष्य हासिल कर सकें, इसके लिए मेरी असीम शुभकामनाएँ।

उप अभियंता, बीएचईएल, हीप, हरिद्वार

चार आंखें (माता-पिता)

एक ख्वाब था चार आंखों में, उम्मीदें थीं हजार
कदम थक जाएंगे जब उनके, अंश थामेंगे उनका हाथ।
होगी रौनक उनके भी आशियाने में, सपने उनके भी होंगे साकार
जरूरत होगी जब एक की, पूरा कुनबा होगा उनके साथ।
आशियाना बन जाएगा महल सा, होगी उनकी भी मोटर कार
एक ख्वाब था चार आंखों में, उम्मीदें थी हजार ।।
टूट गया ख्वाब, उम्मीदें भी बिखरीं बार–बार
थक गए हैं कदम उनके, पर कोई ना थामे उनका हाथ।
आशियाने में अंधेरा छा गया, सारे सपने हो गए बेकार

गजेंद्र प्रकाश खंडेलवाल

जरूरत है जब सब की
एक भी नहीं खड़ा उनके साथ।
आशियाना बन गया रैन बसेरा
धक्के खा रहे वो अब मेरे यार
एक मलाल है चार बूढ़ी आँखों में
पछतावे हैं हजार
एक मलाल है चार बूढ़ी आँखों में
पछतावे हैं हजार ।।

उप प्रबंधक, बीएचईएल, भोपाल

लोकल से ग्लोबल

वस्तुएँ मेरी हैं कुछ लोकल, जो आगे चलकर बन जाएंगी ग्लोबल।

मेरी नानी माँ का अचार, जो बिकता है हर बाजार।

दादी माँ बनाए स्वेटर, जो लेता है हर मार्केटर।

कशीदाकारी करें मेरी दीदी, उनसे सब करें खूब खरीदी।

मिट्टी के बर्तन बनाएं पिता जी, पूरे शहर ने यह परंपरा ली।

हम हैं इतने संस्कारी और शिक्षित, कि कर लें पूरे देश को आकर्षित।

छोटी सी चीज जो हमने बनाई, आगे चलकर उसने दुनिया सजाई।

लोकल से शुरुआत की, ग्लोबल में उसे सबने ली।

धीरे–धीरे चीजें आगे बढ़ीं, दुनिया लोकल से ग्लोबल बनी।

काव्या सहगल

सुपुत्री – श्री कमल सहगल
वरि. प्रबंधक, बीएचईएल, हीप, हरिद्वार

जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संरक्षण और बीएचईएलः अनंत ऊर्जा के भंडार की ओर एक कदम

दीपक कुमार पांडे

1. प्रस्तावनाः बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही विश्व को यह ज्ञात हो गया था कि मानव गतिविधियों का प्रभाव पृथ्वी तथा उसके पारिस्थितिकी तंत्र पर सदैव सकारात्मक नहीं पड़ता है और धीरे–धीरे सभी राष्ट्र पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक होने लगे हैं। पारिस्थितिकी तंत्र का तात्पर्य केवल पृथ्वी की सतह (क्रेस्ट) में होने वाली प्राकृतिक घटनाओं से ही नहीं अपितु समुद्री जनजीवन, ऊर्जा रूपान्तरण तथा भूगर्भिक प्रक्रियाओं से भी है। पारिस्थितिकी तंत्र पर दुष्प्रभाव का सम्पूर्ण अध्ययन तो अभी तक नहीं हो पाया है परंतु जो भी परिणाम प्राप्त हुए हैं वे बहुत प्रतिकूल एवं निराशाजनक हैं। पर्यावरणीय विज्ञान की नई खोजों तथा अनुसंधानों से जो जानकारियाँ प्राप्त हो रही हैं उनसे पुराने मिथक टूट रहे हैं और इनका सबसे बड़ा कारण प्रकृति में आ रहा विध्वंसकारी प्रवृत्ति वाला त्वरित बदलाव है। पर्यावरण समग्र रूप से भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई है और यह किसी पारिस्थितिकी तंत्र को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करती है। मनुष्य के संदर्भ में देखें तो संपूर्ण जीवन इसी व्यवस्था के मध्य चलता है। जीवधारियों तथा पर्यावरण के मध्य अन्योन्याश्रय संबंध है।

1.1 जलवायु परिवर्तन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि *प्रकृति ने हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सब कुछ दिया है, पर हमारे लोभ–लालच की पूर्ति करना उसके वश की बात नहीं।* प्रकृति तभी तक आपका साथ दे पाती है, जब तक आप उसके साथ सामंजस्य स्थापित करके रखते हैं। जब–जब जीवन की नियमित प्रक्रियाओं में अवरोध उत्पन्न होते हैं तब–तब पर्यावरण में कोई समस्या जन्म लेती है। यह अवरोध प्राकृतिक अवयवों के मौलिक अवस्था में होने वाले परिवर्तनों से प्रकट होते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में होने वाला कोई भी असंतुलन समस्त जीवधारियों को प्रभावित करता है।

हम सभी जानते हैं कि पर्यावरण के प्रमुख भौतिक मूलभूत तत्व जल, वायु तथा मिट्टी हैं। प्रतिदिन पर्यावरणीय तंत्र में आ रहे परिवर्तनों से भीषण प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं। औद्योगीकरण और प्रतिस्पर्धात्मक विकास की अंधी दौड़ में मानव प्रकृति के साथ छद्म खेल खेल रहा है। द्रुतगति से विकास की लालसा लिए सर्वश्रेष्ठ बनने के मद में मानव प्राकृतिक संसाधनों को अंधाधुंध नष्ट करने में लगा है। पारिस्थितिकी तंत्र का असंतुलन विश्वव्यापी समस्या बन गई है। जगत के समस्त चराचर इसकी चपेट में हैं। विश्व भर के अनगिनत कारखानों, बिजलीघरों और मोटरवाहनों में जीवाश्म ईंधनों जैसे डीजल, पेट्रोल, कोयला आदि का अंधाधुंध इस्तेमाल किया जा रहा है। इसका कुप्रभाव यह है कि इन ईंधनों को जलाने पर कार्बन डाइ ऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड जैसी विषैली गैसें निकलती हैं जिनके परिणामस्वरूप धरती के तापमान में अप्रत्याशित वृद्धि होने लगी है। मौसम में अवांछनीय परिवर्तन भी इसी का परिणाम है। मानव की स्थिति पर यदि भारत के संदर्भ में बात करें तो पता चलता है कि कलकत्ता, कानपुर तथा हैदराबाद में वायु प्रदूषण से होने वाली मृत्युदर पिछले 3–4 वर्षों में दुगुनी हो चुकी है। दिल्ली की तो बात करते हुए ही घुटन महसूस होती है। एक रिपोर्ट के अनुसार देश में प्रदूषण के कारण 150 लोगों की मृत्यु प्रतिदिन हो रही है। सहस्र वर्षों में कार्बन के उत्सर्जन के आंकड़ों पर नज़र डाली जाए तो हमें निम्नलिखित भयावह चित्र दिखाई देता है।

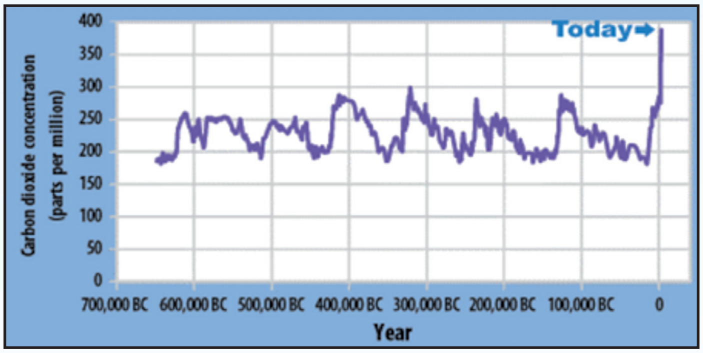

चित्रः 1.1 वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड की उपस्थिति

यह आंकड़ा बहुत चौंकाने वाला है। वर्तमान में मौजूद कार्बन डाई ऑक्साइड की भारी मात्रा वायुमंडल की ओजोन परत को क्षति पहुंचा रही है। प्रदूषणकारी गैसों के उत्सर्जन से धरती की ऊपरी सतह का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। अतः अब समय की मांग है कि हमें अपने निर्वाह (Survival) के लिए संधारणीय विकास पर जोर देना पड़ेगा।

1.2 ऊर्जा संरक्षण

आधुनिक युग विद्युत ऊर्जा का युग है। मानव ने अपनी सुख–सुविधा के लिए विद्युत ऊर्जा से संचालित होने वाले सभी साधन इज़ाद कर लिए हैं और उसका ध्यान सदैव अपने जीवन को और आराम से जीने पर केंद्रित रहता है। पर्यावरण की उसे कोई चिंता नहीं है और अपनी अभिलाषाओं को पूरा करने के लिए दिन–ब–दिन वह 'उपयोग' से 'उपभोग' की तरफ बढ़ रहा है।

परंपरागत ऊर्जा के स्रोत	उदाहरणः
परंपरागत ऊर्जा अथवा गैर नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन के भण्डार का पुनर्भरण नहीं किया जा सकता है। इन संसाधनों का एक बार दोहन होने के पश्चात् पुनर्भरण में करोड़ों वर्ष लगते हैं।	1.कोयला 2. पेट्रोलियम 3. प्राकृतिक गैस 4. सुगमता से प्राप्त अन्य परंपरागत ईंधन

गैर–परंपरागत ऊर्जा के स्रोत	उदाहरण:
अक्षय ऊर्जा अथवा गैर परंपरागत ऊर्जा में वे सभी ऊर्जा स्रोत शामिल हैं जो प्रदूषणकारक नहीं हैं तथा जिनके स्रोत का क्षय नहीं होता एवं पुनर्भरण होता रहता है।	1. सौर ऊर्जा 2. पवन ऊर्जा 3. महासागरीय ऊर्जा 4. भूतापीय ऊर्जा 5. बॉयोमास ऊर्जा 6. जैव ईंधन

1.3 ऊर्जा संरक्षण तथा नए समुद्रीय अक्षय ऊर्जा स्रोतों की खोज:

पृथ्वी के 71 प्रतिशत भू–भाग पर महासागर हिलोरें ले रहे हैं। इन महासागरों का गतिशील जल ऊर्जा का महाविशाल भंडार माना जा सकता है। दूसरे शब्दों में गतिशील समुद्री जल को ऊर्जा के परिप्रेक्ष्य में महासागर संपदा कहना न्यायोचित होगा। विश्व भर के विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों का मानना है कि भविष्य में ऊर्जा संकट तथा पेयजल की समस्या का निराकरण केवल समुद्र ही कर सकता है। अर्थात भविष्य में महासागर ही जलवायु परिवर्तन तथा ऊर्जा संकट के समाधान में संकटमोचक सिद्ध होंगे। गैर परंपरागत ऊर्जा, संधारणीय विकास का स्तम्भ है क्योंकि अक्षय ऊर्जा, ऊर्जा का ऐसा विकल्प है जो अनंत है। ऊर्जा का पारिस्थितिकी तंत्र से सीधा–सीधा सम्बन्ध है। ऊर्जा के गैर परंपरागत स्रोत असीमित मात्रा में होने के साथ–साथ पर्यावरण के लिए हानिकारक भी नहीं हैं। जबकि परंपरागत ऊर्जा के स्रोत विध्वंसकारी साबित हो रहे हैं तथा ये जलवायु परिवर्तन तथा ग्लोबल वार्मिंग का कारण बन रहे हैं।

हम निरंतर व्यावहारिक, व्यावसायिक तथा प्रौद्योगिकी की दृष्टि से समुद्र विज्ञान क्षेत्र में शोध तथा विकास कार्य कर रहे हैं। अच्छी बात यह है कि भारत तीन तरफ से समुद्रों से घिरा हुआ है। फिर भी महासागर तथा अरब सागर के आंगन में बैठकर भारत का ऊर्जा संकट से जूझना अचरज की बात लगती है। भारत में समुद्र विज्ञान के माध्यम से निम्न प्रणालियों/विधियों का विकास/प्रयोग कर आवश्यकतानुसार ऊर्जा उत्पादित की जा सकती है:

I. ब्लू ऊर्जा

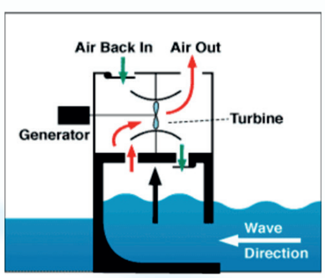

ब्लू ऊर्जा भी समुद्री जल के उथल–पुथल से उत्पन्न की जाती है। एक अधखुला प्रकोष्ठ जो समुद्री सतह से थोड़ी गहराई(1.0–1.5 मीटर लगभग) में डूबा रहता है। जब समुद्री जल में उतार–चढ़ाव होता है तो अन्दर की हवा कम्प्रेस होकर गतिज ऊर्जा में रूपांतरित हो जाती है। अगले प्रकोष्ठ में इस द्रव्यमान ऊर्जा को टर्बाइन ब्लेड से गुजारकर आसानी से विद्युत उत्पादन कर लिया जाता है।

II. महासागर तापीय ऊर्जा रूपांतरण

समुद्र अथवा महासागर की ऊपरी सतह तथा उसकी गहराई में तापान्तर पाया जाता है। यह ताप–प्रवणता निम्न क्वथनांक वाले द्रव के अवस्था परिवर्तन के लिए काफी है। इस विधि में प्रायः कार्यकारी द्रव (अमोनिया) समुद्र की थोड़ी गहराई (लगभग 1.5 किमी) में जाकर अपनी अवस्था परिवर्तन कर लेता है। इस प्रकार टर्बाइन को एक प्रवाही द्रव्य से घुमाकर बिजली पैदा कर ली जाती है।

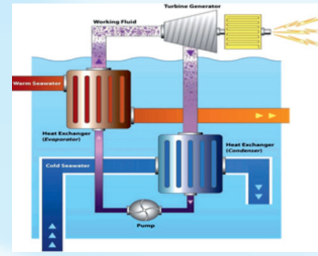

III. तरंग ऊर्जा

समुद्र में उत्पन्न तरंगें भी गतिज ऊर्जा की संवाहक हैं। ये समुद्री तरंगें अपने प्रभाव से मुक्त ब्लेड को एक निश्चित दिशा में घुमाकर ऊर्जा का उत्पादन कर सकती हैं।

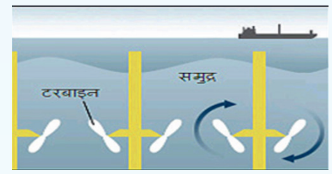

IV. एवोपोड

यह समुद्र में तैरता हुआ विद्युत संयंत्र है जो समुद्र के ऊपरी सतह में प्रवाहित जल की गतिज ऊर्जा का उपयोग करके विद्युत का उत्पादन करता रहता है। अनुसंधान एवं विकास द्वारा इसके व्यापक व्यावसायिक प्रयोग की संभावनाएं हैं।

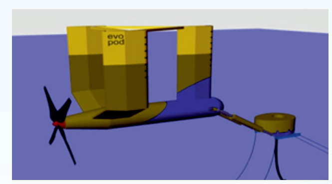

V. परासरणीय शक्ति

यह ऊर्जा समुद्री जल और नदी जल के बीच नमक की सांद्रता के कारण पैदा की जा सकती है। अधिक सान्द्र जल (w1) कम सान्द्र जल (w2) का स्थान लेकर जल का विसरण करता है। यह गतिज ऊर्जा का ही एक रूप हैं और इससे ऊर्जा आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है।

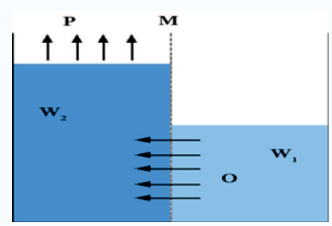

2. विश्व का भविष्य

सभी देशों को ये भलीभांति पता है कि आने वाले कुछ वर्षों में धरती के ज्यादातर ऊर्जा स्रोत ख़त्म हो जाएंगे। अतएव अक्षय ऊर्जा स्रोतों के विकास व प्रयोग के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना आवश्यक हो गया है। भारत का भी अपारम्परिक ऊर्जा कार्यक्रम विश्व के विशालतम कार्यक्रमों में से एक है जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रौद्योगिकी, बॉयोगैस, बॉयोमास, पवन–चक्कियों द्वारा ऊर्जा का उत्पादन, पवन टर्बाइनों द्वारा बिजली का उत्पादन, सौर तापीय व फोटो वोल्टायिक प्रणालियाँ, हाइड्रोजन ऊर्जा, समुद्री ऊर्जा, फ्युअल सेल एवं परिवहन के लिए वैकल्पिक ऊर्जा के सभी स्रोतों पर प्रयास चल रहे हैं। महासागरीय ऊर्जा आधुनिक जीवन शोध का मूल बन गई है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो महासागरीय ऊर्जा के बिना आधुनिक सभ्यता के अस्तित्व पर एक

बहुत बड़ा प्रश्न–चिह्न लग जाएगा।

महासागरीय ऊर्जा सहित अक्षय ऊर्जा के सभी स्रोत अबाध रूप से भारी मात्रा में उपलब्ध होने के साथ साथ सुरक्षित, स्वतः स्फूर्त व भरोसेमंद हैं। भारत के कुछ इलाकों को छोड़कर इनका वितरण भी एक समान है। भारत में अपार मात्रा में जैवीय पदार्थ, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बॉयोगैस व लघु पनबिजली उत्पादक स्रोत मौजूद हैं। निश्चित रूप से इस शताब्दी का स्वरूप महासागरीय ऊर्जा से निर्धारित होने वाला है जबकि पुरानी सदियों में वह परम्परागत ऊर्जा स्रोत द्वारा निर्धारित किया गया था। सही मायनों में कार्बन रहित ऊर्जा स्रोतों के विकास और अनन्य प्रयोग औद्योगिक एवं व्यापारिक जरुरत बन चुके हैं।

3. भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड का ऊर्जा सिद्धांत

यह सार्वभौमिक तथ्य है कि बीएचईएल आज भारत ही नहीं वरन् विश्व में ऊर्जा संबंधी अवसंरचना क्षेत्र में विशालतम इंजीनियरिंग एवं विनिर्माण उद्यम है। बीएचईएल लगभग पिछले 70 वर्षों से भारी विद्युत उपस्करों का निर्माण कर राष्ट्र को रोशन करता आ रहा है। अपने तीस से ज्यादा उत्पाद समूहों के अंतर्गत 180 से अधिक उत्पादों का विनिर्माण करके विद्युत उत्पादन एवं पारेषण, उद्योग, परिवहन तथा नवीकरणीय ऊर्जा जैसे प्रमुख क्षेत्रों में अभूतपूर्व योगदान कर रहा है।

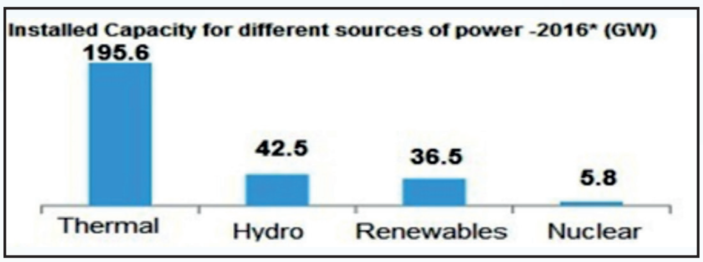

चित्रः 1.3 भारत में विद्युत उत्पादन के लिए उपयोग की जाने वाली ऊर्जा का चार्ट

3.1 बीएचईएल का अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय

बीएचईएल ने अमेरिका से लेकर न्यूजीलैंड तक विश्व के 89 से अधिक देशों में अपनी छाप छोड़ी है। बीएचईएल के निर्यात विस्तार में एकल उत्पादों से लेकर सम्पूर्ण विद्युत स्टेशन, ईपीसी परियोजनाएं, एचवी/ईएचवी सबस्टेशन, सुपरिचित प्रौद्योगिकियों के लिए प्रचालन एवं अनुरक्षण सेवाएं, शेष जीवन काल निर्धारण अध्ययन (आरएलए) और रीट्रोफिटिंग जैसी विक्रयोपरांत सेवाएं, मरम्मत एवं पुनरुद्धार तथा विनिर्माताओं और ईपीसी संविदाकारों को आपूर्ति प्रमुखता से शामिल हैं।

3.2 अनुसंधान एवं विकास

प्रतिस्पर्धा में बने रहने और ग्राहकों की अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु अन्तरराष्ट्रीय बाज़ार में कंपनियों को नए उत्पाद लाने पड़ते हैं। अतः बीएचईएल की फ्यूल सेल्स और सुपर कंडक्टिंग जेनरेटरों तथा अक्षय ऊर्जा के प्रति प्रतिबद्धता प्रतिस्पर्धात्मक व्यवस्था में न सिर्फ बनाए रहने बल्कि विस्तार करने में भी मददगार होगी। बीएचईएल का अनुसंधान एवं विकास में निवेश, भारत में कॉर्पोरेट सेक्टर के बहुत अच्छे निवेशों में से एक है। आशा है कि इसका दूरगामी परिणाम बहुत ही सुखद होगा।

बीएचईएल की सन 2024 की पहली तिमाही के अंत तक कुल आउटस्टैंडिंग ऑर्डर बुकिंग 1.6 लाख करोड़ हो चुकी है। आदरणीय अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक महोदय पहले ही अपनी प्राथमिकता पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट कर चुके हैं कि कंपनी का फोकस सरकार द्वारा इंफ्रा सेक्टर पर खर्च बढ़ाने से मिले अवसरों का पूरा फायदा उठाने पर है। इसके साथ ही कंपनी का ध्यान सोलर और इको फ्रैंडली तकनीकों पर भी है।

गो ग्रीनः ऊर्जा स्रोत समाप्त होने के पहले ही हमें "गो ग्रीन" का सिद्धांत अपनाना पड़ेगा। पर्यावरणीय प्रदूषण, सामाजिक एवं आर्थिक दबाव आज हमें अक्षय ऊर्जा स्रोतों के महत्तम सदुपयोग का एकल मार्ग दिखला रही हैं। अतएव नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विकास व प्रयोग करके हमें महासागरों को अपने पालक के रूप में स्वीकार करना पड़ेगा।

5. भारत में अक्षय ऊर्जा की संभावनाएं

नवीन व अक्षय ऊर्जा मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि भारत में पिछले तीन वित्तीय वर्षों में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में लगभग 14 अरब अमरीकी डॉलर का निवेश आया है। इसमें से लगभग साढ़े 4 अरब अमरीकी डालर का निवेश अकेले सौर बिजली के क्षेत्र में आया है। अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में अपार सम्भावनाएँ हैं जिसमें महासागरीय ऊर्जा के क्षेत्र में संभावना सबसे अधिक है, साथ ही यह संधारणीय भी है।

तालिका–1

भारत में अक्षय ऊर्जा	प्रौद्योगिकी की अनुमानित सम्भावनाएँ
बॉयोगैस संयंत्र (संख्या)	1.2 करोड़
बॉयोमास	17,000 मेगावाट
सौर ऊर्जा	20 मेगावाट/वर्ग किलोमीटर
वायु ऊर्जा	20,000 मेगावाट
छोटे पन–बिजली केन्द्र	10,000 मेगावाट
सागर ऊर्जा	50,000 मेगावाट

6. उपसंहार

भारत का एक विस्तृत भू–भाग ऐसा है जहाँ पर नदियों की अपार शृंखलाएँ मौजूद हैं। 7516 किलोमीटर का अभूतपूर्व समुद्र तट अक्षय ऊर्जा की सम्भावनाओं को प्रकट करता है। यह स्थिति विशेष रूप से ऊर्जा उत्पादन हेतु अनुकूल है क्योंकि अगर संधारणीय विकास की दृष्टि से देखें तो पश्चिम में स्थित गुजरात से लेकर देश के कई राज्यों जैसे– महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, ओडीसा, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में भारी मात्रा में विद्युत उत्पादन के संयंत्र लगाए जा सकते हैं। ये विद्युत संयंत्र सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और खासकर समुद्रीय ऊर्जा पर आधारित होंगे।

तथापि यह कहा जा सकता है कि पारंपरिक विद्युत उत्पादन की तुलना में इनकी लागत थोड़ी अधिक है। किन्तु वर्तमान में लागत जिस स्तर पर है वह भारत की अर्थव्यवस्था को देखते हुए निश्चय ही आशावादी है। अनुसंधान और विकास के समेकित प्रयास भारत के बड़े भू–भाग में नवीकरणीय ऊर्जा के अनेक अवसर उत्पन्न कर सकते हैं। साथ ही, यदि ऊर्जा आपूर्ति में पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव की लागत जोड़ी जाए तो अक्षय ऊर्जा ही लाभप्रद साबित होगी। इन अवसरों का लाभ उठाते हुए देश अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के साथ–साथ ऊर्जा के क्षेत्र में उपलब्ध अनंत संभावनाओं से असीमित लाभ उठा सकता हैं क्योंकि इसी से राष्ट्र लंबे समय के लिए समूचे देश में समग्र हरित ऊर्जा आपूर्ति का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

आओ करें ऊर्जा संरक्षण, लेकर महासागरों का साथ।
सशक्त हों बीएचईएल की भुजाएं , बनें हम उसका हाथ।।

अभियंता, बीएचईएल, हीप, हरिद्वार

समाचार

जगद्गुरु रामभद्राचार्य एवं गुलजार को ज्ञानपीठ पुरस्कार

जगद्गुरु रामभद्राचार्य

प्रसिद्ध गीतकार व उर्दू कवि गुलजार और संस्कृत विद्वान जगद्गुरु रामभद्राचार्य को 58वें ज्ञानपीठ पुरस्कार देने की घोषणा की गई है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। भारत का कोई भी नागरिक जो आठवीं अनुसूची की 22 भाषाओं में से किसी भाषा में लिखता हो, इस पुरस्कार की पात्रता रखता है। वर्तमान में पुरस्कार स्वरूप इक्कीस लाख (2100000) रुपये की धनराशि, प्रशस्तिपत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा दी जाती है। प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार 1965 में मलयालम लेखक जी शंकर कुरुप को प्रदान किया गया था। उस समय पुरस्कार की धनराशि 1 लाख रुपए थी। 1982 तक यह पुरस्कार लेखक की एकल कृति के लिये दिया जाता था। लेकिन इसके बाद से यह लेखक के भारतीय साहित्य में संपूर्ण योगदान के लिये दिया जाने लगा। अब तक हिन्दी तथा कन्नड़ भाषा के लेखक सबसे अधिक सात बार यह पुरस्कार पा चुके हैं। ज्ञानपीठ पुरस्कार को 'नोबेल प्राइज ऑफ इंडियन लिटरेचर' के रूप में भी जाना जाता है।

गुलज़ार का असली नाम सम्पूर्ण सिंह कालरा है। उनका जन्म 18 अगस्त, 1934 को हुआ था। गुलजार आज के युग के बेहतरीन उर्दू कवियों में से एक माने जाते हैं। वे कवि, पटकथा लेखक, फ़िल्म निर्देशक नाटककार भी हैं। उनकी रचनाएँ मुख्यतः हिन्दी, उर्दू तथा पंजाबी में हैं, परन्तु ब्रज भाषा, खड़ी बोली, मारवाड़ी और हरियाणवी में भी इन्होंने रचनाएँ की हैं। उनका हिंदी सिनेमा में अद्वितीय योगदान है। इससे पहले उन्हें अपने काम के लिए 2002 में उर्दू के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2013 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार, 2004 में पद्म भूषण और पांच राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चुके हैं। वर्ष 2009 में डैनी बॉयल निर्देशित फ़िल्म "स्लम्डॉग मिलेनियर" में उनके द्वारा लिखे गीत "जय हो" के लिये उन्हें सर्वश्रेष्ठ गीत का ऑस्कर पुरस्कार मिल चुका है। इसी

गुलजार

गीत के लिये उन्हें ग्रैमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। गुलजार द्वारा लिखी गई कुछ पुस्तकें हैं– चौरस रात (लघु कथाएँ, 1962), जानम (कविता संग्रह, 1963), एक बूँद चाँद (कविताएँ, 1972), रावी पार (कथा संग्रह, 1997), रात, चाँद और मैं (2002), रात पश्मीने की खराशें (2003)।

रामभद्राचार्य प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरू, विद्वान, शिक्षाविद्, बहुभाषाविद्, रचनाकार, प्रवचनकार, दार्शनिक और 100 से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं। उनका जन्म 1950 में हुआ था और उनका पूर्वाश्रम नाम गिरिधर मिश्र है। वे चित्रकूट में तुलसी पीठ के संस्थापक और प्रमुख हैं। वे रामानन्द सम्प्रदाय के वर्तमान चार जगद्गुरु रामानन्दाचार्यों में से एक हैं और इस पद पर 1988 से प्रतिष्ठित हैं। वे चित्रकूट में स्थित तुलसी पीठ नामक धार्मिक और सामाजिक सेवा संस्थान के संस्थापक और अध्यक्ष हैं। वे चित्रकूट स्थित जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के संस्थापक और आजीवन कुलाधिपति हैं। यह विश्वविद्यालय केवल चतुर्विध विकलांग विद्यार्थियों को स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और डिग्री प्रदान करता है। जगद्गुरु रामभद्राचार्य दो मास की आयु में नेत्रज्योति से विहीन हो गए थे और तभी से प्रज्ञाचक्षु हैं।

अध्ययन या रचना के लिए उन्होंने कभी भी ब्रेल लिपि का प्रयोग नहीं किया है। वे बहुभाषाविद् हैं और 22 भाषाएँ बोलते हैं। वे संस्कृत, हिन्दी, अवधी, मैथिली सहित कई भाषाओं में आशुकवि और रचनाकार हैं। उन्होंने 80 से अधिक पुस्तकों और ग्रंथों की रचना की है, जिनमें चार महाकाव्य (दो संस्कृत और दो हिन्दी में), रामचरितमानस पर हिन्दी टीका, अष्टाध्यायी पर काव्यात्मक संस्कृत टीका और प्रस्थानत्रयी (ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता और प्रधान उपनिषदों) पर संस्कृत भाष्य सम्मिलित हैं। भारत के भिन्न–भिन्न नगरों में और विदेशों में भी नियमित रूप से उनकी कथा आयोजित होती रहती है और कथा के कार्यक्रम संस्कार टीवी, सनातन टीवी इत्यादि चैनलों पर प्रसारित भी होते हैं।

बच्चों के विकास में योग का महत्व

योग की परिभाषा

भारतीय दर्शन में योग विद्या का महत्वपूर्ण स्थान है। यह विद्या सभी विद्याओं में सर्वोपरि है और विशेष स्थान रखती है। योग विद्या से संबंधित ज्ञान सभी भारतीय ग्रंथों में अनेक स्थानों पर देखने को मिलता है। भारतीय प्राचीन ग्रंथों में योगियों द्वारा योग विद्या को अनेक प्रकार से परिभाषित किया गया है जिनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है:

कुछ प्रमुख परिभाषाएं इस प्रकार हैं:

चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।

महर्षि व्यास के अनुसार– समाधि की अवस्था योग है।

पंडित श्री राम शर्मा आचार्य जी के अनुसार– जीवन जीने की कला ही योग है।

महर्षि अरविंद के अनुसार– जीवन को बिना खोये भगवान की प्राप्ति योग है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार– प्राचीन आर्य ग्रंथों का अध्ययन ही योग है।

गुरू ग्रंथ साहिब के अनुसार– निःस्वार्थ भावना से कर्म करना ही सच्चे धर्म का पालन है, और यही वास्तविक योग है।

कैवल्योपनिषद के अनुसार – श्रद्धा भक्ति और ध्यान के द्वारा आत्मा को जानना ही योग है।

योग का उद्देश्य

योग का उद्देश्य जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक व सामाजिक विकास से है। योग जीवन जीने की कला है। योग ऐसा साधना विज्ञान है जिसके द्वारा शारीरिक और मानसिक निरोगता, अस्वस्थता, कुविचारों व कुसंस्कारों से मुक्ति मिलती है और जीवन उच्च व दिव्य बनता जाता है।

बच्चों के विकास में योग क्यों जरूरी है ?

योग बच्चों के शरीर और मस्तिष्क को अधिक सक्रिय बनाता है जिससे उनके शरीर और मस्तिष्क के सम्पूर्ण विकास में बहुत सहायता मिलती है। जो बच्चे रोजाना योग का अभ्यास करते हैं उनका प्रतिरक्षा तंत्र अन्य बच्चों से ज्यादा मजबूत होता है और वे कम बीमार पड़ते हैं। रोजाना योग करने से बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और आत्मविश्वास से भरे बच्चे ही अपने जीवन में सफलता को जल्दी प्राप्त करते हैं।

रोजाना योग करने से बच्चों की एकाग्रता बढ़ती है और एकाग्र मन से कम समय में ज्यादा पढ़ाई की जा सकती है। जो बच्चे एकाग्र मन से पढ़ते हैं वे कठिन से कठिन विषय भी आसानी से समझ जाते हैं और लम्बे समय तक याद रखते हैं।

आज का समय प्रतिस्पर्धा का समय है और बच्चे प्रतिस्पर्धा के कारण बहुत तनाव में रहते हैं। अक्सर सुनने में आता है कि परीक्षाओं में सफल न होने पर बच्चे आत्महत्या कर लेते हैं या अवसाद में चले जाते हैं। बच्चों को रोजाना योग कराकर इस तरह की बड़ी समस्याओं को बहुत कम किया जा सकता है।

सतीश कुमार सिंह

बच्चों के करने योग्य योगासन

पाँच साल की उम्र होने के बाद बच्चे योग कर सकते हैं। इनके लिये कुछ मुख्य योगासनों का विवरण नीचे दिया गया है जिसमें इन योगासनों की विधि, सावधानियाँ व लाभ के बारे में बताया गया है।

1) शीर्षासन

विधि– सर्वप्रथम वज्रासन में बैठें। दोनों घुटनों को खोलकर अंगुलियों को फंसाकर घुटनों के सामने इस प्रकार रखें कि कोहनियां जमीन पर स्पर्श करें। सिर का अग्र भाग जमीन पर रखें। अंगुलियों तथा हथेलियों से सिर को मजबूती के साथ पकड़कर रखें। श्वास बाहर निकालकर नितम्बों को ऊपर उठाएं। श्वास भरकर घुटनों को छाती के साथ लगाकर संतुलन बनाकर रखें और घुटनों को ऊपर उठायें। संतुलन बनने पर पैरों को सीधा करें तथा पूरे शरीर को सीधा रखते हुए अपनी क्षमतानुसार रोकें। श्वास छोड़ते हुए धीरे से पूर्व स्थितियों में बारी–बारी से वापिस आयें। पैर जमीन में लगने पर कुछ देर मस्तक को टिकाकर विश्राम करें। उसके बाद कुछ समय वज्रासन में बैठें और अंत में शवासन में विश्राम करें।

सावधानियाँ– उच्च रक्तचाप, मिर्गी, आँख व कान आदि रोगों से पीड़ित होने पर इस आसन को न करें।

लाभ– शीर्षासन करने से सिर में रक्तसंचार बढ़ता है, जिससे मस्तिष्क अच्छे से कार्य करने लगता है। यह स्मरण शक्ति को सुधारने के साथ ही एकाग्रता को बढ़ाता है। शरीर की मांसपेशियों को मजबूत करने के साथ ही मानसिक सुकून भी पहुंचाता है।

2) ताड़ासन

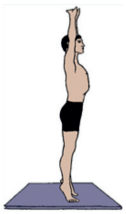

विधि– दोनों पैर मिलाकर सीधे खड़े हो जाएं। श्वास भरते हुए दोनों हाथों को ऊपर उठाएं। एड़ियां ऊपर उठाते हुए पंजों के बल होकर शरीर को आकाश की ओर खींचें। हाथों की हथेलियाँ अंदर की ओर रखकर शरीर में अधिक से अधिक खिंचाव लाने का प्रयास करें। दृष्टि सामने की ओर रखें। यथाशक्ति ठहरने के पश्चात वापिस आकर शरीर को ढीला छोड़ें।

सावधानियाँ– खाना खाने के तुरंत बाद इस योगासन को नहीं करना चाहिये।

लाभ– किशोरावस्था में इसे करने से शरीर की लम्बाई बढ़ती है तथा शरीर की मांसपेशियां पुष्ट होती हैं।

3) त्रिकोणासन

विधि– सीधे खड़े हो जाएं। पैरों को जितना सुविधापूर्वक खोल सकते हैं, उतना खोलें। दोनों हाथ जमीन के समानांतर फैलाएं। श्वास निकालते हुए सामने की ओर झुकते हुए दाहिने हाथ से बायें पैर के अंगूठे को स्पर्श करें। सम्भव हो तो प्रयास करें कि हथेली पैर के बाहर की ओर जमीन पर टिकी रहे। बायाँ हाथ ऊपर उठाकर आकाश की ओर खींचकर रखें तथा ऊपर की ओर गर्दन मोड़कर हाथ की हथेली को देखें। कुछ देर रोकने के पश्चात सीधे खड़े हों। इसी प्रकार सामने की ओर झुकते हुये बाएं हाथ से दाहिने पैर के अंगूठे को स्पर्श करें। दाएं हाथ को ऊपर उठाकर आकाश की ओर खींचकर रखें। ऊपर की ओर गर्दन को घुमाकर हथेली को देखें। कुछ देर रुकने के बाद वापिस आ जाए।

सावधानियाँ– पेट में फोड़ा, रीढ़ की हड्डी का दर्द आदि रोगों से पीड़ित होने पर यह आसन न करें।

लाभ– किशोरावस्था में इसे करने से शरीर की लम्बाई बढ़ती है, पैरों की मांसपेशियां पुष्ट होती हैं तथा पेट व कमर की अतिरिक्त चर्बी कम होती है।

4) कोणासन

विधि– सीधे खड़े हो जाएं। पैरों को जितना सुविधापूर्वक खोल सकते हैं, उतना खोलें। दायाँ हाथ आकाश की ओर उठाकर हथेली का रुख बायीं तरफ करें। बायाँ हाथ जमीन के समानांतर तथा हथेली नीचे की ओर रखें। श्वास निकालते हुये बायीं ओर कमर को झुकाते हुये बाएँ हाथ से बाएँ पैर के टखने को पकड़ें। दायाँ हाथ कान के साथ लगाकर जमीन के समानांतर रखें। हथेली का रुख जमीन की ओर रहेगा। कुछ देर रोकने के पश्चात श्वास लेते हुये वापस आएँ और श्वास निकालकर दायीं ओर झुकते हुये दायें हाथ से दायें पैर के टखने को पकड़ें। बायाँ हाथ कान के साथ सटाकर जमीन के समानांतर फैला हुआ रहे। कुछ देर रोकने के पश्चात श्वास लेते हुये वापस आयें।

सावधानियाँ– पेट में फोड़ा, रीढ़ की हड्डी के दर्द आदि रोगों से पीड़ित होने पर इस आसन को न करें।

लाभ– किशोरावस्था में इसे करने से शरीर की लम्बाई बढ़ती है। पेट व कमर की अतिरिक्त चर्बी कम होती है।

5) वृक्षासन

विधि– दोनों पैर व हाथ मिलाकर सीधे खड़े हो जाएं। दायाँ पैर घुटने से मोड़ते हुए दाएँ पैर की एड़ी को बायीं जांघ के मूल में रखें। पैर को मोड़ने के लिए हाथों का सहारा ले सकते हैं। दोनों हाथ कंधे के बराबर ऊंचाई पर फैलाकर हथेलियों का रुख आसमान की ओर करें। हाथों को सिर के ऊपर सीधे रखते हुए नमस्कार की मुद्रा में मिला लें। शरीर को स्थिर रखने के लिए श्वास को नियंत्रित करें व दृष्टि को एक बिंदु पर स्थिर करें। क्षमतानुसार आसन रोकने का समय बढ़ाते हुए चले जाएं। वापस आने के लिए उन्हीं स्टेप्स को दोहराएं। अब इसी अभ्यास को दूसरे पांव से दोहराएं।

सावधानियाँ– पैर, घुटनों या पीठ में चोट लगने पर यह आसन न करें।

लाभ– मानसिक एकाग्रता के लिए बहुत उपयोगी है। शरीर में लचक बढ़ाने के साथ पांवों की मांस–पेशियों को मजबूत करता है।

6) शशांकासन

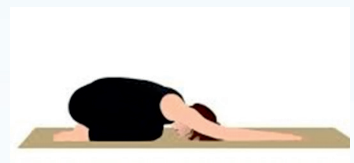

विधि– सर्वप्रथम वज्रासन में बैठें। श्वास भरते हुए हाथों को आकाश की ओर ले जायें। शरीर को उपर की ओर खींचें। श्वास निकालते हुये शरीर को सामने की ओर झुकाएं तथा हथेलियों को सामने जमीन पर फैलाकर मस्तक को जमीन से लगाएं।

सावधानियाँ– कमर दर्द होने पर यह आसन न करें।

लाभ– इस आसन के अभ्यास से सिरदर्द, चिड़चिड़ापन और क्रोध दूर होता है। पेट सम्बंधी रोग के लिए बहुत उपयोगी है।

योग के दौरान सावधानियाँ

- योग खाली पेट या खाना खाने के तीन–चार घंटे बाद करना चाहिये।
- खड़े होने की स्थिति में यह ध्यान रखें कि बच्चा एकदम सीधा खड़ा हो।
- बैठने की स्थिति में यह ध्यान रखें कि बच्चे का सिर, पीठ व कमर एक सीध में हो।
- योग धीरे–धीरे करना चाहिये। शुरू में पाँच मिनट और बाद में यह समय बढ़ाकर बीस से पच्चीस मिनट कर सकते हैं।
- शुरूआती समय में बच्चे को ज्यादा अभ्यास एक साथ न कराएं।

अपर अभियंता, ग्रेड–I
बीएचईल, हीप, हरिद्वार

हँसो हरदम – खुशियाँ या गम

कविन्दर कुमार

धरती पर जीवन कितना सुखद होता, अगर इंसान चिंता, दबाव और मानसिक तनाव से मुक्त होता। आज के इस प्रतियोगी युग में और एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में, इंसान तनावग्रस्त होकर अपने जीवन को बोझिल बनाये हुए है। आज इंसान हँसना ही भूल गया है, जबकि यह सर्वविदित है कि हँसने से अच्छी कोई औषधि नहीं है। सुख–दुख तो जीवन का अभिन्न हिस्सा है लेकिन कुछ लोग दुख को इतना बड़ा बना लेते हैं कि जिंदगी की खुशियां उन्हें दिखाई ही नहीं देतीं। याद रखिए कि "अगर आप हँसते हैं तो जग हँसता है और रोते हैं तो अकेले ही रोना पड़ता है"। इसलिये हर हाल में खुश रहने की आदत डालें और जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाएं।

खुश रहने के फायदे

1. हँसी हमें हमारी ही भूलों को सकारात्मक तरीके से लेना सिखाती है। हमेशा खुश रहने वालों का मुश्किल वक्त भी आसानी से कट जाता है।

2. खुश रहने से साधारण चेहरा भी आकर्षक लगने लगता है। हँसते चेहरे सभी को अपनी और आकर्षित करते हैं। जबकि उदास चेहरे से लोग दूर भाग जाते हैं। हँसी नए दोस्त बनाने और दोस्ती को मजबूती देने का काम भी करती है।

3. यथार्थ के प्रति जागरूकता का सन्देश देकर, हँसी हमें समस्याओं का सामना करने और कठिनाइयों पर विजय पाने की शक्ति देती है।

4. हँसी तनाव को हटाती है, उच्च रक्त चाप को कम करती है, पाचन क्रिया को सुधारती है और अच्छी नींद लाती है। हँसने से शरीर में ऐसे न्यूरोकेमिकल का स्राव शुरू हो जाता है, जो शरीर को प्राकृतिक रूप से अच्छा महसूस कराने और यहां तक कि अस्थायी रूप से शरीर के दर्द से राहत देने में भी मददगार साबित होते हैं ।

निष्कर्ष

हँसने में न तो पैसा लगता है और न ही टैक्स लगता है। इसलिए चाहे जैसे भी हो चेहरे पर हँसी होनी चाहिए। 'मुस्कुराहट अमूल्य सम्पत्ति है। इसे पाने वाला और देने वाला दोनों ही लाभान्वित होते हैं। पाने वाला तो मालामाल हो ही जाता है, देने वाला भी मालामाल हो जाता है। परेशानियों में भी अगर आप संयम नहीं खोते और हँसते रहते हैं तो परेशानियाँ खुद–ब–खुद कम होती जाती हैं। इसलिए खुद भी हँसिये और दूसरों को भी हँसाइये।

वरिष्ठ अभियंता, बीएचईल, हीप, हरिद्वार

जीवन-एक संघर्ष

मनीष कुमार देव

जीवन एक संघर्ष है राही, अंगारों पर चलना होगा,
पथरीली चिकनी राहों पर गिरना और संभलना होगा।

दुःख की हो दोपहरी या संतापों की बरसात कभी,
हाथों की यह चंद लकीरें, ना दें पाएं साथ कभी,

कभी गमों की गर्म हवाएँ, झुलसाएं मनोरथ को,
विपदा की घनघोर घटाएँ, अवरुद्ध करें जीवन–पथ को,

उलझनों के जंजीर को तोड़, मनोबल को बढ़ना ही होगा,
उन्नति के शिखर को पाने, तीव्र ढलान चढ़ना ही होगा।

जीवन एक संघर्ष है राही, कर दृढ़ संकल्प चलना ही होगा।

जीवन एक कंटक पगडंडी, पग–पग काँटे बीनना होगा,
टेढ़ी–मेढ़ी राहों पर, कर सूझ–बूझ ही चलना होगा।

जीवन एक अध्यापक भी, शिक्षा दे जाता पल–पल यह,
बाधाओं की लड़ी लगाता, उत्कृष्ट बनाता हर पल यह।

सोना जितना तपता है, उतना ही और निखरता है,
हीरा जितना कटता है, उतना ही श्रेष्ठ चमकता है।

अमृत की हो चाह अगर तो, सागर–मंथन करना होगा,
विघ्नों और कष्टों से अब, दो–दो हाथ तो करना होगा।

जीवन एक संघर्ष है राही, अंगारों पर चलना होगा।

जीवन है, एक कथा–चित्र भी, हर–इक को हिस्सा लेना होगा,
ईश्वर ने जो कथा लिखी है, उसका पात्र तो बनना होगा।

जीवन एक काँटों की शय्या, सुख–दुख दोनों काँटे हैं,
परम–सुख की हो चाह अगर तो, इन काँटों को तजना होगा।

जीवन एक संघर्ष है राही, हँसते–हँसते चलना होगा।
जीवन एक सागर की भाँति, लहरों से नहीं डरना होगा।

साहस का पतवार पकड़, तर कर पार उतरना होगा।
जीवन एक संघर्ष है राही, अविचल आगे बढ़ना होगा।

वरिष्ठ प्रबंधक, बीएचईएल, उद्योग क्षेत्र, नई दिल्ली

अंग्रेज़ी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विघ्न है। सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है।

– पंडित मदनमोहन मालवीय

आलेख

पक्षियों का समाज एवं रहन-सहन

सत्य नारायण पाल

यूं तो दुनिया में लाखों तरह के पक्षी होते हैं कुछ पक्षी पेड़ पर रहते हैं तो कुछ जमीन पर ही ज्यादातर विचरण करते हैं। कुछ पक्षी जल में रहते हैं और थोड़े समय के लिए ही जल से बाहर आते हैं। उनका भोजन भी जल में रहने वाले जीव जन्तु ही होते हैं। इन पक्षियों का भोजन भी भिन्न–भिन्न होता है। कुछ पक्षी शाकाहारी होते हैं, कुछ मांसाहारी होते हैं तो कुछ मिले जुले होते हैं। जहां बगुला, बाज, गिद्ध, पूर्ण मांसाहारी होते हैं वहीं तोता, कबूतर आदि शुद्ध शाकाहारी होते हैं। ज्यादातर पक्षी शाकाहारी और मांसाहारी दोनों होते हैं – कौआ, गौरैया, मोर, तीतर आदि शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों होते हैं। इन सभी पक्षियों को देखें तो इनका रहन–सहन अलग–अलग होता है। ये सभी पक्षी सामाजिक होते हैं अर्थात ये अपने–अपने समाज में ही रहते हैं। समाज के साथ इनका अपना परिवार भी होता है। ज्यादातर अपने परिवार में ही रहना पसंद करते हैं। इंसानों की तरह ही इनका रिश्ता होता है। इनके कुनबे में इनकी मर्जी के बिना दूसरी बिरादरी का कोई पक्षी नहीं रह सकता है। यदि वह इनके परिवार में सम्मिलित होना चाहता है तो उसे इस कुल की अनुमति लेनी होगी। यदि वह परिवार उन्हें अनुमति नहीं देता तो उसे इस परिवार से बाहर जाना होगा। कभी–कभी इनमें परस्पर झगड़े भी होते हैं और लड़ते–लड़ते एक दूसरे को घायल भी कर देते हैं। इस प्रकार ये अपना ज्यादातर स्थान चिह्नित कर रखते हैं और उस क्षेत्र में दूसरे को जाने नहीं देते हैं। इन पक्षियों में इंसानों की तरह कभी–कभी शक्ति प्रदर्शन की भी होड़ होती है। इनका सूचना प्रबंधन बहुत तेज होता है। किसी खतरे को देखकर तुरंत उस खतरे को अपने समाज में सूचित करते हैं जिससे उनकी सुरक्षा हो जाती है। उस खतरे से सब मिलकर उसका मुक़ाबला करते हैं तथा इस असुरक्षा से बचाने के उपाय करते हैं। यदि इनके परिवार में कुछ घटना हो जाती है, तो ये एक दिन तक भोजन भी नहीं करते हैं, अर्थात शोक मनाते हैं। उस मृत पक्षी को घेरकर साथ बैठे रहते हैं और उस पर ये अपना दुख व्यक्त करते हैं। इनके बच्चों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी नर पक्षी की होती है तथा उनके भोजन की व्यवस्था की ज़िम्मेदारी मादा पक्षी की होती है। कभी–कभी इंसानों की तरह ये भी खुशी का इजहार करते हैं और सुरीली आवाज निकालते हुए ये नृत्य भी करते हैं। ऐसे अवसर पर इनका पूरा कुनबा इकट्ठा हो जाता हैं तथा जश्न का माहौल हो जाता है। पक्षी किसी बाहरी खतरे से बचने के लिए सदैव चौकन्ने रहते हैं। हमला होते ही ये अपनी विशेष आवाजें निकालते हैं और सभी को सावधान कर देते हैं। जो पक्षी जमीन पर विचरण करता होता है वह तुरंत पेड़ पर उड़कर बैठ जाता है तो कभी आसमान में उड़ने लगता है। शिकारी के चले जाने के बाद ये पुनः जमीन पर उतरते हैं और भोजन की तलाश करते हैं। आसमान में उड़ने पर भी छोटे पक्षी जैसे कि तोता, गौरैया, कोयल, टिटहरी आदि को खतरा बाज जैसे भीषण शिकारी पक्षी से होता है। बाज आसमान में उड़ते छोटे पक्षी को अपना शिकार बना लेते हैं।

अलग–अलग जाति के पक्षी अपना घोंसला अलग–अलग तरीके से बनाते हैं। कुछ पक्षी अपना घोंसला जमीन पर भी बनाते हैं और कुछ पक्षी पेड़ पर और कुछ पेड़ की डाल अथवा दो डालों के बीच उनमें घोंसला बनाकर रहते हैं। टिटहरी, बतख, तीतर, मोर आदि जैसे पक्षी जमीन पर घास–फूस की आड़ में अपना घोंसला बनाते हैं जबकि कौआ, गिद्ध, बाज, आदि पेड़ पर अपना घोंसला बनाते हैं और तोता पेड़ की खोंदले में अपना घोंसला बनाता है।

मैं आपको एक विशेष पक्षी बया के विषय में जानकारी देना चाहूंगा कि यह एक ऐसा पक्षी है जो अपने घोंसले को इस तरह बनाता है कि यह हर परिस्थिति में सुरक्षित रह सके। इनके घोंसले को देखें तो निश्चित रूप से आप दंग रह जाएंगे। इन पक्षियों को बुनकर पक्षी भी कहते हैं। ये पक्षी अपना घोंसला इस प्रकार बनाते हैं कि वे हर तरह से सुरक्षित रहें तथा अपने छोटे बच्चों को सुरक्षित रख सकें। ये बहुत ही बारीकी से इसकी बुनाई करती हैं। इंसान के वश का नहीं है कि वे इस तरह की बुनाई कर सकें। कभी–कभी ये अपना घर दो मंजिला भी बनाती हैं, जिसमें एक में बच्चे सुरक्षित रहें तथा दूसरे मंजिल पर उनका जोड़ा रह सके। ये बहुत ही समझदार और टेक्निकल पक्षी होते हैं।

बया चिड़िया से संबंधित मुझे एक रोचक घटना याद आ रही है। एक बार 1977 की बात है, मैं लगभग 12 वर्ष का था और 7वीं कक्षा में पढ़ता था। गर्मी की छुट्टी थी जून का महीना था। मैं अपने गाँव वालों के साथ जंगल में पशु चराने गया था। काफी बड़ा जंगल था। वहाँ पर तरह–तरह की झाड़ियाँ और कंटीले पेड़ थे। पास से ही एक छोटी नदी बहती थी जिसमें काफी साफ पानी बहता था। हम लोग गर्मियों में इसमें अक्सर जब भी पशु चराने जाते थे उसमें नहाते भी थे। उस दिन धूप काफी तेज थी किन्तु पेड़ों की वजह से काफी राहत थी। हम लोग एक बबूल के बड़े पेड़ जो काफी छायादार था उसके नीचे बैठे थे। तभी हमारी नजर इस पेड़ पर पड़ी और जब देखा तो उस पर कई सारे बया पक्षी के घोंसले लटक रहे थे और चिड़िया उस पर बैठी हुई थी तथा चीं–चीं की आवाज से पूरा गुंजायमान हो रहा था।

मुझे यह दृश्य अच्छा लगा। हम डाल पर चढ़कर उसके पास गए तो चिड़ियाँ उड़ गयीं किन्तु वे उसकी सुरक्षा के लिए काफी जोर–जोर से चह–चहा रही थीं। चिड़िया का घोंसला मुझे बहुत अच्छा लगा। बचपने में मैंने एक गलती कर दी। मैंने उस घोंसले को डाल से तोड़कर अलग कर दिया और नीचे उतरकर उसे सभी को दिखाने लगा। मैं बहुत ही उत्साहित था कि मैं इसे घर ले जाऊंगा। उस घोंसले को जब मैंने देखा तो निचले भाग में उसमें दो छोटे–छोटे बच्चे थे। मैंने उसे संभाल कर रखा और अपने घर लाया।

जब मैं अपने घर लाया तो मैंने उसे अपनी माँ को दिखाया। मेरी माँ ने जब देखा तो वे बहुत नाराज हुईं और कहा कि बेटा तुमने बहुत गलत काम किया। ये जिनके बच्चे हैं वह चिड़िया बहुत परेशान होगी और उसे बहुत ही दुख होगा। मैंने कहा कि मैं इसे घर पर रखूँगा। मेरी माँ ने कहा कि ये अभी बहुत छोटे हैं, ये कुछ खाएंगे नहीं और ये मर जाएंगे। इसे जाकर जहां से लाये हो उसी डाल पर तथा उसी पेड़ पर ठीक से बांध दो नहीं तो ये मर जाएंगे, तो बहुत पाप लगेगा। मेरी माँ ने मुझे बहुत डांटा। फिर मैं अपने एक साथी के साथ जंगल में उसी स्थान पर गया और मैंने घोंसले को सुरक्षित तरीके से उसी पेड़ की उसी डाल पर अच्छी तरह से बांध दिया। मेरे बांधते ही परेशान चिड़िया वहाँ पर आ गई और अपने बच्चों को पाकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई। मैं घर वापस आया और अपनी माँ को बता दिया कि मैंने घोंसले को उसी जगह पर बांध दिया है। मेरी माँ भी बहुत खुश हुई और बोली बेटा आज से कभी भी किसी चिड़िया के बच्चे या फिर उसके घोंसले को न छेड़ना। तबसे जब भी किसी पक्षी का घोंसला देखता हूँ तो मुझे मेरी माँ की याद आ जाती है। और मैंने तबसे आज तक कभी भी किसी चिड़िया को नहीं छेड़ा है और जब कभी मुझे ऐसा अवसर आता है मैं उन्हें दाना भी देता रहता हूँ।

उप प्रबंधक
बीएचईएल, बीएपी, रानीपेट

मेरा प्यारा गाँव

ठण्डी–ठण्डी प्यारी प्यारी हरे नीम की छाँव।
याद मुझे अब भी आता है मेरा प्यारा गाँव।।

बचपन की वो धमा–चौकड़ी जो यारों संग, मचाते थे
बम्बे–नाले की पटरी पर लम्बी रेस लगाते थे
गुल्ली डण्डा, आँख मिचौली, खो–खो जैसे खेल,
पब्जी सब्जी, कैण्डी क्रश सब उनके आगे फेल
पूरे दिन की भागम–भागी, नहीं थकते थे पाँव,
याद मुझे अब भी आता है मेरा प्यारा गाँव।।

भरी दुपहरी पेड़ के नीचे मस्त मजे से सोते थे,
तान के चद्दर मीठे मीठे सपन सुहाने बोते थे
सावन के वो काले बादल मन को तो हर्षाते थे,
धीमी धीमी बरसातों में छत पर खूब नहाते थे
बारिश के पानी में अपनी चलती थी एक नाव,
याद मुझे अब भी आता है मेरा प्यारा गाँव।।

होली और दीवाली घर–घर राम–राम करने
जाना, मजेदार था फूलडोल में चाट पकौड़ी का
खाना
रोज–रोज की भाग–दौड़ से थक कर घर आ
जाते हैं, फ्रिज का ठण्डा पानी पीकर ए.सी. में सो
जाते हैं
ना जाने वो कहाँ छूट गयी आँचल वाली छाँव, याद मुझे अब भी आता
है मेरा प्यारा गाँव।।

सुदीप कुमार
उप अभियंता, बीएचईएल, हीप, हरिद्वार

पथ सही पहचान कर ले

रथ विजय का हाँकना तो, पथ सही पहचान कर ले।
सत्य सार्थक ध्येय रख कर, लक्ष्य का संधान कर ले।।

जीत होती है उसी की हार का जो डर न पाले।
चोट खाकर गिर पड़े तो, फिर उठे खुद को सँभाले।।
पाँव पाहन पर पड़ेंगे, पर कभी डिगने न पाएं।
दुश्मनों की पग निशानी, भूमि पर टिकने न पाएं।।
शत्रु दल की थाह ले लें, शक्ति का अनुमान कर ले।।
रथ विजय की हाँकना तो, पथ सही पहचान कर ले।

ढूंढ ले रिपु का ठिकाना, शत्रु अंदर भी खड़े हैं।
भय अनिर्णय और शंका, धृष्ट अरिदल बन अड़े हैं।।
आस्तीनों में छुपे कुछ, और कुछ हैं फन उठाए।
भ्रांति की चादर हटाकर, जाँच ले अपने पराए।।
कौन तेरा सारथी हो, बैठकर अवधान कर ले।
रथ विजय का हाँकना तो, पथ सही पहचान
कर ले।

है विजय को साधना तो, साध्य साथी धर्म का
हो।
शुद्धता हो साधनों में, निष्कपटता कर्म में हो।
पर कई शकुनी मिलेंगे, तुम सँभल कर चाल
चलना।
व्यूह कैसा भी रचा हो, भेदकर आगे निकलना।
द्रोहियों का अंत करने, इक सफल अभियान कर ले।
रथ विजय का हाँकना तो, पथ सही पहचान कर ले।

शशि रंजन चौधरी
उप अभियंता, बीएचईएल, हीप, हरिद्वार

तकनीकी आलेख

बीएचईएल, एचईआरपी वाराणसी के ग्रीनको ब्रोंज (कांस्य) प्रमाणित इकाई बनने का सफर

प्रत्यूष कुमार उपाध्याय

ग्रीनको परिचयः सीआईआई (सोहराबजी गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर) उद्योग में हरित पद्धतियों (Green Practices) को बढ़ावा देने के लिए कंपनियों के साथ मिलकर काम करता है और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के संबंध में विश्वस्तरीय सलाहकार सेवाएं प्रदान करता है। इस दिशा में सीआईआई द्वारा उठाया गया एक बड़ा कदम है– कंपनियों के लिए 'ग्रीन कंपनी रेटिंग सिस्टम' (ग्रीनको रेटिंग) का विकास ।

ग्रीनको रेटिंग ''दुनिया में अपनी तरह की पहली (first of its kind in the World)'' समग्र रूपरेखा (Holistic Framework) है। यह जीवन चक्र दृष्टिकोण (Life Cycle Approach) का उपयोग करती है और कंपनियों का उनकी गतिविधियों की पर्यावरण के अनुकूल होने का मूल्यांकन करता है। यह भारत में अपनी तरह की एक अनूठी (unique) रेटिंग प्रणाली है (भारत में एकमात्र ग्रीन कंपनी प्रमाणन)। इसे संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (UNIDO), संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय व्यापार केंद्र (UNITC) और भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है इसका उल्लेख पेरिस समझौता–2015 में भारत के इच्छित निर्धारित राष्ट्रीय योगदान (NDC- Nationally Determined Contribution) में अनूठी पहल के रूप में किया गया है।

बीएचईएल में ग्रीनको की आवश्यकता–

संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (UNFCCC COP26) के अवसर पर, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए लोगों को व्यक्तिगत रूप से शामिल करने के लिए ''LiFE- Lifestyle for the Environment (पर्यावरण के लिए जीवन शैली)'' अभियान की शुरुआत की। प्रधानमंत्री जी के इस अभियान के अंतर्गत तथा भारत के 2070 तक नेट ज़ीरो (कॉर्बन उत्सर्जन के प्रभाव को शून्य करना) लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु कॉर्पोरेट एच.एस.ई. विभाग द्वारा पर्यावरण जागरुकता माह (जून 2023) के अवसर पर 'बीएचईएल को हरित कंपनी में बदलने' (Transforming BHEL into a Green Company) के मिशन की शुरुआत की गई। बीएचईएल इकाइयों को ग्रीन इकाई में बदलने हेतु कौन–कौन से कदम उठाए जा सकते हैं, इसके लिए बाह्य मूल्यांकन एजेंसी सीआईआई हैदराबाद (Confederation of Indian Industry) को चुना गया। हमारी पांच इकाइयों (हीप हरिद्वार, एचईआरपी वाराणसी, टीपी झांसी, एचपीईपी हैदराबाद और एचपीबीपी त्रिची) को प्रथम चरण में सीआईआई द्वारा ग्रीनको रेटिंग मूल्यांकन के लिए शामिल किया गया। अगले चरण में अन्य इकाइयों को शामिल किया जाएगा।

एचईआरपी में ग्रीन कंपनी प्रमाणन (GreenCo Certification) का सफर–

कॉर्पोरेट कार्यालय की पहल पर सर्वप्रथम सीआईआई हैदराबाद के प्रशिक्षक एचईआरपी आए और ग्रीनको रेटिंग जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 14.06.23 से 15.06.23 तक कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया। इसकी मदद से हमें, कंपनी के अंदर हरित संस्कृति, निचले स्तर पर सुधार, विश्व स्तरीय निष्पादन, हरित कॉर्पोरेट छवि, बाजार की वृद्धि और निष्पादन, नेट जीरो, वाटर न्यूट्रल और जीरो वेस्ट टू लैंडफिल जैसे मुद्दों पर फायदे मिलेंगे। ग्रीनको मूल्यांकन के लिए 10 पैरामीटर हैं जिनके अलग–अलग अंक निर्धारित किए गए हैं। कुल मिलाकर 1000 अंक हैं, मूल्यांकन के दौरान प्राप्त कुल अंकों के आधार पर केवल प्रमाणन सर्टिफिकेट (350–449 अंक पर), कांस्य प्रमाणन सर्टिफिकेट (450–549 अंक पर), रजत प्रमाणन सर्टिफिकेट (550–649 अंक पर), स्वर्ण प्रमाणन सर्टिफिकेट (650–749 अंक पर), प्लैटिनम प्रमाणन सर्टिफिकेट (750–849 अंक पर) के द्वारा कम्पनियों को ग्रीनको रेटिंग दी जाती है इस प्रमाण पत्र की वैधता तीन सालों की होती है और प्रतिवर्ष इसकी समीक्षा की जाती है। इस दौरान हम जरुरी सुविधाओं का अनुपालन करके अपने ग्रीनको रेटिंग में सुधार हेतु भी आवेदन कर सकते हैं।

ग्रीनको पैरामीटर	वेटेज (अंक)
1.ऊर्जा दक्षता	150
2.जल संरक्षण	100
3.नवीकरणीय ऊर्जा	100
4.ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में कमी	100
5.कचरे का प्रबंधन	100
6.सामग्री संरक्षण, पुनर्चक्रण एवं पुनर्चक्रण क्षमता	100
7.हरित आपूर्ति श्रृंखला	100
8.उत्पाद प्रबंधन एवं जीवन चक्र मूल्यांकन	125
9.पर्यावरण के लिए नवाचार	50
10.हरित भवन सुविधाएँ, जैव विविधता/पारिस्थितिकीय	75
समग्र रेटिंग	**1000**

प्राप्त अंक ऊपर दिए गए पैरामीटर के क्रम में –

71–80, 31–40, 11–20, 51–60, 51–60, 61–70, 51–60, 51–60, 41–50 – 41–50

कुल प्राप्त अंकः 450–549

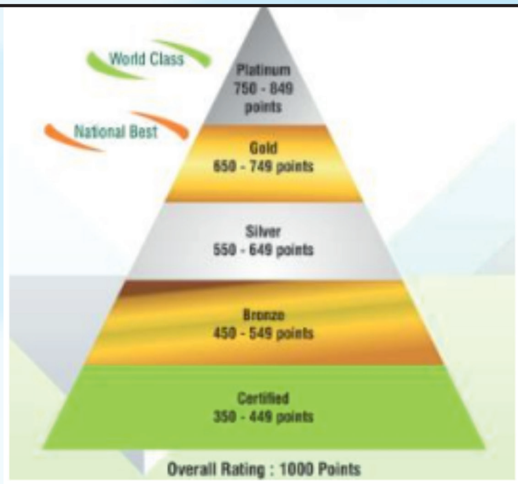

GreenCo Rating Parameters	Marks
ENERGY EFFICIENCY	150
WATER CONSERVATION	100
RENEWABLE ENERGY	100
GHG EMISSION REDUCTION	100
WASTE MANAGEMENT	100
MATERIAL CONSERVATION, RECYCLING & RECYCLABILITY	100
GREEN SUPPLY CHAIN	100
PRODUCT STEWARDSHIP & LIFE CYCLE ASPECTS	125
INNOVATION FOR ENVIRONMENT	50
GREEN INFRASTRUCTURE & ECOLOGY	75

उपर्युक्त सभी पैरामीटर के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु एचईआरपी में 10 टीमें बनाई गईं तथा सीआईआई की तरफ से छः महीनों का समय निर्धारित किया गया। सभी टीमों के टीम लीडरों ने अपनी– अपनी टीम के साथ सीआईआई द्वारा बताए गए तरीकों के अनुपालन की दिशा में कार्य शुरु किया। इस कार्य में इकाई प्रमुख (एचईआरपी) महोदय, सभी विभागाध्यक्षों, सभी विभागों तथा सभी कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिला। विशेषकर एचएसई विभाग का जो कि इस कार्य के लिए एचईआरपी की नोडल एजेंसी है। अपने प्रयासों का पूरा प्रजेंटेशन बनाकर सितम्बर महीने में हमने सीआईआई के साथ विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सुधार की अन्य संभावनाओं पर चर्चा की और एकबार फिर जरूरी बिंदुओं पर कार्य करना शुरू किया। जैसा कि सही ही कहा गया है 'जहां चाह वहां राह' के सिद्धांतों पर कार्य करते हुए तथा अपने मौजूदा संसाधनों का उपयोग करते हुए हम ग्रीनको रेटिंग मूल्यांकन के अंतिम चरण तक पहुंचे। नवम्बर महीने में सीआईआई हैदराबाद से मूल्यांकन टीम एचईआरपी आई और उन्होंने हर पैरामीटर पर हमारे कार्यों की समीक्षा की। सारे दस्तावेजों का साइट पर जाकर निरीक्षण किया। मूल्यांकन टीम ने अपने ऑब्जर्वेशन के समस्त पहलुओं को अपने डायरी के पिटारे मे कैद कर लिया। अब समय था मूल्यांकन टीम के अंतिम फैसले के इंतज़ार का तथा पूरे एचईआरपी परिवार के छः महीनों के अथक परिश्रम के परिणाम का। आखिर वो घड़ी आ ही गई और 15 दिसम्बर 2023 को एचईआरपी के मुकुट में हमेशा की तरह इस बार फिर एक और रत्न जुड़ गया एचईआरपी ने बीएचईएल की ग्रीनको ब्रोंज़ (GreenCo Bronze –15.12.2023 to 14.12.2026) प्रमाणित इकाई के रुप में अपना परचम लहराया और पूरा एचईआरपी परिवार खुशी से झूम उठा और हमने अपने BHEL गान की उन लाइनों को एक बार फिर सिद्ध किया–

उन्नति की राह के हम लोग हैं राही, सबको सुख हो हमने दुनिया ऐसी है चाही

है जतन अपना के हर जीवन सरल कर दें, आज से बेहतर हम आने वाला कल कर दें

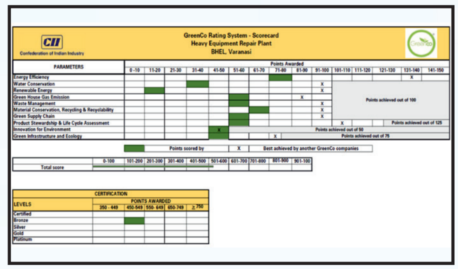

जग संवारें३.. जग निखारें..., स्वर्ग धरती पर उतारे

जैसा कि सही कहा गया है कि सफलता का कोई अंत नहीं है। होना भी नहीं चाहिए! अगर बहता पानी बहना बंद कर दे तो वह सड़ने लगता है। अतः हरित बीएचईएल के जिस सपने के साथ हम चले थे उसे उत्कृष्टता के शिखर पर ले जाकर ही दम लेंगे। इसके लिए हमने तनिक भी समय गंवाए बिना, आदरणीय इकाई प्रमुख (एचईआरपी) महोदय के नेतृत्व में प्लैटिनम रेटिंग के प्रमाणन की दिशा मे कार्य की शुरुआत नववर्ष 2024 के प्रथम सप्ताह से ही इस संकल्प के साथ शुरु कर दी है कि–

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

अभियंता
बीएचईएल, एचईआरपी, वाराणसी

आलेख

वेद वाङ्मय परिचय

डॉ. दुर्गेश चन्द्र गुप्त

वेद संस्कृत धातु 'विद्' से निकला है जिसका अर्थ है जानना, देखना या पहचानना। यह समस्त विद्याओं के ज्ञान का स्रोत है। यह भारतीय संस्कृति का प्राण है। इसका कोई ऋषि, मुनि, अवतार आदि कोई संस्थापक या प्रवर्तक नहीं है। इसमें मानव कल्याण को शरीर, मन, प्राण और आत्मा के सामंजस्य के रूप में परिभाषित किया गया है।

वेद का अवतरण इस वर्तमान सृष्टि में 1,96,08,53,1234 वर्ष पूर्व माना जाता है। अब तक 4 कल्प– महत, हिरण्य गर्भ, ब्रह्म व पद्म बीत चुके हैं।

ज्ञात हो कि ब्रह्मा का एक दिन एक कल्प के बराबर माना गया है। एक कल्प में 14 मन्वंतर, एक मन्वंतर में 71 महायुग औए एक महायुग में 4 चतुर्युग– सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग होते हैं।

शाश्वत सत्य माने जाने वाले वेदों को हजारों वर्षों तक मौखिक परंपरा के माध्यम से प्रसारित किया गया था। आदिकाल यानि सतयुग में सभी मनुष्य तपस्वी होते थे व ब्रह्मज्ञान ग्रहण करने की क्षमता रखते थे, लेकिन उत्तरोत्तर जब कालक्रम से मनुष्य की मेधा शक्ति क्षीण हो गयी, तब श्री कृष्ण द्वैपायन महर्षि वेदव्यास द्वापर के अंतिम चरण में (5000 –5500 ईसा पूर्व) ऋग, यजु:, साम तथा अथर्व वेद के रूप में अलग –अलग चार नामों से वेद का विभाजन एवं संकलन करके अपने चार शिष्यों (पैल, वैशम्पायन, जैमिनी और सुमन्तु) को पढ़ाया। हमारे वेद यूनेस्को की 158 सूची में भी शामिल हैं।

आइए, हम इन वेदों के बारे में विस्तार से जानते हैं:

वेद:

वेद का हिन्दी में अर्थ है ज्ञान जो नित्य एवं अनादि है। वेद में शब्द को नित्य माना गया है। शब्द की चार अवस्थाएं मानी गई हैं : परा, पश्यंती, मध्यमा एवं वैखरी।

वेदवाणी का साक्षात्कार ऋषियों द्वारा पश्यंती वाणी में हुआ। वाणी का स्थूल रूप मध्यमा है और मानवीय अभिव्यक्ति (बोल–चाल) वैखरी वाणी है। सामान्यतः वैदिक साहित्य को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है:

i) **श्रुति साहित्य** – गुरु शिष्य परम्परा द्वारा सुना या संप्रेषित किया गया वेद साहित्य।

ii) **स्मृति साहित्य** – वह साहित्य जो स्मृति के आधार पर याद किया जाता है या रचा जाता है। ये ग्रन्थ ऋषि–मुनि लिखते हैं। इतिहास– रामायण व महाभारत, पुराण और धर्मशास्त्र आदि स्मृति साहित्य हैं।

वेदों को श्रुति साहित्य के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि ऋषियों ने इस ज्ञान को समाधि की स्थिति में प्राप्त किया था। वेदों को अपौरुषेय माना जाता है, जिसका अर्थ है "मनुष्य का नहीं", अर्थात वे किसी के द्वारा लिखे नहीं गए बल्कि शाश्वत रचनाएँ हैं। वेदांत और मीमांसा दर्शन विद्यालयों के अनुसार, वेदों को स्वतः प्रमाण माना जाता है। वेदों की रचना किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं की गई थी, बल्कि इनके मंत्रों की रचना लगभग 329 ऋषियों (पुरुष) और 27 ऋषिकाओं (महिला) द्वारा की गई थी।

1. **ऋग्वेद:** (इसका हिन्दी में अर्थ है – रिक् अर्थात अनादि व अनंत ब्रह्म की स्तुति)

भाषाविज्ञान और भाषाई साक्ष्य के आधार पर ऋग्वेद किसी भी इंडो–यूरोपीय भाषा में मौजूद सबसे पुराने ग्रंथों में से एक है और इसका लिखित स्वरूप संभवतः 1500 और 1200 ईसा पूर्व अस्तित्व में आया। भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे में रखी कुल 28,000 पांडुलिपियों में ऋग्वेद की 30 पांडुलिपियां रखी हैं। ऋग्वेद विश्व का सबसे पुराना ज्ञात वैदिक संस्कृत पाठ है। लोकमान्य तिलक ने 'ओरयन' में युधिष्ठिर से भी हजारों वर्षों पूर्व वेदों का अस्तित्व सिद्ध किया है। ऋग्वेद के मुख्य देवता इंद्र हैं, जिन्हें सर्वाधिक शक्तिशाली देवता के रूप में चित्रित किया गया है। लेकिन यहाँ इंद्रदेव ब्रह्म के रूप में हैं जो अपनी माया द्वारा अनेक रूपों में प्रकट होते हैं, न कि पौराणिक बज्रधारी देवराज इन्द्र के रूप में जो मेघ–वर्षा के देवता हैं– इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते (ऋक 6.47.18)

ऋग्वेद 10,600 छंदों के साथ 1028 सूक्तों एवं दस मंडलों में विभाजित है। 1 और 10 नवीनतम मंडल हैं, जो 2 से 9 मंडलों के बाद लिखे गए हैं। मंत्रों के समूह को सूक्त कहते है। हर मंत्र का एक ऋषि, एक देवता और एक छंद होता है। 2 से 8 मंडल, ब्रह्मांड विज्ञान और देवताओं पर केंद्रित हैं। इनके ऋषि क्रमशः गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज, वशिष्ठ, कण्व हैं। 9वां मंडल पूरी तरह से सोम देवता को समर्पित है। मंडल 1 एवं 10 में 191 छंद शामिल हैं। मंडल 1 का पहला मंत्र अग्नि को संबोधित है। शेष मंत्र मुख्य रूप से अग्नि और इंद्र के साथ–साथ वरुण, मित्र, अश्विन, मरुत, सूर्य, ऋभु, रुद्र, वायु, बृहस्पति, विष्णु और स्वर्ग एवं पृथ्वी के देवताओं को संबोधित हैं।

छंद: ऋग्वेद के मंत्रों में अलग–अलग छंदों का उपयोग किया गया है, जिनको वर्णो/अक्षर मात्रा के अनुसार गायत्री (24), अनुष्टुप (32), त्रिष्टुप (44) और जगति (48) छंद कहा गया है। सर्वाधिक प्रयुक्त छंद अनुष्टुप में महाभारत, रामायण व गीता की रचना हुई है।

गायत्री मंत्र को सभी हिंदू मंत्रों में सबसे सार्वभौमिक एवं महामंत्र माना जाता है, जो ज्ञान के सिद्धांत और सूर्य के प्रकाश के रूप में सार्वभौमिक ब्रह्म का आह्वान करता है। इसके ऋषि विश्वामित्र एवं देवता सविता हैं और यह ऋग्वेद के तीसरे मंडल, 62 वें सूक्त का 10 वां मंत्र (3.62.10) है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

सामान्य अर्थ: हम उस परम पूजनीय सर्वोच्च भगवान, निर्माता का ध्यान करते हैं, जिसका तेज (दिव्य प्रकाश) सभी क्षेत्रों (शारीरिक, मानसिक

और आध्यात्मिक) को प्रकाशित करता है। गायत्री महामंत्र में 24 अक्षर हैं, तत्, सा, वि, तू, वा, रे, नि, यं, भर, गो, दे, वा, स्या, धि, म, ही, धि, यो, यो, न, प्र, चो , द, और यात्।

अग्नि और इंद्र जैसे देवताओं को समर्पित 1028 छंद हैं। ऋग्वेद में शिव शब्द का प्रयोग रुद्र सहित कई ऋग्वैदिक देवताओं के लिए एक विशेषण के रूप में किया जाता है। शिव शब्द का अर्थ "मुक्ति, अंतिम मुक्ति" और "शुभ" भी है; यह विशेषण प्रयोग वैदिक साहित्य में कई देवताओं को संबोधित है।

शाखाः 21 में केवल 1 (शाकल)

ब्राह्मणः ऐतरेय एवं कौषीतकी (शांखायन)

संहिताः शाकल, आश्वलायन

महावाक्यः प्रज्ञानम ब्रह्म (ऐतरेय 1/2)– प्रकट ज्ञान ब्रह्म है अर्थात ज्ञान स्वरुप ब्रह्म जो सभी प्राणियों में जीव रूप में विद्यमान है वही जानने योग्य है।

2. **यजुर्वेदः** (इसका हिन्दी में अर्थ है – गतिशील आकाश जो श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देता है)

यजुर्वेद को चार वेदों में से दूसरा माना जाता है, इसे आमतौर पर "अनुष्ठानों का ग्रंथ" कहा जाता है। इसकी रचना ऋग्वेद के संकलन के लगभग एक से दो शताब्दी बाद हुई थी, जिसका काल 1000 से 800 ईसा पूर्व था। यह गद्य में है और इसमें मंत्र और अनुष्ठान पूजा सूत्र हैं जो विभिन्न पूजा अनुष्ठानों में प्रत्यक्ष भूमिका निभाते हैं।

शाखाः यजुर्वेद की 100 में से मुख्य 2 शाखाओं में प्रमुख रूप से दो संप्रदाय हैं – ब्रह्म सम्प्रदाय (कृष्ण यजुर्वेद) और आदित्य सम्प्रदाय (शुक्ल यजुर्वेद)। कृष्ण यजुर्वेद में छंदों का अव्यवस्थित और अस्पष्ट संग्रह है, जबकि शुक्ल यजुर्वेद में सुव्यवस्थित और स्पष्ट छंद हैं। इसमें 40 अध्याय एवं 1975 छंद हैं, जिनमें से अधिकांश ऋग्वेद से लिए गए हैं।

ब्राह्मणः तैत्तरीय (कृष्ण यजुर्वेद) एवं शतपथ ब्राह्मण (शुक्ल यजुर्वेद)

इसमें विभिन्न उपनिषद शामिल हैं, जिनमें से बृहदारण्यक उपनिषद, ईशा उपनिषद, तैत्तिरीय उपनिषद, कथा उपनिषद, श्वेताश्वतर उपनिषद और मैत्री उपनिषद मुख्य हैं।

संहिताः कृष्ण यजुर्वेद के चार संहिता हैं– तैत्तिरीय संहिता, मैत्रायणी संहिता, कथा संहिता और कपिस्थल संहिता।

महावाक्यः अहं ब्रह्मास्मि (बृहदारण्यक 1.4.10)– मै ब्रह्म हूँ अर्थात परमात्मा का बोध होने पर जीव का द्वैत भाव नष्ट हो जाता है और ब्रह्म से जीव की एकता हो जाती है।

3. **सामवेदः** (इसका हिंदी में अर्थ है– रूपान्तरण जिसमें संगीत शास्त्र का समावेश है)

सामवेद में 6 अध्याय एवं 1875 छंद हैं, जिनमें से 1771 ऋग्वेद से लिए गए हैं। इसमें मुख्य रूप से ऋग्वेद के 8वें और 9वें मंडलों के छंद हैं। चारों वेदों की तुलना में यह सबसे छोटा वेद है। इन छंदों का उच्चारण सोम यज्ञ जैसे अनुष्ठानों के दौरान किया जाता है। इसे 1200 या 1000 ईसा पूर्व के आसपास संकलित किया गया था। इसे विशेष रूप से अनुष्ठानिक उद्देश्यों के लिए संकलित किया गया था, जिसमें इंद्र, अग्नि, पवमान एवं सोम देवताओं का आह्वान एवं प्रार्थना किया जाता है। यह वेद भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य की नींव के रूप में प्रसिद्ध है और मधुर मंत्रों के खजाने के रूप में कार्य करता है। इसमें ऋग्वेद की तुलना में कम छंद हैं, लेकिन इसके पाठ बड़े हैं। मूलतः यह ऋग्वेद का संक्षिप्त संस्करण है। इसे उद्गाता पुजारियों के लिए गीतपुस्तक माना जाता है।

शाखाः 1000 में मुख्य कौथमीय है।

संहिताः 2 भाग हैं – पूर्वार्चिक (650 छंद) एवं उत्तरार्चिक (1225 छंद)

ब्राह्मणः सामवेद के लिए, मुख्य ब्राह्मण पंचविंस, सदविंस और जैमिनीय हैं। सामवेद के भीतर दो उपनिषद अंतर्निहित हैं– छांदोग्य उपनिषद और केन उपनिषद।

महावाक्यः तत्त्वमसि (छंदोग्य उपनिषद 6.8.7)– वह ब्रह्म तुम हो अर्थात सृष्टि से पूर्व अजन्मा सत्य स्वरुप ब्रह्म अविनाशी आत्मा रूप से शरीर में तुम्हीं हो।

4. **अथर्ववेदः** (इसका हिंदी में अर्थ है – ज्ञान से श्रेष्ठ कार्य करते हुए अकंपन बुद्धि को प्राप्त कर मोक्ष धारण करना)

अथर्ववेद जीवन के दैनिक अनुष्ठानों और प्रक्रियाओं पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान करता है। शौनक संहिता में 20 कांड, 731 सूत्र और 6000 मंत्र शामिल हैं। इसमें 1200 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। यह दर्शन, चिकित्सा जैसे विषयों से संबंधित है। सांसारिक सुख एवं आध्यात्मिक ज्ञान दोनों से संबंधित यह एकमात्र वेद ग्रन्थ है। यह चार वेदों में से अंतिम है और विभिन्न बीमारियों के इलाज से संबंधित है। इसमें औषधीय पौधों और रोगों के उपचार की प्रक्रिया से संबंधित विवरण है।

शाखाः 9 में से कवल 2 ही ज्ञात हैं – शौनक एवं पैप्पलाद

ब्राह्मणः गोपथ (पैप्पलाद शाखा)

वैदिक ॐ, संस्कृत भाषा एवं आधुनिक विज्ञानः

वेद की ऋचाएं संस्कृत भाषा में हैं जो ब्रह्मांड के नियम, कर्म और उसकी कार्यप्रणाली को समझने के लिए सर्वश्रेष्ठ शब्दावली प्रदान करती है। संस्कृत वर्णमाला का उपयोग नक्षत्रों और ग्रहों से लेकर सूक्ष्म शरीर के चक्रों तक सार्वभौमिक शक्तियों के लिए ब्लूप्रिंट के रूप में किया जाता है। संस्कृत उन स्पंदनात्मक पैटर्न को प्रतिबिंबित करती है जो संपूर्ण ब्रह्मांड को व्यक्तिगत, सामूहिक, वैश्विक और सार्वभौमिक स्तरों पर नियंत्रित करते हैं और ये सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वेद के अनुसार, ॐ कंपन से ब्रह्मांड का निर्माण संस्कृत वर्णमाला की ध्वनियों और इसके शक्ति मंत्रों के माध्यम से प्राथमिक ऊर्जा ध्वनियों और पैटर्न के रूप में हुआ है जबकि आधुनिक विज्ञान, ब्रह्मांड का निर्माण एवं विस्तार के लिए बिग बैंग सिद्धान्त को मानता है।

संस्कृत केवल मानव निर्मित ऐतिहासिक भाषा नहीं है। इसमें ब्रह्मांडीय ध्वनि की सभी संभावनाएं समाहित हैं। यह मानव मस्तिष्क और दिमाग को कॉस्मिक इंटेलिजेंस के कंपन क्षेत्र से जोड़ता है जो संपूर्ण ब्रह्मांड

का मार्गदर्शन करता है। संस्कृत ब्रह्मांडीय ध्वनि का मानवीय अनुकरण है जो मानव मन को ब्रह्म से जोड़ता है। जिस तरह हम इंटरनेट से जुड़ सकते हैं और सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से जानकारी डाउनलोड कर सकते हैं, उसी तरह हम कॉस्मिक इंटेलिजेंस से जुड़ने और इसके गहन ज्ञान और बुद्धिमत्ता तक पहुंचने के लिए ध्यानस्थ मन में संस्कृत का उपयोग कर सकते हैं। यह दिव्य वाणी ॐ और मौलिक ध्वनि कंपन पैटर्न से आरंभ होती है जो समय/स्थान सांतत्य का निर्माण करता है।

सारांश में, वैदिक मंत्रों के माध्यम से ऋषियों ने सभी नाम और रूप से परे परा वाक् या उत्कृष्ट वाणी द्वारा सृष्टि के रहस्यों को वेदों में प्रकट किया। इसीलिए वेदों को वह साधन कहा जाता है जिसके माध्यम से ब्रह्मांड उत्पन्न होता है, कायम रहता है, विलीन हो जाता है, हर पल होता है और साथ ही ब्रह्मांडीय समय के सभी काल खंडो में होता रहता है।

महाप्रबंधक
बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

मेरी जिन्दगी की लाइब्रेरी

आँचल चौधरी

मेरी ज़िन्दगी की लाइब्रेरी में
उदासी की किताब नहीं है।
शायद वो किताब तो है पर,
किताबें तो और बहुत सी हैं,
जो अभी भी पढ़नी बाकी है।
क्यूंकि अभी भी हर सवाल
का मेरे पास जवाब नहीं है।
मेरी ज़िन्दगी की लाइब्रेरी में
उदासी की किताब नहीं है।

हासिल है कुछ हमदर्द भी,
साहिल भी है, हमसफ़र भी,
कोई मेरी चाहत है आज भी,
चाहा कुछ ने इस कदर भी।
किसी की चाहत है राज़ भी,
पर दस्तूर है कुछ ऐसा कि
शुक्रिया का हिसाब नहीं है,
मेरी ज़िन्दगी की लाइब्रेरी में
उदासी की किताब नहीं है।

बगिया में कभी बरसात,
तो कभी वीरानी सी रात,
महकते हैं कभी जज्बात,
तो कभी पतझड़ की बात।
सजा है सेहरा–औ–बारात,
तो कभी चुभते सवालात,
जिस डाली में काटें न हो,
ऐसा तो कोई गुलाब नहीं है।
मेरी ज़िन्दगी की लाइब्रेरी में
उदासी की किताब नहीं है।

सांसें जो यह मिल रही हैं,
सब उसके रहमो करम से।
ज़िंदा हो तो एक मौका है,
हार–जीत बस एक धोखा है।
कभी हारे की तैयार न थे,
तो कभी मौके पे चौका है।
गर ज़िंदा हो तो ज़िन्दगी में
इससे बड़ा खिताब नहीं है।
मेरी ज़िन्दगी की लाइब्रेरी में
उदासी की किताब नहीं है।

प्रबंधक (सीएमएम)
बीएचईएल, पीईएम, नोएडा

आजाद हिंदुस्तान का परिदृश्य

नरेन्द्र कुमार

भूखे, गरीब, बेरोजगार, अनाथों और लाचार
की दास्तान लिखने आया हूं,
हां मैं आजाद हिंदुस्तान लिखने आया हूं।

एक ही कपड़े में सारे मौसम गुजारने वाले
सूखा, बाढ़ और ओले से फसल बर्बाद होने
पर रोने और मरनेवाले,
कर्ज में डूबे हुए उस किसान अन्नदाता की
जुबान लिखने आया हूं
हां मैं आजाद हिंदुस्तान लिखने आया हूं।

मैं भगत, सुभाष चंद्र और आजाद जैसा भारत मां का सपूत तो नहीं,
लेकिन इन्हें सिर्फ जन्म और मरण दिन पर याद करने वाले और
आंसू बहाने वाले,
उन्हें इन सपूतों की याद दिलाने
फिर से बलिदान लिखने आया हूं
हां मैं आजाद हिंदुस्तान लिखने आया हूं।

मजहब के नाम पर न हो लड़ाई
जाति धर्म के नाम पर न हो किसी की पिटाई,
सब मिल–जुल कर रहे भाई–भाई
जाति धर्म से ऊपर उठने के लिए इम्तिहान लिखने आया हूं,
हां मैं आजाद हिंदुस्तान लिखने आया हूं।

सीमा पर देश के लिए लड़ने वाले
अपनी जान की परवाह किए बिना,
देश पर मर मिटने वाले
मैं देश के ऐसे वीरों को सलाम लिखने आया हूं,
हां मैं आजाद हिंदुस्तान लिखने आया हूं।

सबके पास हो रोजगार और अपना व्यापार
देश मुक्त हो गरीबी, बेरोजगारी बलात्कार और भ्रष्टाचार से,
मैं देश के लोगों के सपने और अरमान लिखने आया हूं
हां मैं आजाद हिंदुस्तान लिखने आया हूं।

आर्टिजन, बीएचईएल, सीएफपी, रुद्रपुर

ब्रोंकाइटिस क्या है (BRONCHITIS)

ब्रोंकाइटिस फेफड़े या श्वसन संबंधी विकार है जो वायरस, बैक्टीरिया या अन्य कणों के कारण होता है। इसमें ब्रोन्कियल ट्यूब में सूजन या जलन हो जाती है। इस सूजन से मुंह–नाक और फेफड़ों के बीच हवा की गति प्रतिबंधित हो जाती है। ऐसी स्थिति में सांस लेना बहुत मुश्किल हो जाता है क्योंकि वायु मार्ग बलगम या कफ से भर जाता है। ब्रोंकाइटिस रोग में, ब्रोंची प्रभावित हो जाती है जिसमें संक्रमण इसे परेशान करता है और यह आमतौर पर उच्च मात्रा में बलगम बनाता है जिसे खांसी की प्रक्रिया के माध्यम से निकालने की कोशिश की जाती है। ब्रोंकाइटिस के दो मुख्य प्रकार होते हैं – तीव्र (एक्यूट) और पुरानी (क्रोनिक)

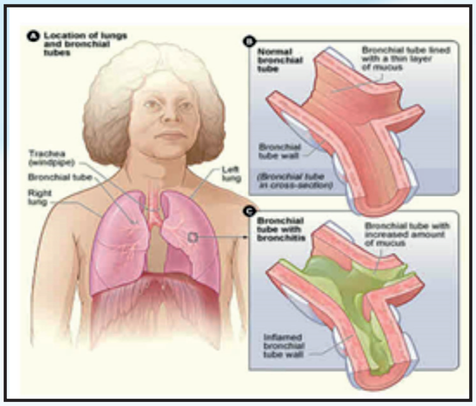

तीव्र ब्रोंकाइटिस (ACUTE BRONCHITIS)

तीव्र ब्रोंकाइटिस संक्रमण या फेफड़े की परेशानियों के कारण होती है। सर्दी और फ्लू वाले वायरस एक्यूट ब्रोंकाइटिस का सबसे आम कारण है। जब लोग खांसी करते हैं तब ये वायरस हवा में फैलाते हैं। ये वायरस शारीरिक संपर्क के माध्यम से भी फैल सकते हैं (जैसे बिना हाथ धोये व्यक्ति से हाथ मिलाने से)। कभी–कभी बैक्टीरिया के कारण तीव्र ब्रोंकाइटिस होता है। तीव्र ब्रोंकाइटिस लगभग 10 दिनों तक रहता है। लेकिन संक्रमण समाप्त होने के बाद भी कई सप्ताह तक खांसी हो सकती है। कई कारक तीव्र ब्रोंकाइटिस के जोखिम को बढ़ाते हैं। जैसे तंबाकू का धुआं (सेकंड हैण्ड धुआं सहित), धूल, धुएं, वाष्पीकरण और वायु प्रदूषण आदि। तीव्र ब्रोंकाइटिस के अधिकांश मामले कुछ दिनों में ठीक हो जाते हैं। अधिक गंभीर स्थितियों में चिकित्सा देखभाल की आवश्यकता होती है।

क्रोनिक ब्रोंकाइटिस (CHRONIC BRONCHITIS)

क्रोनिक ब्रोन्काइटिस निरंतर चलने वाली गंभीर स्थिति है। यह तब होती है जब ब्रोन्कियल ट्यूबों की परत पर लगातार irritation और सूजन होती है, जिससे बलगम के साथ देर तक खांसी होती है। क्रोनिक ब्रॉन्काइटिस का मुख्य कारण धूम्रपान है। वायरस या जीवाणु आसानी से ब्रोन्कियल ट्यूबों को संक्रमित कर सकते हैं। यदि ऐसा होता है, तो स्थिति विकट हो जाती है और लंबे समय तक रहती है। नतीजतन, क्रोनिक ब्रॉन्काइटिस वाले लोगों की अवधि अधिक होती है और लक्षण सामान्य से ज्यादा खराब होते हैं। प्रारंभिक निदान और उपचार, धूम्रपान छोड़ने और धुआं से बचने से जीवन की गुणवत्ता में सुधार आ सकता है। गंभीर क्रोनिक ब्रॉन्काइटिस से ग्रस्त लोगों के पूरी तरह से ठीक होने की संभावना कम होती है।

डॉ स्मिता सिंघल

ब्रोंकाइटिस का जोखिम

हर साल ब्रोंकाइटिस के लाखों मामले होते हैं। बुजुर्गों, शिशुओं और युवा बच्चों को अन्य आयु वर्ग के लोगों की तुलना में तीव्र ब्रोन्काइटिस का अधिक खतरा होता है। हालांकि सभी उम्र के लोगों को क्रोनिक ब्रोंकाइटिस हो सकती है, लेकिन 45 से अधिक उम्र के धूम्रपान करने वाले लोगों में अधिक होता है। महिलाओं में क्रोनिक ब्रोंकाइटिस होने की संभावना पुरुषों की तुलना में दोगुनी होती है। धूम्रपान करने और पहले से ही फेफड़ों के रोग से ग्रसित होने से ब्रोंकाइटिस का जोखिम बहुत बढ़ जाता है। कार्यस्थल में धूल, रासायनिक धुएं, और वाष्प के साथ संपर्क भी इसके जोखिम को बढ़ाता है। उदाहरण– कोयला खनन, कपड़ा निर्माण, अनाज प्रबंधन और पशुपालन आदि। वायु प्रदूषण, संक्रमण और एलर्जी क्रोनिक ब्रोंकाइटिस को और बिगाड़ सकते हैं।

ब्रोंकाइटिस के लक्षण

- केवल खांसी या खांसी के साथ बलगम या कफ (सफेद, पीले–भूरे या हरे रंग जैसा)
- सांस लेने में तकलीफ के साथ छाती में बेचैनी
- सांस लेने के दौरान सीटी या घरघराहट की आवाज
- गले में खराश
- बंद या बहती हुई, भरी हुई नाक
- शरीर में दर्द और बुखार के साथ ठंड लगना
- सिरदर्द और थकान

ब्रोंकाइटिस में थकान

शरीर बढ़े हुए रक्त प्रवाह के माध्यम से श्वेत रक्त कोशिकाओं को भेजकर रोग पैदा करने वाले जीवाणुओं के प्रति प्रतिक्रिया करता है। बैक्टीरिया के हमले में शरीर नए एंटीबॉडी का उत्पादन करना शुरू कर देता है जो बाद में बैक्टीरिया से जुड़ जाते हैं और उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं। इस स्थिति में, शरीर इस प्रक्रिया के माध्यम से ब्रोंकाइटिस के बैक्टीरिया को ठीक करने के लिए अपने अधिकांश संसाधनों का उपयोग करता है जिससे रोगी को थकान हो जाती है। इसके अलावा, ब्रोंकाइटिस बैक्टीरिया फेफड़ों में बढ़ता है और नाक के अधिकांश मार्ग को अवरुद्ध कर देता है जिससे व्यक्ति के लिए सांस लेना मुश्किल हो जाता है। इससे रक्त प्रवाह में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और शरीर के लिए दैनिक काम काज भी ठीक से करना मुश्किल हो जाता है।

क्या ब्रोंकाइटिस फेफड़ों को नुकसान पहुंचा सकता है?

गंभीर मामलों में, जल्दी पता लगने पर उपचार से फेफड़ों को स्थायी क्षति से बचाया जा सकता है। क्योंकि अधिकांश तीव्र मामलों में,

ब्रोंकाइटिस आमतौर पर बिना किसी विशिष्ट दवा या एंटीबायोटिक दवाओं से ठीक हो जाता है। यदि समय पर इसका पता नहीं चलता है तो तीव्र ब्रोंकाइटिस, क्रोनिक ब्रोंकाइटिस या यहां तक कि गंभीर निमोनिया बन जाता है। ऐसे में इस रोग से फेफड़ों को नुकसान होने की बहुत संभावना है। नुकसान इन तथ्यों पर निर्भर करता है जैसे:

- पैथोजन्स का प्रकार जो ब्रोंकाइटिस को ट्रिगर करता है।
- फेफड़ों को प्रभावित करने वाले जीवाणुओं की अवधि।
- व्यक्तिगत प्रतिरक्षा प्रणाली और संक्रमण की ताकत।

ब्रोंकाइटिस का निदान

डॉक्टर आमतौर पर आपके लक्षण और संकेतों के आधार पर ब्रोंकाइटिस का निदान करेंगे। मेडिकल हिस्ट्री, धूम्रपान, धूल, धुएं, वाष्प या वायु प्रदूषण का संपर्क, शारिरिक परीक्षण, बलगम की जांच, ऑक्सीजन के स्तर का परीक्षण, एक्सरे, फेफड़े का फ़ंक्शन परीक्षण या रक्त परीक्षण अहम होते हैं।

ब्रोंकाइटिस का उपचार

एक्यूट और क्रोनिक ब्रोन्काइटिस के उपचार का मतलब है इसके लक्षणों से मुक्ति और श्वसन प्रक्रिया का सामान्य हो जाना। सामान्य जीवाणु संक्रमण में तो एंटीबायोटिक दवा हुमिडीफायर या स्टीम बलगम को ढीला करने, गले की घरघराहट और वायु प्रवाह बढ़ाने में मदद करती है। इनहेलर डिवाइस दवा को सीधे फेफड़ों में पहुँचाती है और खाँसी को कम करने तथा सूजे हुए वायुमार्गों के इलाज में सहायक होती है। क्रॉनिक ब्रॉन्काइटिस और सीओपीडी (पुरानी अवरोधक फुफ्फुसीय रोग) में वायुमार्ग को खोलने के लिए ब्रोन्कोडायलेटर्स (इन्हेल्ड) और स्टेरॉयड (इन्हेल्ड या गोली फॉर्म) जैसी दवा का उपयोग होता है।

ब्रोंकाइटिस की रोकथाम

तीव्र या क्रोनिक ब्रोंकाइटिस को रोक नहीं सकते हैं। लेकिन इनसे बचने के उपाय किए जा सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रयास है धूम्रपान छोड़ना या धूम्रपान शुरू ही नहीं करना। कुछ अन्य उपाय हैं:

- सिगरेट बिलकुल भी न पीएं, क्योंकि इससे ब्रोंकाइटिस का खतरा बढ़ता है।
- फ्लू, निमोनिया जैसी बीमारियों के लिए टीके लगवाने चाहिए क्योंकि ये बीमारियाँ ही आगे चलकर ब्रोंकाइटिस का कारण बनती हैं।
- स्वच्छता बनाए रखने की भी सलाह दी जाती है क्योंकि आवश्यक सैनिटाइज़र या साबुन से बार–बार हाथ धोना वायरल संक्रमण के जोखिम को रोकता है।
- भीड़–भाड़ वाली जगहों पर जाने पर संक्रमण फैलने से बचने के साथ–साथ धूल या धुएं के संपर्क में आने से बचने के लिए फेशियल मास्क का इस्तेमाल करें।
- डीजल पावर प्लांट या व्यस्त सड़कों से बचना चाहिए क्योंकि इससे क्रोनिक ब्रोंकाइटिस का खतरा दोगुना हो जाता है। जब आप पेंट, रंग हटानेवाले, वार्निश या तेज गंध वाले पदार्थों का उपयोग करते हैं, तो अपने मुंह और नाक पर मास्क पहनें। इससे आपके फेफड़ों की सुरक्षा में मदद मिलेगी।

ब्रोंकाइटिस से ठीक होने में कितना समय लगता है?

तीव्र ब्रोंकाइटिस आमतौर पर संक्रमण या धूल, रासायनिक धुएं या किसी अन्य फेफड़े की जलन के कारण होता है जिसके परिणामस्वरूप फेफड़ों के वायुमार्ग में सूजन हो जाती है। सूखी खाँसी 3–4 दिन तक रहती है और बलगम वाली खाँसी में परिवर्तित होकर तीन से चार सप्ताह तक रहती है। उपचार योजना का निर्धारित तरीके से पालन किया जाना चाहिए और यदि फेफड़े ज्यादा क्षतिग्रस्त नहीं हैं और ठीक से काम कर रहे हैं तो तीव्र ब्रोंकाइटिस 3–4 सप्ताह में दूर हो जाता है। धूम्रपान करने वाले को क्रोनिक ब्रोंकाइटिस होने का अधिक खतरा होता है क्योंकि उसे बलगम या कफ के साथ खांसी होती है और कभी–कभी खून भी आ जाता है। एक बार जब उपचार शुरू हो जाता है और उसका ठीक से पालन किया जाता है, तो क्रोनिक ब्रोंकाइटिस को ठीक होने की समय अवधि न्यूनतम तीन महीने से दो वर्षों तक होती है।

विशेषज्ञ (गहन चिकित्सा इकाई)
बीएचईएल, हीप, हरिद्वार

नया दौर (सन्नाटा)

मन में आशा, कंधों पे झोला लिये, चला मैं अपने गांव की ओर..

लगे थे घर–घर में ताले, छाया था सन्नाटा चारों ओर

पुरखों की ये धरोहर अब होती धूमल, कुछ घर होते खंडहर कुछ बनते कूबड़....

खेत खलियान सब बंजर हो गए, बाग–बगीचे भी अब सूने पड़ गए..

गली कूचों में, ना अब कोई शोर सुनाई पड़ता, पनघट भी धीरे से अपनी आह सिसक भरता...

फर–फर लहलहाते वो अनाजों से भरे खेत, उग आये उनपे भी झाड़ियों की लताएं और बेल...

अन्न–धन से भरे पड़े वो बक्से–बक्से अपने,
फूट गए टूट गए सारे, बिखर गए वो सपने...

मन में आशा, कंधों पे झोला लिए, चला मैं अपने गांव की ओर...

लगे थे घर–घर में ताले, छाया था सन्नाटा चारों ओर...

अब ये कैसा नया जमाना आ गया,
पहुंचते–पहुंचते खुद को ही कहीं पीछे छोड़ आया...

संदीप सिंह बुदियाल
उप प्रबंधक, बीएचईएल, सीएफपी, रुद्रपुर

कार्यस्थल पर स्वच्छता

ऐ बंदे कर ऐसा जतन की, जग हो जाए हैरान
सभी तरह स्वच्छता हो कि चमके मेरा हिंदुस्तान।।

अपनी कर्मभूमि या कार्यस्थल की स्वच्छता को सबसे पहले इस तथ्य पर आंकना चाहिए कि–

1. बुनियादी स्तर पर कार्यस्थल की स्वच्छता कैसी होनी चाहिए
2. स्वच्छता के लिए आवश्यक स्थान कौन से हैं

1. बुनियादी स्तर पर कार्यस्थल की स्वच्छता कैसी होनी चाहिए ?

कार्यस्थल के वातावरण को यथासंभव, लंबे समय तक सुरक्षित और स्वच्छ रखना हर कर्मचारी का दायित्व होता है। यदि कार्य स्थल साफ–सुथरा और स्वच्छ दिखता है तो वहां पर काम करने वाले हर कर्मचारी को कार्य हेतु एक अच्छा माहौल मिलता है। हम इस बात को भली भांति जानते हैं कि अगर हमें कहीं पर गंदगी दिखती है, तो उस गंदगी को कम करने की जगह पर अक्सर लोग उसे और बढ़ा देते हैं। जैसे कि अगर किसी कोने पर पान का थूक पड़ा है तो कुछ समय बाद वहां पर चार–पांच लोग और आकर गंदगी कर जाएंगे। लेकिन यदि कोना–कोना कार्यस्थल का साफ है तो हर व्यक्ति इस प्रयास में लगेगा कि यह स्वच्छता बनी रहे।

2. स्वच्छता के लिए आवश्यक स्थान कौन से हैं ?

कार्यस्थल डेस्क, लिफ्ट, कार पार्किंग, पार्क, भोजन से संबंधित क्षेत्र, शौचालय और स्नान घर ऐसे स्थान हैं जहां स्वच्छता पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। "कार्यस्थल भी हमारा एक घर" है इसलिए हमारा यह कर्तव्य बनता है कि वहां पर भी सभी सार्वजनिक स्थानों को साफ – सुथड़ा रखने के लिए सतत एवं सजग प्रयास करें।

स्वच्छता बनाए रखने की युक्ति –

• एक व्यापक सफाई कार्यक्रम विकसित करें

कार्यस्थल पर स्वच्छता को एक सामूहिक जिम्मेदारी के रूप में समझा जाना चाहिए। व्यापक सफ़ाई कार्यक्रम और नियम विकसित करें जो बताते हों कि कौन कब किस काम के लिए ज़िम्मेदार है? कार्यस्थलों की अनियमित सफाई से समय और प्रयास बर्बाद होता है।

• अधिक आवाजाही और अधिक उपयोग वाले क्षेत्रों की पहचान करें

अधिक आवाजाही वाले क्षेत्रों, डेस्कों और अन्य सतहों को नियमित रूप से और लगातार साफ करना और कीटाणुरहित करना स्वच्छता को नियंत्रित करने और कीटाणुओं के प्रसार को खत्म करने की कुंजी है। आमतौर पर, ठंड और फ्लू के मौसम के दौरान इन क्षेत्रों पर ध्यान बढ़ाने का सुझाव दिया जाता है।

• कुछ क्षेत्रों में भोजन करने और भोज्य सामग्री ले जाने पर प्रतिबंध लगाएं

मिथलेश कुमार

भोज्य पदार्थों के बिखराव को कम करने के लिए कुछ क्षेत्रों में भोजन और पेय पदार्थों के संबंध में स्पष्ट दिशानिर्देश रखें। बचा हुआ भोजन, टुकड़े और पैकेजिंग कीटों को आकर्षित कर सकते हैं और बैक्टीरिया के पनपने की गति को तेज कर सकते हैं।

• पीपीई और सफाई आपूर्ति का स्टॉक रखें

यदि कार्यस्थल ऐसा है जहां पर पीपीई किट का इस्तेमाल करना पड़ता है तो पीपीई और उनकी सफाई संबंधी सामग्री के लिए निर्दिष्ट भंडारण क्षेत्र स्थापित करें और सुनिश्चित करें कि उनकी आपूर्ति की निगरानी की जाती हो।

• कार्यस्थलों और सामान्य क्षेत्रों का नियमित निरीक्षण

स्वच्छता संबंधी निरीक्षण दल को नियुक्त किया जाना चाहिए ताकि वह समय–समय पर साफ सफाई के विभिन्न मापदंडों को देख सकें।

• इलेक्ट्रोस्टैटिक कीटाणुशोधन

कोविड–19 ने प्रत्येक कार्यस्थल पर प्रभावी वाणिज्यिक कार्यालय कीटाणुशोधन सेवाओं की आवश्यकता को बढ़ा दिया है। प्रत्येक कमरे, उपकरण के भागों, उत्पाद और सतह को उचित उपचार की आवश्यकता होती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हानिकारक रोगाणु नष्ट हो जाएं और पर्यावरण से बाहर निकल जाएं।

• एक पेशेवर वाणिज्यिक सफ़ाई सेवा किराए पर लें

अपने कार्यस्थल को साफ और सुरक्षित रखने के लिए आप जो सबसे अच्छी चीज कर सकते हैं, वह है पेशेवर व्यावसायिक सफाई सेवा पर भरोसा करना।

स्वच्छता की दृष्टि से मेरा प्रयास सर्वप्रथम यही होगा कि "मैं इस मानसिकता के साथ कार्यस्थल पर कार्य करूं कि यह मेरा कार्यस्थल नहीं है, मेरा घर है"। इस मानसिकता के साथ काम करने से स्वच्छता अपने आप ही आ जाएगी।

साफ–सुथरा हो आशियाना मेरा फूलों की बहार हो,

कर्मस्थल भी वैसे ही चमके, जैसे मेरा घर द्वार हो।।

हमें अपने साथी कर्मचारियों को यह समझाना है कि वे संकल्प लें कि "न मैं गंदगी करूंगा, न करने दूंगा"। यदि हम सब एक साथ मिलकर स्वच्छता की दिशा में कार्य करेंगे तो सम्पूर्ण स्वच्छता के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

आर्टीजन ग्रेड–I, बीएचईएल, एचईपी, भोपाल

मेरा सपना: भारत-2047

अरविन्द कुमार गुप्ता

सन् 2047 में भारत की आजादी के 100 साल पूरे हो जाएंगे। 2047 के भारत को देखने की कोशिश की जाने लगी है। लोग अपने–अपने दृष्टिकोण सामने रख रहे हैं। आज इसी कड़ी में सन् 2047 को लेकर हम अपना दृष्टिकोण व्यक्त करने की कोशिश करेंगे। 2047 में भारत में लैंगिक असमानता तथा जाति और धर्म के स्तर पर होने वाली लड़ाइयां कम हो जाएंगी। सभी लोग 'वसुधैव कुटुंबकम' के सिद्धांत पर भारत में रहने वाले हैं।

"आपस में हमें मिलकर, फिर एक बार दिखाना है,
2047 तक भारत को, विश्व गुरु बनाना है
सबके साथ–साथ सार्थक हर प्रयास होगा,
विश्व गुरु का खिताब भारत के ही पास होगा"

भारत को अतुल्य भारत क्यों कहा जाता है?

भारत में अनगिनत ऐसी जगह हैं जहां पर प्रकृति ने अपनी बेहतरीन छटा को खूब बिखेरा है फिर चाहे वो ऊंची चोटियों पर मौजूद मंदिर हों या फिर घाटी में बने चाय के बागान या फिर खूबसूरत हरी– भरी वादियां सभी को देखकर दिल एक बार मचल ही जाता है। भारत की इन्हीं धरोहरों पर तो आखिर कहा जाता है–अतुल्य भारत।

संपन्न बुनियादी ढांचा

2047 में भारत की सबसे आकर्षक विशेषताओं में से एक बुनियादी ढांचे का तेजी से विकास होगा। देश में सड़कों, रेलवे और हवाई अड्डों का एक अच्छी तरह से जुड़ा नेटवर्क होगा, जिससे लोगों के लिए देश–विदेश में यात्रा करना आसान हो जाएगा। सरकार ने स्मार्ट शहरों के विकास में भी भारी निवेश किया होगा, जो अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त होंगे। इन शहरों को रहने और काम करने के लिए आदर्श स्थान बनाते हुए ऊर्जा कुशल और पर्यावरण के अनुकूल बनाया जाएगा।

सुलभ हेल्थकेयर

स्वास्थ्य सेवा के मामले में, 2047 में भारत दुनिया के कुछ बेहतरीन अस्पतालों और चिकित्सा सुविधाओं का घर होगा। सरकार स्वास्थ्य सेवा को प्राथमिकता देगी और ऐसी नीतियां लागू करेगी जो इसे सभी नागरिकों के लिए सुलभ बनाए। डॉक्टर, नर्स और विशेषज्ञ सहित कई प्रशिक्षित चिकित्सा पेशेवर, मरीजों को उच्च गुणवत्ता वाली देखभाल प्रदान करने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में काम करेंगे।

बेहतर शिक्षा

शिक्षा भी एक अन्य क्षेत्र होगा जहां भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की होगी। सरकार ने स्कूलों और विश्वविद्यालयों के विकास में भारी निवेश किया होगा, और कई उच्च योग्यता रखने वाले शिक्षक और प्रोफेसर होंगे जो अगली पीढ़ी को संवारने में मदद करेंगे। छात्रों के लिए शैक्षिक संसाधनों की एक विस्तृत शृंखला उपलब्ध होगी, जैसे किताबें, कंप्यूटर और अन्य तकनीकी सहायता, जो उनकी शिक्षा को बढ़ाएगी।

महिला सशक्तिकरण

वर्तमान में महिलाएं अपने घरों से बाहर निकल रही हैं तथा विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही हैं। लेकिन आज भी कुछ क्षेत्रों में पुरुषों से काफी पीछे हैं।

महिलाओं को सशक्त करना है, मानवता में नया रंग भरना है।
जब महिला में शक्ति होगी, तभी राष्ट्र की उन्नति होगी।
सशक्त होगी नारी शक्ति तो बनेगी राष्ट्र शक्ति।

2047 में भारत के लिए मेरा दृष्टिकोण महिलाओं को अधिक शक्तिशाली व आत्मनिर्भर बनने का है।

क्योंकि किसी देश के विकास में सिर्फ पुरुषों का ही योगदान नहीं होता बल्कि महिलाओं का भी होता है।

संपन्न अर्थव्यवस्था

2047 में भारत की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक इसकी संपन्न अर्थव्यवस्था होगी। देश में विविध प्रकार के उद्योग होंगे, जिनमें विनिर्माण, कृषि और सेवाएं शामिल हैं, जो इसके तीव्र विकास में योगदान दे रहे हैं। देश में कई सफल व्यवसाय संचालित होंगे, और सरकार उन नीतियों को लागू करेगी जो उद्यमिता और नवाचार को प्रोत्साहित करती हैं।

जाति धर्म का भाव नहीं, विकसित अर्थव्यवस्था का आधार होगा,
2047 में सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार होगा

मजबूत अंतरराष्ट्रीय संबंध

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में, भारत 2047 में वैश्विक समुदाय का एक सम्मानित सदस्य होगा। भारत के कई देशों के साथ मजबूत राजनयिक संबंध होंगे और क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों में एक प्रमुख खिलाड़ी होगा। इसने जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद जैसी प्रमुख वैश्विक चुनौतियों से निपटने में भी अग्रणी भूमिका निभाई होगी। यह इन दबाव वाले मुद्दों का समाधान खोजने के लिए अन्य देशों के साथ मिलकर काम करेगा।

प्रौद्योगिकी और नवाचार को अपनाना

उदाहरण के लिए, 2047 में, भारत नवीकरणीय ऊर्जा में अग्रणी बन जाएगा, इसकी ऊर्जा जरूरतों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सौर और पवन ऊर्जा के माध्यम से पूरा किया जाएगा। सरकार उन नीतियों को लागू करेगी जो स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करती हैं और इसे समर्थन देने के लिए बुनियादी ढांचे के विकास में भारी निवेश करती हैं।

क्षमता से भरा राष्ट्र

अंत में, 2047 में भारत एक ऐसा देश होगा जो संभावनाओं से भरा होगा और 21वीं सदी में एक वैश्विक नेता बनने की क्षमता रखेगा। यह एक ऐसा राष्ट्र होगा जिसने अपने विकास के लिए प्रौद्योगिकी, नवाचार और शिक्षा को अपनाया है और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए अच्छी स्थिति में होगा।

"एकता और प्रेम के स्तम्भ पर खड़ा होगा,
इसीलिए भारत 2047 में सबसे बड़ा होगा।"

अगर हम मिलजुल कर प्रयास करें तो 2047 में भारत एक आदर्श देश होगा, जहां हर नागरिक समान होगा तथा किसी भी तरह का कोई भेदभाव नहीं होगा। अगर हम 2047 में भारत को गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, भ्रष्टाचार और अन्य सामाजिक बुराइयों से मुक्त देखना चाहते हैं तो हमें मिलजुल कर प्रयास करने होंगे।

वर्ष 2047 में भारत की आजादी के 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे। ऐसे में हमें एक लक्ष्य निर्धारित करना होगा कि 2047 तक भारत पुनः सोने की चिड़िया कहलाये। आज से आने वाले 23 वर्षों में हम भारतीयों को पूरी दुनिया से आगे निकलना होगा।

वरि. अभियंता, बीएचईएल, एचईपी, भोपाल

हिन्दी - मेरा अभिमान

गौरव अब्रोल

टुकड़ों में बिखरे भारत को
जोड़े ऐसी वो आशा है
हिन्दी है अभिमान मेरा
हिन्दी मेरी भाषा है

हिन्दी बोली भगवान की
निर्माण की निर्वाण की
पल–पल में जीवन हिन्दी में
न इसमें कभी निराशा है
हिन्दी है अभिमान मेरा
हिन्दी मेरी भाषा है

हिन्दी के हैं रूप अनेक
रंग अनेक ढंग अनेक
हिन्दी की पावन भट्टी ने
अनगिन हीरों को तराशा है
हिन्दी है अभिमान मेरा
हिन्दी मेरी भाषा है

व्यवहार में लाना हिन्दी को
कभी प्यार में लाना हिन्दी को
हिन्दी आँगन की तुलसी है
संस्कारों की परिभाषा है
हिन्दी है अभिमान मेरा
हिन्दी मेरी भाषा है

हिन्दी राह समर्पण की
मनोवृत्ति के दर्पण की
सदियों इसका सम्मान रहे
जन–जन की यही अभिलाषा है
हिन्दी है अभिमान मेरा
हिन्दी मेरी भाषा है

प्रबंधक, कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

माँ

नन्द किशोर गुप्ता

माँ शब्द नहीं ब्रह्माण्ड का सार है,
अविरल चेतना का एक मधुरतम अहसास है।

आँचल का अकाट्य आवरण में लिपटा बचपन,
रोकती शूलों की हर कर्कश चुभन,
माँ शब्द नहीं ब्रह्माण्ड का सार है।

वात्सल्यमयी आँखों में बसता गोचर दर्पण,
अपने सुखों को करती हरपल अर्पण,

'संजय' की भांति दूर कष्टों को देख लेती,
करुण आवाज में प्रस्फुटित हर कराह अक्सर सुन लेती,
माँ शब्द नहीं ब्रह्माण्ड का सार है।

दौड़ता–भागता अनवरत मूँद आँखें,
थामती हाथ जब गिरता मुंह औंधे,

त्याग व बलिदान की मूरत होती है माँ,
हर घर की अखंड दीप होती है माँ,
माँ शब्द नहीं ब्रह्माण्ड का सार है।

अशक्त लेखनी–बेजान वजूद,
कैसे मैं तेरी गुणगान करूँ,
तुझमें निहित जगत की शक्तिपुंज,
सर्वांग आह्लादित जैसे ओम की गूंज,
माँ शब्द नहीं ब्रह्माण्ड का सार है।

माँ हर चीज पाया; आशीर्वाद का हाथ जो फेरा,
पार असीम हसरत ने; क्षणिक मंजिल मोड़ दिया।

कुंठित गफलत में रूह ने फिर नाद किया,
ममता की दैविक मूरत को बेटे ने फिर ध्यान किया,
माँ शब्द नहीं ब्रह्माण्ड का सार है।।

अपर अभियंता, ग्रेड–II, एचपीबीपी, तिरुच्चि

स्वास्थ्य संबंधी आलेख

बेसिक लाइफ सपोर्ट देने से बच सकता है संकट में फंसा जीवन

डॉ. एस.पी.सिंह

बीएलएस बुनियादी चिकित्सा सहायता है, जो लोगों को अस्पताल पहुंचने से पहले या उन स्थितियों में दी जाती है, जब चिकित्सा सुविधा तुरंत उपलब्ध नहीं होती है। आपातकालीन स्थिति में घायल की सहायता करने के लिए बेसिक लाइफ सपोर्ट (बीएलएस) का ज्ञान होना जरूरी है। अगर हादसे में कोई घायल हो जाए या चलते–चलते सड़क पर बेहोश होकर गिर जाए तो किसी भी व्यक्ति का प्रथम कर्तव्य उसकी जान बचाना होगा। इसके लिए बेसिक लाइफ सपोर्ट (बीएलएस) का ज्ञान होना जरूरी है।

क्या है बेसिक लाइफ सपोर्ट?

किसी व्यक्ति के आकस्मिक कारणों से जैसे कि सड़क दुर्घटना, हार्ट अटैक, पानी में डूब जाना, बिजली का झटका लगना इत्यादि के परिणामस्वरुप हृदय की धड़कन बंद होने या अनियंत्रित होने से बेहोशी या मरणासन्न जैसी अवस्था में पहुंचने पर श्वसन प्रक्रिया व रक्त संचालन को पुनः स्थापित करने की आपातकालीन प्रक्रिया को CPR कहते हैं। CPR दो चरणों में किया जाता है:–

1– जीवन सहायता (Basic Life Support):– यह प्रक्रिया अस्पताल के बाहर दुर्घटना स्थल पर बिना किसी उपकरण के या न्यूनतम उपकरणों की सहायता से की जाती है।

2– उन्नत जीवन सहायता (Advance Life Support):– यह सहायता मरीज को अस्पताल में लाने के बाद की जाती है। इसमें विभिन्न उपकरणों व दवाइयों का उपयोग होता है और डॉक्टरों की देखरेख में उपचार किया जाता है।

बी.एल.एस.क्यों ?

हमारे शरीर को जीवित रखने के लिए तीन महत्वपूर्ण अंग सदैव कार्यशील रहते हैं

1. हृदय
2. फेफड़े
3. मस्तिष्क

उपर्युक्त तीनों अंगों को एवं शरीर के अन्य अंगों को जीवित रखने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। यदि किसी कारण से हृदय रुक जाए (Sudden Cardiac Arrest, SCA) तो ऑक्सीजन की कमी के कारण मस्तिष्क भी 3–5 मिनट में कार्य करना बंद कर देता है। ऑक्सीजन युक्त रक्त को फेफड़ों से प्राप्त करके उसे पंपिंग क्रिया द्वारा पूरे शरीर में पहुंचाने का कार्य हृदय ही करता है। यदि हृदय धड़कना बंद कर दे (Cardiac Arrest) और उसके फलस्वरुप रक्त संचालन बिल्कुल बंद हो जाए तो इस स्थिति में जल्दी से जल्दी जीवन सहायता की प्रक्रिया आरंभ न की जाए तो जीवनदायनी ऑक्सीजन की कमी होने लगती है। पहले मस्तिष्क और फिर सारे अंग मृत हो जाते है। ऐसे में यदि जल्दी से जल्दी प्रारंभिक चिकित्सा की प्रक्रिया को आरम्भ करके रोगी को अस्पताल तक पहुंचा दिया जाए तो रोगी का जीवन बचाया जा सकता है।

आइए BLS करें

सर्वप्रथम यह देखें कि आप और प्रभावित व्यक्ति सुरक्षित हैं (Scene Safety)। उदाहरण के लिए यदि दुर्घटना सड़क पर हुई है तो व्यक्ति को पहले सड़क के किनारे में सुरक्षित स्थान पर ले जा कर ही BLS की प्रक्रिया आरंभ करें। प्रभावित व्यक्ति को आवाज देकर बुलाएं "हां भाई ठीक हो" (Check for Responsiveness)। याद रहे, यह प्रक्रिया मरीज के सामने की ओर से ही करें, पीछे से नहीं। इस प्रक्रिया को पीछे से करने से पीड़ित व्यक्ति एकदम गर्दन घुमाकर जवाब देने की कोशिश करेगा जिससे उसकी गर्दन की हड्डी में लगी चोट और भी गंभीर हो सकती है। साथ ही आप इमरजेंसी मेडिकल सिस्टम (EMS) को एक्टिवेट (Activate) करें। EMS को एक्टिवेट करने के लिए भारत में "102", दिल्ली में "1099" या फिर स्थानीय निकटवर्ती अस्पताल के EMS नंबर पर डायल करें।

यदि उत्तर न मिले तब निम्नानुसार आरंभ करें:–

1. व्यक्ति को एक समतल एवं सख्त धरातल पर लिटा दें।
2. रोगी को लिटाते समय अन्य गंभीर चोटों को ध्यान में रखकर ही आगे बढ़ें।
3. इसके तुरंत बाद यह सुनिश्चित करें कि व्यक्ति सांस ले रहा है या नहीं और साथ ही साथ ग्रीवा धमनी (Carotid Artery) में धड़कन केवल 8–10 सेकंड के लिए महसूस करें। यदि यह महसूस न हो और रोगी सांस भी न ले रहा हो या रुक–रुक कर सांस ले रहा हो तो BLS की प्रक्रिया आरंभ करें।

बी एल एस के तीन महत्वपूर्ण चरण क्रमानुसार इस प्रकार किए जाते हैं:–

1. C Cardiac Compression– छाती पर दबाव द्वारा रक्त संचालन
2. A Airway– श्वास मार्ग को साफ करना, खोलना व नियंत्रित करना
3. B (Breathing)– श्वास का दान देना

1.मुख से मुख में 2.मुख से मास्क (Mask) में 3. मुख से नाक में

BLS आरंभ करने से पहले सहायता के लिए अवश्य पुकारें (फोन द्वारा या जोर से आवाज देकर)। आपातकालीन मेडिकल सिस्टम (Emergency Medical System, EMS) को एक्टिवेट (Activate) करें। फोन पर दुर्घटना का सही स्थान, रोगी की आयु अवश्य बताएं और AED भी साथ

लाने के लिए अवश्य कहें। यह सुनिश्चित करें कि EMS वाले व्यक्ति ने आपकी बात पूरी तरह समझ ली है।

1.सी पी आर करने के लिए हथेली से छाती को 1 –2 इंच दबाएं, ऐसा प्रति मिनट में 100 बार करें। सीपीआर में दबाव और कृत्रिम सांस का एक खास अनुपात होता है। 30 बार छाती पर दबाव बनाया जाता है तो दो बार कृत्रिम सांस दी जाती है। छाती पर दबाव और कृत्रिम सांस देने का अनुपात 30–02 का होना चाहिए। इस प्रक्रिया को दोहराते रहें, जब तक कि सहायता उपलब्ध न हो जाए।

2. यदि इस दौरान AED उपलब्ध हो जाए तो इसे जल्दी से जल्दी उपयोग करना चाहिए।

3. बी एल एस प्रक्रिया को तब तक जारी रखना चाहिए जब तक कि

- रोगी को अस्पताल तक न पहुंचा दिया जाए
- या उसके हृदय की धड़कन वापस न आ जाए

- या अन्य सहायता उपलब्ध न हो जाए

सीपीआर–10 है विकसित तकनीक

सीपीआर से भी नई तकनीक **सीपीआर–10** आज देश में उपलब्ध है। इस तकनीक का अविष्कार भारत में ही किया गया है। भारत के ही पद्मश्री प्राप्त डॉक्टर के.के. अग्रवाल ने इस तकनीक का आविष्कार किया है। यह तकनीक परंपरागत सीपीआर से कहीं ज्यादा प्रभावी और व्यावहारिक मानी जाती है। इस तकनीक की सबसे खास बात यह है कि इसमें मुंह से कृत्रिम सांस देने के बजाय सिर्फ उंगलियों के दबाव के माध्यम से सीपीआर दिया जाता है।

इस प्रक्रिया को दिल का दौरा पड़ने के पहले 10 मिनट में ही किया जाता है। इस प्रक्रिया में हाथ से इस तरह से छाती पर दबाव बनाया जाता है कि दिल सीने की हड्डियों और रीढ़ की हड्डी के बीच दबे। यह तब तक किया जाता है जब तक चिकित्सकीय सुविधा न मिल जाए या फिर व्यक्ति बेहोशी से बाहर न निकल जाए या फिर इलेक्ट्रिक शॉक देने वाले यंत्र तक पीड़ित पहुंच न जाए।

इसके लिए सिर्फ छाती पर दबाव बनाना है पर यह 100 दबाव प्रति मिनट की रफ्तार से करना होता है। दबाव बनाने के लिए तकनीक वही है जो सीपीआर में है। बस मुंह से मुंह को सांस नहीं देनी है। कई बार सीपीआर 10 से पहले पीड़ित की छाती पर एक फुट की दूरी से दो मुक्के मारने की भी सलाह दी जाती है। उसके बाद सीपीआर 10 शुरु किया जाता है।

प्रमुख– कान नाक गला विभाग, बीएचईएल, हीप, हरिद्वार

हम जीतेंगे

चन्दन कुमार सिंह

हार नहीं मानेंगे हम फिर से अंबर को छू लेंगे।
ठान लिया है जीतेंगे तो जीतेंगे हम जीतेंगे।।
हम जीतेंगे, हम जीतेंगे..

लक्ष्य भेदकर ही मानेंगे, नया लक्ष्य फिर ठानेंगे।।
गुणता से ही काम करेंगे, उत्पादन चमका देंगे।

साफ सफाई का ध्यान रखेंगे, नित अभियान चलाएंगे।
हम साहस की डोर पकड़कर आगे बढ़ते जाएंगे।

जब तक अपनी गाड़ी चलकर शीर्ष हिमालय ना पहुँचे,
तब तक अपनी जान लगा पूरी ताकत से खींचेंगे।

हम जीतेंगे... हम जीतेंगे..

हमसे मंजिल दूर नहीं, जो थक जाए मजदूर नहीं।
काम समय पर करने खातिर हम यूँ ही मशहूर नहीं।

हम तो वो हैं जो लोहे को पल भर में पिघलाते हैं।
मरूस्थल हो या घाटी हो बिजली घर–घर पहुँचाते हैं।

भारत की सेवा करने के लिए हमारा जन्म हुआ,
इसीलिए हम प्रण लेते हैं अपना फर्ज निभाएंगे।
हम जीतेंगे.. हम जीतेंगे...

आज शपथ लेते हैं बिन कारण छुट्टी हम ना लेंगे।
जो भी काम मिलेगा हमको पल भर में निपटा लेंगे।

समय–समय पर उत्पादों पर अनुसंधान करेंगे हम।
जो भी हमको मिलता है, उसका सम्मान करेंगे हम।

डरना आता नहीं हमें इन लहरों से तूफानों से,
जाएंगे उस पार तभी जाकर हम थोड़ा दम लेंगे।
हम जीतेंगे... हम जीतेंगे...

जिसने हमको धन दौलत दी, बंगला कार दिया जिसने।
मात–पिता की बीमारी में हर उपचार दिया जिसने।

अपनी झोली खाली कर सबकी झोली भरने वाला।
इसके जैसा और नहीं हिम्मत ताकत गढ़ने वाला।

इतना प्यारा संस्थान पूरी दुनिया में कहीं नहीं,
श्रम के बल पर हम इसको हीरे–मोती से जड़ देंगे।
हम जीतेंगे... हम जीतेंगे....

आर्टीजन ग्रेड 1, बीएचईएल, भोपाल

आलेख

तेलंगाना के भूले-बिसरे स्वतंत्रता सेनानी

मंगल स्वरूप त्रिवेदी

रामजी गोंड:

रामजी गोंड एक गोंड प्रमुख थे जिन्होंने तेलंगाना के आदिलाबाद जिले में आदिवासी क्षेत्रों पर शासन किया था। वे उन महान आदिवासी नेताओं में से एक थे, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ छापामार युद्ध लड़ा था, जो गोंड साम्राज्य पर कब्जा करना चाहते थे। जिस स्थान पर अंग्रेजों से लड़ते हुए वे शहीद हुए थे वह स्थान आज भी रामजी चेट्टू के नाम से जाना जाता है।

मुल्ला अब्दुल कय्यूम:

अक्टूबर 1888 में, हैदराबाद में, प्रभावशाली लोगों की एक छोटी–सी कमेटी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रचार करने के लिए एक बैठक आयोजित करने हेतु हाथ से पर्चे और घोषणापत्र बांटे। अघोरनाथ चट्टोपाध्याय हैदराबाद में राष्ट्रवाद के प्रवर्तक थे। कांग्रेस ने हैदराबाद में शिक्षित वर्गों के एक बड़े तबके को अपनी ओर आकर्षित किया। हैदराबाद के मुल्ला अब्दुल कय्यूम कांग्रेस के बड़े समर्थक बने। उन्होंने कांग्रेस की बैठकों में भाग लिया और मुसलमानों से इसमें सक्रिय रूप से भाग लेने की अपील की। उन्होंने कुलीनों का विरोध किया और निज़ाम राज्य में उन्हें दिए गए विशेष अनुग्रहों का विरोध किया। उन्होने अंजुमन–ए–मारेफ के आयोजन किए जिनका उद्देश्य लोगों के सामाजिक, बौद्धिक और आर्थिक जीवन को विकसित करना था।

मदापति हनुमंत राव:

मदापति हनुमंत राव का जन्म 1885 में हुआ था, इन्होंने 1924 में, पुस्तकालयों और वाचनालयों की स्थापना के लिए आंध्रजन संगम का गठन किया तथा छात्रों और विद्वानों को प्रोत्साहित किया। तेलुगु साहित्य को बढ़ावा देने के लिए तेलुगु पांडुलिपियों का संग्रह और प्रसार किया। पुस्तकालय स्थापित करने के लिए छोटी–छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित कीं और सभाएं कीं। उन्होंने 4,000 से अधिक स्कूल भी स्थापित किए, जिनमें से कई सरकार के विरोध के कारण बंद करने पड़े।

कोमराम भीम:

कोमराम भीम का जन्म कोमराम भीम जिले के संकेपल्ली गांव में हुआ था। जब वे पंद्रह वर्ष के थे, तब वन विभाग के हमले में उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। फिर भीम का परिवार परिकेरीमेरी मंडल के शारदापुर गांव में चला गया जहां झूम की खेती कर वह सामान्य जीवन व्यतीत कर रहा था। सिद्धिकी नाम के एक जागीरदार, जो निजाम का मुखबिर था, ने भीम की भूमि पर कब्जा कर लिया। भीम ने गुस्से में सिद्दीकी की हत्या कर दी और पुलिस से बचकर छिपने के लिए वे असम भाग गए। उसके बाद, उन्होंने पांच साल तक कॉफी और चाय बागानों में मजदूर के रूप में काम किया। वहां उन्हें श्रमिक आंदोलनों का अनुभव हुआ। उन्होंने पढ़ना–लिखना सीखा। उन्होंने अपने करीबी दोस्त कोमाराम सूरू जो उनके गुप्त मुखबिर थे, के माध्यम से अपने स्थान की स्थिति को समझा। वे विशाखापट्टनम में अल्लूरी सीता रामा राजू और बिरसा मुंडा द्वारा निजाम के शासन के खिलाफ विद्रोह आंदोलन और स्वतंत्रता की लड़ाई से प्रेरित थे। उस समय तक, निजाम की सरकार मवेशियों को चराने एवं खाना पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने के लिए 'बम्ब्रम' और 'दुपापेट्टी' के नाम से कर वसूल करती थी। कोमराम भीम के संदेश जल, जंगल, जमीन (जल, वन, भूमि) से आदिवासी प्रभावित और प्रेरित हुए। यह नारा भीम ने आदिवासी स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए लड़ने और करों का विरोध करने के लिए दिया था।

सर्वप्रथम आदिलाबाद में करीब 12 गांव अपनी जमीन के लिए लड़ने को तैयार थे। भीम ने गोंडू और कोया के युवकों के साथ एक गुरिल्ला सेना बनाई। उन्होंने आदिवासियों को लड़ने के लिए इकट्ठा किया और हथियारों से प्रशिक्षित किया। जोड़ेघाट वह केंद्रीय स्थान बन गया जहां से उन्होंने छापामार लड़ाई शुरु की थी। इस लड़ाई से हैरान निजाम ने आदिवासियों पर हमला करने की कोशिश की। अंततः, पूर्णिमा के दिन, जोड़ेघाटफोर्स में निजाम की सेना के खिलाफ लड़ाई में कोमराम भीम की मृत्यु हो गई।

रवि नारायण रेड्डी:

रवि नारायण रेड्डी एक प्रतिष्ठित नेता थे जिन्होंने 1936 में निज़ाम और प्रस्तावित संवैधानिक सुधारों के खिलाफ एक आंदोलन में भाग लिया था। उन्होंने आंध्र महासभा को वाम राजनीति की ओर मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और तेलंगाना किसान संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और तेलंगाना स्वतंत्रता संग्राम की हैदराबाद शाखा के संस्थापक सदस्य थे। उन्होंने निज़ाम की सरकार को हटाने के लिए किसानों के संघर्ष को लोकतांत्रिक आंदोलन से जोड़ा।

1946–1951 के दौरान, तेलंगाना में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा किसान गुरिल्ला सशस्त्र संघर्ष शुरू हुआ। रवि नारायण रेड्डी के नेतृत्व में, आंध्र महासभा ने खुद को कम्युनिस्ट पार्टी के साथ जोड़ लिया था, जिसकी जड़ें तेलंगाना के ग्रामीण क्षेत्रों में फैली थी। इस बीच, इत्तेहाद–उल–मुसलमीन ने कम्युनिस्ट आंदोलन का विरोध करने का फैसला किया। रजाकार ने राज्य में कासिम रजवी के नेतृत्व में सांप्रदायिक हिंसा की शुरुआत की। निजाम ने क्रूरता के साथ हजारों तेलंगाना स्वतंत्रता सेनानियों को मार डाला।

मखदूम मोहिनुद्दीन:

मखदूम मोहिनुद्दीन हैदराबाद शहर के बुद्धिजीवी समूहों के शुरुआती कट्टरपंथियों में से एक थे। वे उस्मानिया विश्वविद्यालय के शिक्षकों और छात्रों द्वारा गठित कॉमरेड एसोसिएशन के सदस्य थे। वे हैदराबाद में सीपीआई के सचिव भी बने, हैदराबाद नगरपालिका और प्रागाटूल में ट्रेड यूनियनों के साथ मिलकर गांव में संघर्षों का समन्वय किया।

कालोजी नारायण रावः

कालोजी का जन्म भारत के आंध्र प्रदेश के वारंगल के पास मदिकोंडा गांव में हुआ था। अपने छात्र जीवन के दौरान और बाद में, वह उस समय के लोकप्रिय आंदोलनों जैसे आर्य समाज आंदोलन, विशेष रूप से नागरिक अधिकारों से जुड़े विषय, पुस्तकालय आंदोलन और आंध्र महासभा आंदोलन से बहुत प्रभावित थे। उनके बड़े भाई कालोजी रामेश्वर राव, प्रख्यात उर्दू कवि, के भ्रातृ स्नेह और देखभाल ने भी कालोजी के व्यक्तित्व को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 1934 में आर्य समाज से जुड़े रहते हुए आंध्र महासभा के गठन के बाद से ही नियमित रूप से इसकी गतिविधियों में भाग लिया। उन्होंने तत्कालीन हैदराबाद राज्य के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और निज़ाम शासन के अधीन कारावास में रहे। वह हमारे देश के उन चुनिंदा स्वतंत्रता सेनानियों में से एक हैं जिन्हें भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले सामंती शासकों और विदेशी शासकों ने कैद कर लिया था।

कालोजी को प्रजा कवि के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है लोगों का कवि। उन्होंने अपनी पहली कविता 1931 में अपनी किशोरावस्था में ही लिखी थी, जिसमें उन्होंने भगत सिंह की फांसी पर भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। वे बहुत जल्द एक प्रमुख लेखक और उत्साही पाठक बन गए। राजनीतिक रूप से, वह 1958–60 के दौरान आंध्र प्रदेश विधान परिषद के सदस्य थे, और आंध्र सारस्वत परिषद के संस्थापक सदस्य और आंध्र प्रदेश साहित्य अकादमी के सदस्य थे। वह तेलंगाना रचाईतला संघम के अध्यक्ष भी थे और 1957–61 की अवधि के दौरान शब्दावली समिति के सदस्य रहे।

उन्हें 1992 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। तेलंगाना सरकार ने 9 सितंबर को कालोजी के जन्मदिन को तेलंगाना भाषा दिवस के रूप में मनाना प्रारंभ किया। कालोजी ने मरने के बाद अपना शरीर काकतिया मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया, जिसने हजारों लोगों को निस्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित किया।

कोंडा लक्ष्मण बापूजीः

कोंडा लक्ष्मण बापूजी जाति आधारित ग्रामीण भेदभाव के खिलाफ एक नेता के रूप में लोकप्रिय होने लगे। निजामाबाद के अरमूर तालुका में वेट्टी शोषण ने उनका ध्यान पेशे/जाति–आधारित श्रम/सामग्री निष्कर्षण की वास्तविकता की ओर आकर्षित किया था। बापूजी निज़ाम के शासन को उखाड़ फेंकने के लिए सशस्त्र कार्रवाई चाहते थे और निज़ाम को मारने के लिए बम फेंकने की कला का लोगों को प्रशिक्षण देते थे। वे एक पेशेवर वकील थे, उन्होंने विष्नुरु राम चंद्र रेड्डी के खिलाफ विभिन्न मामलों के पीड़ितों का बचाव किया। वे कम्युनिस्टों के साथ इस हद तक जुड़े रहे कि वे जनता के अधिकारों के लिए लोकतांत्रिक तरीके से लड़ते रहे। उनका जीवन लोकतांत्रिक सह–अस्तित्व के लिए विविध राजनीतिक पहलुओं के एकरूपता का संदेश है।

दशरधि कृष्णमचार्युलुः

दशरधि कृष्णमचार्युलु का जन्म वारंगल जिले (अब वारंगल जिले में मारिपेडा क्षेत्र) के मनुकोटा तालुका के चिन्नागुदुरु में एक मध्यम वर्गीय वैष्णव परिवार में हुआ था। उन्होंने खम्मम गवर्नमेंट हाई स्कूल से मैट्रिक किया लेकिन हैदराबाद राज्य के निरंकुश निजाम मुस्लिम शासन के खिलाफ आंदोलन में शामिल होने के लिए उच्च शिक्षा का विचार छोड़ दिया।

दशरधि ने वामपंथी आंध्र महासभा आंदोलन में एक स्वयंसेवक के रूप में, जनता को जागरूक करने के लिए तेलंगाना में एक गांव से दूसरे गांव की यात्रा की। महात्मा गांधी और कंदुकुरी वीरसलिंगम ने उन्हें प्रभावित किया। हालांकि, वे वामपंथ की राजनीति में शामिल हो गए, क्योंकि उनके अधिकांश मित्र कम्युनिस्ट क्रांतिकारी विचारधारा के थे। उन्होंने बहुत छोटी उम्र में ही कविता लिखना शुरू कर दिया था। उनकी कविता क्रांतिकारी थी और कार्ल मार्क्स की साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित थे। दलित, गरीब, शोषित, श्रमिक कविता में उनके विषय थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि मुस्लिम शासन के अंतर्गत पूंजीवादी, सामंतवादी और निरंकुश समाज ही लोकतंत्र और समानता का मार्ग प्रशस्त करेगा।

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, कई स्वतंत्र राज्य और रियासतें नवगठित भारतीय संघ में शामिल हो गईं। हालांकि, हैदराबाद तत्कालीन शासक मीर उस्मान अली खान के निरंकुश शासन के तहत राज्य संघ में शामिल नहीं हुआ था। मीर उस्मान अली खान मजलिस इत्तेहादुल मुस्लिमीन पार्टी द्वारा किए गए अत्याचारों को नियंत्रित करने में विफल रहे। इसी समय, स्वामी राम आनंदतीर्था के नेतृत्व में राज्य कांग्रेस पार्टी ने निरंकुश मुस्लिम शासन के खिलाफ कार्रवाई का आह्वान किया। इस आह्वान का जवाब देकर और सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा) में भाग लेकर हजारों लोग जेल गए।

1948 में, भारतीय संघ ने एक पुलिस कार्रवाई में हैदराबाद राज्य पर अधिकार कर लिया और निरंकुश निजाम शासन और रजाकारों तथा मजलिस इत्तेहादुल मुस्लिमीन पार्टी द्वारा किए गए अत्याचारों को समाप्त कर दिया। बाद में, हैदराबाद राज्य का तेलंगाना हिस्सा आंध्र राज्य के साथ जुड़ गया और अंततः आंध्रप्रदेश राज्य का गठन हुआ।

डोड्डी कोमुरैय्याः

आंध्र महासभा ने लेवी संग्रह का विरोध करने वाले विष्नुरु रामचंद्र रेड्डी के कुकृत्यों के बारे में सरकार को याचिका दायर की। अधिकारी जब पूछताछ के लिए पहुंचे तो एक तरह का हंगामा मच गया। रामचंद्र रेड्डी ने हिंसक होने की कोशिश की ताकि कोई जांच न हो और उनके द्वारा अनाज लेवी का दुरुपयोग अधिकारियों के संज्ञान में न आए।

डोड्डी मल्लैया के नेतृत्व में आंध्र महासभा के कार्यकर्ता गाड़ी से गुजर रहे थे और विष्नुरु रामचंद्र रेड्डी के साथी मिस्कीन अली ने दीवार के एक छेद से यह मानकर गोली मारी कि वे गाड़ी पर हमला कर रहे हैं। इससे डोड्डी कोमुरैय्या को गोली लगी, जिसकी तत्काल मृत्यु हो गई।

यह घटना 4 जुलाई, 1946 को हुई थी और इसे सशस्त्र संघर्ष की शुरुआत माना जाता है। इस घटना ने प्रसिद्ध तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष को जन्म दिया। गांव–गांव में संघम स्थापित किए गए और डोड्डी कोमुरैय्या के गीत गाते हुए जुलूस निकाले गए। देशमुखों (दोराओं) और निज़ाम ने आंदोलन को हिंसक रूप से दबाने की कोशिश की। इसने संघों को सशस्त्र लड़ाकों के दस्ते बनाने के लिए मजबूर किया। उन्होंने देशमुखों को भगाना शुरू कर दिया और ग्राम पंचायत के माध्यम से अपना शासन

स्थापित किया।

नल्ला नरसिम्हुलु:

नल्ला नरसिम्हुलु ने ज्यादातर वेट्टी कामगारों की भर्ती कर एक दस्ता तैयार कर जनआंदोलन खड़ा किया। दस्तों के मार्गदर्शन में, संघों ने समानांतर सरकारें और ''पीपुल्स कोर्ट'' की स्थापना की। इस तरह तत्कालीन नलगोंडा और वारंगल जिले जो निजाम के शासन से टूट रहे थे उनके स्थान पर संघम शासन स्थापित किया।

जहां भी उन्होंने अपनी शक्ति स्थापित की, वेट्टी को समाप्त कर दिया गया, किराएदारों की बेदखली रोक दी गई, लगान कम कर दिया गया, श्रमिकों की मजदूरी में वृद्धि हुई और जमींदारों की अतिरिक्त भूमि भूमिहीनों को पुनर्वितरित कर दी गई। लोगों ने गांव के कर्मचारियों के रिकॉर्ड जला दिए और जमींदारों द्वारा जमाखोरी कर व्यापारियों को भेजे जा रहे अनाज को जब्त कर लिया।

अरुतला रामचंद्र रेड्डी:

अरुतला रामचंद्र रेड्डी ने अपने छात्र जीवन के दौरान ही अपना क्रांतिकारी रवैया दिखा दिया था। उस्मानिया विश्वविद्यालय में अपने छात्र जीवन के दौरान, वह आंध्र महासभा, राज्य कांग्रेस और आर्य समाज की राजनीतिक गतिविधियों में भाग लिया करते थे।

जब निजाम सरकार ने जबरन कर वसूल किया और दोराओं ने फसलों को जब्त कर लिया, तो उन्होंने इस तरह के प्रयासों का विरोध किया। उन्होंने चावल मिलों पर हमले किए, भुवनागिरी, मुंदराई, जनगांव में अनाज लूटा और जरूरतमंदों को खाद्यान्न वितरित किया। इस प्रकार उन्होंने कादिवेंडी और पालाकुर्ती के आसपास संघों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रबंधक (राजभाषा), बीएचईएल, टीपी, झाँसी

माँ गंगा तुझे प्रणाम

प्रतिभा शाही

हे गंगा तुझे प्रणाम, माँ गंगा तुझे प्रणाम,
भगीरथी के आवाहन पर स्वर्ग छोड़ कर तू आई

प्रचंड प्रवाह संग शिव की जटा में समाई,
गोमुख से उन्मुक्त होकर, इस धरा को पावन
किया है

अपने पवित्र जल से मानवता का उद्धार किया है,
तेरी आराधना भी खुद करते हैं भगवान

हे गंगा तुझे प्रणाम, हे माँ गंगा तुझे प्रणाम,

तेरे स्मरण मात्र से तन मन की शुद्धि हो जाती है,
अंजली में भर कर जल तेरा सौगंधें खाई जाती हैं

तेरे पवित्र जल से पूजन –प्रतिष्ठान पावन हो जाते हैं,
पापमुक्त हो जाते हैं जो सच्चे मन से डुबकी लगाते हैं

तेरी हर बूँद है अमृत के समान, हे गंगा तुझे प्रणाम,
हे माँ गंगा तुझे प्रणाम

माँ समान आस्था है तुझ में, वात्सल्य की तुझसे आस,
सबकी मन्नतें करती हो पूरी, तेरे दर से न गया कोई निराश

बदले में क्या मिला तुझे, प्रदूषण का उपहार,
जल संकट से जूझ कर हम कर रहे पश्चाताप

हमारी त्रुटियों को माफ कर देना हमें अभय वरदान,
हे गंगा तुझे प्रणाम, हे माँ गंगा तुझे प्रणाम

चट्टानों, पर्वतों से टकरा कर तूने मार्ग अपना बनाया है,
कठिनाइयों में भी आगे बढ़ने का पाठ हमें पढाया है

ध्यान, शांति और योग के लिए उत्तम तेरा किनारा है,
अंत में भस्म हो कर, तुझमें ही बह जाना है

तेरे तट पर बैठ कर, ऋषियों ने रचे हैं वेद–पुराण,
हे गंगा तुझे प्रणाम, हे माँ गंगा तुझे प्रणाम।।

वरि. प्रबंधक, बीएचईएल, ईडीएन, बेंगलूरु

सिद्धि सदा श्रम से मिलती

नवल किशोर सिंह

सिद्धि सदा श्रम से मिलती
इसको नित है जो अपनाता।
संकल्पों की लिए लकुटिया
चले वही है मंजिल पाता।

काँटों से घबरा कर यारों
छोड़ नहीं देते हैं चलना।
साहस संबल की समिधा से
काँटों को पड़ता है दलना।
उठो, चलो, पग धरो पंथ पर, लिए ठान तुम अपने मन में
अटल मील का पत्थर देखो, दिशा–बोध हरदम करवाता।

सूरज को भी डँस जाता जब, राहु–केतु बनकर अविचारी।
रात अमावस की छाई है, लेकर कलिमल की अँधियारी।
सूझ रहा जब नहीं पथिक को, चलना कैसे? किस ओर सखे,
जीवट वाला दीपक तब भी, अँधियारे को दूर भगाता।
पवन–झकोरे भी आते हैं, मद्धिम बाती को हरने को।
सत्य–सदाशय की आभा को, उत्पीड़न से कम करने को।
विनय भाव से आनत होकर, झंझा में भी जलता दीपक,
समझ–बूझ कर इन घातों को, अडिग खड़ा देखो रह जाता।
चकाचौंध फैली है ऐसी, पथ का होता है भान नहीं।
सच्चे पथ पर कदम बढ़ाना, लगता बिल्कुल आसान नहीं।
साँसों को सँभाल बटोही, पूछो अपने अंतर्मन से,
सहज ज्ञान की आभा लेकर, चलने वाला कब पछताता?

अपर अभियंता ग्रेड–I, एचपीबीपी, बीएचईएल, तिरुचि

कांगड़ा किले की यात्रा

असद अली

कांगड़ा का इतिहास

मैंने भारत के सबसे पुराने प्रलेखित "कांगड़ा" किले और इसके अभेद्य होने के बारे में कई बार पढ़ा था, लेकिन हाल ही में हिमाचल प्रदेश के मैक्लोडगंज उपनगर की यात्रा के दौरान ही मैं इसे देख सका। हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला से लगभग 20 कि.मी. दूर, एक खड़ी पहाड़ी पर स्थित, कांगड़ा किला 'बाणगंगा' और 'माझी' नदियों के बीच भूमि की एक संकीर्ण पट्टी पर स्थित है। इसकी अनूठी अवस्थिति ने इसे कई रणनीतिक लाभ दिए क्योंकि पहाड़ की खड़ी चट्टानों ने किले को दुर्गम बना दिया था और शहर के भूमि पक्ष से ही किले के अंदर जाने का एकमात्र रास्ता बचता था।

"कोट" (किला), जिसे पहले "नगरकोट" अथवा "शहर का किला" अथवा "कोट कांगड़ा" कहा जाता था, पर कटोच राजवंश का शासन था। ऐसा माना जाता है कि महाराजा "सुशर्मा चंद्र", जो महाभारत में कौरवों के लिए लड़े थे, ने युद्ध के बाद इस किले का निर्माण कराया था। इस स्थान को कांगड़ा क्यों कहा जाता है, इसके बारे में बहुत दिलचस्प कहानियाँ हैं। किंवदंती के अनुसार, इस स्थान का मूल नाम "कानगढ़" था ('कान' का अर्थ है कान और 'गढ़' का अर्थ है किला) क्योंकि यह राक्षस "जलंधर" के कान पर बनाया गया था, जिसका भगवान शिव ने वध करके पहाड़ों के समूह में दफन कर दिया था।

विभिन्न हमले

कांगड़ा की समृद्धि और पहाड़ियों पर कांगड़ा के रणनीतिक नियंत्रण के कारण इस किले पर इतिहास में 52 बार हमला किया गया। 470 ईस्वी में कश्मीर के "राजा श्रेष्ठ", 1009 ईस्वी में "गजनी के महमूद" और उसके बाद "तैमूर" ने इस पर हमला किया। 14वीं सदी में "फ़िरोज़ शाह तुगलक" और 16वीं सदी में मुग़ल शासक "अकबर" ने भी इस पर हमला किया।

हालांकि आक्रमण करने वाले अधिकांश शासक इस पर विजय पाने में असफल रहे। केवल मुग़ल शासक "जहाँगीर" ही 1620 में लंबी घेराबंदी के बाद इस किले पर विजय पाने में सफल हुआ। उसने 1622 में नूरजहाँ के साथ किले का दौरा किया और एक महल बनाने का आदेश दिया, जो हालांकि अधूरा ही छोड़ दिया गया था।

1783 में, सिखों ने किले पर कब्जा कर लिया लेकिन 1786 में, महाराजा "संसार चंद" उनसे किले को वापस छीनने में सफल रहे। इस प्रकार, एक बार फिर यह कटोच शासकों के हाथों में आ गया। 1828 में, महाराजा 'संसार चंद' की मृत्यु के बाद, किला महाराजा 'रणजीत सिंह' के हाथों में आया और 1846 में एंग्लो–सिख युद्ध के बाद इसे अंग्रेजों ने अपने कब्जे में ले लिया। 1905 में, यह किला, जिसने कई राजाओं के लगातार हमलों का सामना किया था, अंततः प्रकृति की भेंट चढ़ गया जब इसकी अधिकांश इमारतें भूकंप में नष्ट हो गईं।

किले के अंदर

जैसे ही मैंने किले के अंदर लकड़ी के "रणजीत गेट" से प्रवेश किया, गाइड ने मुझे एक दिलचस्प किंवदंती सुनाई। उन्होंने कहा, आगंतुकों को अपने पैर से प्रवेश करना चाहिए, सिर से नहीं, क्योंकि यदि कोई दुश्मन अंदर छिपा हो, तो सिर के बजाय अपना पैर खो देना ही बुद्धिमानी होगी।

किले में 23 बुर्ज और सात दरवाजे हैं। 'जहांगीरी' दरवाजे पर एक शिलालेख है जो अकबर के बेटे जहाँगीर की विजय का विवरण देता है। एक बार जब आप दरवाजे में प्रवेश करते हैं, तो आप खड़ी सीढ़ियाँ चढ़ते हैं और "दर्शनी" दरवाजे तक पहुँचते हैं। यह कटोच शासकों के महल क्षेत्र की ओर जाता है। "दर्शनी" दरवाजा देवी गंगा और यमुना की दो मूर्तियों से घिरा हुआ है, जो अब क्षतिग्रस्त हो गई हैं। यह एक आंगन की ओर जाता है जहां "लक्ष्मी–नारायण" और "अंबिका देवी" के उत्कृष्ट मंदिर स्थापित हैं। कटोच अभी भी मंदिर में अपनी कुल देवी "अंबिका देवी" की पूजा करते हैं। इन पर खूबसूरती से नक्काशी की गई है और कोई भी कल्पना कर सकता है कि भूकंप से पहले महल का बाकी हिस्सा कितना शानदार रहा होगा। यद्यपि किले का प्राचीन "जैन मंदिर" भूकंप में नष्ट हो गया था, परन्तु तीर्थंकर आदिनाथ की मूर्ति चमत्कारिक रूप से बच गई और एक छोटे से कमरे में रखी गई है। यह एक लोकप्रिय तीर्थ स्थान है।

जैसे ही मैं किले के सबसे ऊंचे स्थान, "महल" क्षेत्र में पहुँचा, मैंने अपनी पीठ खंडहरों की ओर करके नीचे नदी को देखते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं और प्रकृति के नियंत्रण में आने से पहले किले की भव्यता की कल्पना की। उसके पश्चात् मैं पीछे मुड़ा और प्राचीन मूक चट्टानों को ताकने लगा – जो अतीत की सभी घटनाओं की एकमात्र साक्षी हैं।

प्रबंधक, बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

आलेख

‘डिजिटल इंडिया’ में साइबर क्राइम और सोशल मीडिया की भूमिका

अतुल मालवीय

देश भर में साइबर अपराधों के मामलों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। वर्ष 2019 के आंकड़ों की तुलना में तेलंगाना में साइबर अपराधों की संख्या दोगुनी हो गई है। कर्नाटक, यूपी, महाराष्ट्र, बिहार, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में साइबर मामलों की संख्या सबसे अधिक है।

डिजिटल दुनिया की ओर हम जिस गति से बढ़ रहे हैं, ठीक उतनी ही तेज़ी से साइबर अपराध की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। जिस गति से तकनीक ने उन्नति की है, उसी गति से मनुष्य की इंटरनेट पर निर्भरता भी बढ़ी है। एक ही जगह पर बैठकर इंटरनेट के ज़रिए मनुष्य की पहुंच, विश्व के हर कोने तक आसान हुई है। आज के समय में हर वो चीज़ जिसके विषय में इंसान सोच सकता है, उस तक उसकी पहुंच इंटरनेट के माध्यम से हो सकती है, जैसे कि सोशल नेटवर्किंग, ऑनलाइन शॉपिंग, डेटा स्टोर करना, गेमिंग, ऑनलाइन स्टडी, ऑनलाइन जॉब इत्यादि। आज के समय में इंटरनेट का उपयोग लगभग हर क्षेत्र में किया जाता है। इंटरनेट के विकास और इसके संबंधित लाभों के साथ साइबर अपराधों की अवधारणा भी विकसित हुई है। वर्तमान में भारत की बड़ी आबादी सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करती है। भारत में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के प्रति लोगों में जानकारी का अभाव है। इसके साथ ही अधिकतर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के सर्वर विदेश में हैं, जिससे भारत में साइबर अपराध घटित होने की स्थिति में इनकी जड़ तक पहुँच पाना कठिन होता है। इस आलेख में साइबर अपराध, उसके प्रकार, बचाव के उपाय और सरकार के द्वारा किए गए प्रावधानों पर विमर्श किया जाएगा। इसके साथ ही साइबर अपराध में सोशल नेटवर्किंग साइट्स की भूमिका का भी मूल्यांकन किया जाएगा।

साइबर अपराध क्या है?

1. साइबर अपराध विभिन्न रूपों में किए जाते हैं। कुछ साल पहले, इंटरनेट के माध्यम से होने वाले अपराधों के बारे में जागरूकता का अभाव था। साइबर अपराधों के मामलों में भारत भी उन देशों से पीछे नहीं है, जहां साइबर अपराधों की घटनाओं की दर भी दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। साइबर अपराध के मामलों में एक साइबर अपराधी, किसी उपकरण का उपयोग, उपयोगकर्ता की व्यक्तिगत जानकारी, गोपनीय व्यावसायिक जानकारी, सरकारी जानकारी या किसी डिवाइस को अक्षम करने के लिए कर सकता है। उपर्युक्त सूचनाओं को ऑनलाइन बेचना या खरीदना भी एक साइबर अपराध है।

2. इसमें कोई संशय नहीं है कि यह एक आपराधिक गतिविधि है, जिसे कंप्यूटर और इंटरनेट के उपयोग द्वारा अंजाम दिया जाता है। साइबर अपराध, जिसे ‘इलेक्ट्रॉनिक अपराध’ के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसा अपराध है जिसमें किसी भी अपराध को करने के लिए कंप्यूटर, नेटवर्क डिवाइस या नेटवर्क का उपयोग, एक वस्तु या उपकरण के रूप में किया जाता है। जहाँ इनके (कंप्यूटर, नेटवर्क डिवाइस या नेटवर्क) ज़रिए ऐसे अपराधों को अंजाम दिया जाता है वहीं इन्हें लक्ष्य बनाते हुए इनके विरुद्ध अपराध भी किया जाता है।

3. ऐसे अपराध में साइबर जबरन वसूली, पहचान की चोरी, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, कंप्यूटर से व्यक्तिगत डेटा हैक करना, फ़िशिंग, अवैध डाउनलोडिंग, साइबर स्टॉकिंग, वायरस प्रसार, सहित कई प्रकार की गतिविधियाँ शामिल हैं। ग़ौरतलब है कि सॉफ्टवेयर चोरी भी साइबर अपराध का ही एक रूप है, जिसमें यह जरूरी नहीं है कि साइबर अपराधी, ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से ही अपराध करे।

साइबर अपराध की श्रेणियाँ

साइबर अपराध के अंतर्गत 3 प्रमुख श्रेणियाँ आती हैं जिसमें व्यक्ति विशेष, संपत्ति और सरकार के विरुद्ध अपराध शामिल हैं।

3. व्यक्ति विशेष के विरुद्ध साइबर अपराध– ऐसे अपराध, यद्यपि ऑनलाइन होते हैं, परंतु वे वास्तविक लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। इनमें से कुछ अपराधों में साइबर उत्पीड़न और साइबर स्टॉकिंग, चाइल्ड पोर्नोग्राफी का वितरण, विभिन्न प्रकार के स्पूफिंग, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, मानव तस्करी, पहचान की चोरी और ऑनलाइन बदनाम किया जाना शामिल है। साइबर अपराध की इस श्रेणी में किसी व्यक्ति या समूह के खिलाफ दुर्भावनापूर्ण या अवैध जानकारी को ऑनलाइन लीक कर दिया जाता है।

4. संपत्ति विशेष के विरुद्ध साइबर अपराध– कुछ ऑनलाइन अपराध संपत्ति के खिलाफ होते हैं, जैसे कि कंप्यूटर या सर्वर के खिलाफ या उसे ज़रिया बनाकर किए जाते हैं। इन अपराधों में हैकिंग, वायरस ट्रांसमिशन, साइबर और टाइपो स्क्वाटिंग, कॉपीराइट उल्लंघन, आईपीआर उल्लंघन आदि शामिल हैं। उदाहरण के लिए अगर कोई आपको एक वेब–लिंक भेजे, जिस पर क्लिक करने के पश्चात एक वेब पेज खुले जहाँ आपसे आपके बैंक खाते/गोपनीय दस्तावेज़ संबंधित सारी जानकारी मांगी जाए और ऐसा कहा जाए कि यह जानकारी रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया या सरकार की ओर से मांगी जा रही है, आप वहाँ सारी जानकारी दे दें और फिर उस जानकारी के इस्तेमाल से आपके दस्तावेज़ एवं बैंक खाते के साथ छेड़छाड़ की जाए, तो यह संपत्ति के विरूद्ध साइबर हमला कहा जाएगा।

5. सरकार विशेष के विरुद्ध साइबर अपराधः यह सबसे गंभीर साइबर अपराध माना जाता है। सरकार के खिलाफ किए गए ऐसे अपराध को साइबर आतंकवाद के रूप में भी जाना जाता है। सरकारी साइबर अपराध में सरकारी वेबसाइट या सैन्य वेबसाइट को हैक किया जाना शामिल है। ग़ौरतलब है कि जब सरकार के खिलाफ एक साइबर अपराध किया जाता है, तो इसे उस राष्ट्र की संप्रभुता पर हमला और युद्ध की कार्रवाई माना जाता है। ऐसे अपराधी आमतौर पर आतंकवादी या अन्य शत्रु देशों की सरकारें होती हैं। इस प्रकार के साइबर अपराधों पर नियंत्रण के लिए प्रत्येक देश की सरकार द्वारा कठोर साइबर कानून

बनाए गए हैं।

सोशल मीडिया की भूमिका

1. बड़े पैमाने पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने वाली जनसंख्या साइबर अपराध के खतरों से अनजान है। विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइट्स के सर्वर अन्य देशों में केंद्रित हैं, जिससे यह डर रहता है कि कहीं ये देश लोगों की व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग न करें।

2. विभिन्न सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर लोग अपनी व्यक्तिगत जानकारियाँ साझा करते हैं, जिससे हैकर्स इन सोशल नेटवर्किंग अकाउंट्स को आसानी से हैक कर लेते हैं और फिर प्राप्त सूचना का दुरुपयोग करते हैं।

3. लोगों को सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हैकर्स ऑनलाइन ठगी का शिकार बनाते हैं।

4. सुरक्षा एजेंसियों द्वारा यह भी पता लगाया गया है कि ऑनलाइन मुद्रा स्थानांतरित करने वाले विभिन्न ऐप के माध्यम से आतंकवादियों और देशविरोधी तत्वों को फंडिंग की जाती है।

5. साइबर अपराधी विभिन्न ऑनलाइन गेम्स के माध्यम से बच्चों को अपराध करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

साइबर अपराधों से निपटने की दिशा में सरकार के प्रयास

- भारत में 'सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000' पारित किया गया जिसके प्रावधानों के साथ–साथ भारतीय दंड संहिता के प्रावधान सम्मिलित रूप से साइबर अपराधों से निपटने के लिए पर्याप्त हैं।
- सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धाराएँ 43, 43ए, 66, 66बी, 66सी, 66डी, 66ई, 66एफ, 67, 67ए, 67बी, 70, 72, 72ए और 74 हैकिंग और साइबर अपराधों से संबंधित हैं।
- सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति, 2013' जारी की गई जिसके तहत सरकार ने अति–संवेदनशील सूचनाओं के संरक्षण के लिए 'राष्ट्रीय अतिसंवेदनशील सूचना अवसंरचना संरक्षण केंद्र (National Critical Information Infrastructure Protection Centre-NCIIPC) का गठन किया।
- इसके अंतर्गत 2 वर्ष से लेकर उम्रकैद तथा दंड अथवा जुर्माने का भी प्रावधान है।
- विभिन्न स्तरों पर सूचना सुरक्षा के क्षेत्र में मानव संसाधन विकसित करने के उद्देश्य से सरकार ने 'सूचना सुरक्षा शिक्षा और जागरूकता' (Information Security Education and Awareness: ISEA) परियोजना प्रारंभ की है।
- सरकार द्वारा 'कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम (CERT-In)' की स्थापना की गई जो कंप्यूटर सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर की मॉडल एजेंसी है।
- देश में साइबर अपराधों से समन्वित और प्रभावी तरीके से निपटने के लिए 'साइबर स्वच्छता केंद्र' भी स्थापित किया गया है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (Ministry of Electronics and Information Technology-MeitY) के तहत भारत सरकार की डिजिटल इंडिया मुहिम का एक हिस्सा है।
- भारत सूचना साझा करने और साइबर सुरक्षा के संदर्भ में सर्वोत्तम कार्य प्रणाली अपनाने के लिए अमेरिका, ब्रिटेन और चीन जैसे देशों के साथ समन्वय कर रहा है।
- अंतर–एजेंसी समन्वय के लिए 'भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र' (Indian Cyber Crime Co-ordination Centre-I4C) की स्थापना की गई है।

भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र

जनवरी 2020 में गृह मंत्रालय द्वारा साइबर क्राइम से निपटने के लिए 'भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र' (Indian Cyber Crime Coordination Centre-I4C) का उद्घाटन किया गया है। इस योजना को संपूर्ण भारत में लागू किया गया है। साइबर क्राइम से बेहतर तरीके से निपटने के लिए तथा I4C को समन्वित और प्रभावी तरीके से लागू करने हेतु इस योजना के निम्नलिखित सात प्रमुख घटक हैं –

- नेशनल साइबरक्राइम थ्रेट एनालिटिक्स यूनिट (National Cybercrime Threat Analytics Unit)
- नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल (National Cyber Crime Reporting Portal)
- संयुक्त साइबर अपराध जाँच दल के लिए मंच (Platform for Joint Cyber Crime Investigation Team)
- राष्ट्रीय साइबर अपराध फोरेंसिक प्रयोगशाला पारिस्थितिकी तंत्र (National Cyber Crime Forensic Laboratory Ecosystem)
- राष्ट्रीय साइबर क्राइम प्रशिक्षण केंद्र (National Cyber Crime Training Centre)
- साइबर क्राइम इकोसिस्टम मैनेजमेंट यूनिट (Cyber Crime Ecosystem Management Unit)
- राष्ट्रीय साइबर अनुसंधान और नवाचार केंद्र (National Cyber Research and Innovation Centre)

निष्कर्ष – भारत इंटरनेट का तीसरा सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है और हाल के वर्षों में साइबर अपराध कई गुना बढ़ गए हैं। साइबर सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए सरकार की ओर से कई कदम उठाए गए हैं। कैशलेस अर्थव्यवस्था को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ने के कारण भारत में साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। डिजिटल भारत कार्यक्रम की सफलता काफी हद तक साइबर सुरक्षा पर निर्भर करेगी। अतः भारत को इस क्षेत्र में तीव्र गति से कार्य करना होगा। वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे हज़ारों लोगों तक पहुँचा सकता है, परंतु सोशल मीडिया का सावधानीपूर्वक उपयोग ही हमें ऑनलाइन ठगी तथा साइबर अपराध के गंभीर खतरों से बचा सकता है।

आर्टीजन (ग्रेड–I), बीएचईएल, एचईपी, भोपाल

मानव संसाधन प्रमुखों और राजभाषा प्रमुखों के सम्मेलन का आयोजन

मानव संसाधन प्रमुखों और राजभाषा प्रमुखों की बैठक 29 और 30 अप्रैल 2024 को नोएडा स्थित 'बीएचईएल सदन' में आयोजित की गई। बैठक में कॉर्पोरेट कार्यालय सहित बीएचईएल के सभी इकाइयों एवं प्रभागों के मानव संसाधन प्रमुखों एवं राजभाषा प्रमुखों ने भाग लिया। बैठक का उद्घाटन श्री कृष्ण कुमार ठाकुर, निदेशक (मानव संसाधन) ने किया। बैठक के दूसरे दिन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री के सदाशिव मूर्ति ने मानव संसाधन और राजभाषा प्रमुखों को संबोधित किया और उनके साथ परिचर्चा की।

दो – दिवसीय सम्मेलन के दौरान विभिन्न इकाइयों एवं प्रभागों के 34 राजभाषा अधिकारियों एवं पदाधिकारियों ने भाग लिया। कुछ सत्र मानव संसाधन प्रमुखों के साथ सम्मिलित रूप से आयोजित किए गए और कुछ सत्र विशेष रूप से राजभाषा अधिकारियों के लिए अलग सम्मेलन कक्ष में आयोजित किए गए। संसदीय राजभाषा समिति की नई प्रश्नावली पर चर्चा की गई। निदेशक मानव संसाधन की अध्यक्षता में, मानव संसाधन प्रमुखों एवं राजभाषा प्रमुखों के लिए 'राजभाषा कार्यान्वयन – भारत सरकार की अपेक्षाएँ एवं प्रभावी कार्यान्वयन' विषय पर विशेष सत्र का आयोजन किया गया। अतिथि वक्ताओं के दो सत्र आयोजित किए गए। पहले दिन दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर तथा भारी उद्योग मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य, प्रो. पूरन चंद टंडन ने 'राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में अनुवाद की भूमिका' विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे दिन श्री नरेश कुमार, उप निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। सम्मेलन के दौरान निदेशक (मानव संसाधन) तथा कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) की उपस्थिति में विभिन्न इकाइयों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी समस्याओं और उनके समाधान, बजट तथा जनशक्ति जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।

कॉर्पोरेट कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अरुणिमा' को नराकास से पुरस्कार

कॉर्पोरेट कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अरुणिमा' को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास – उपक्रम–1), नई दिल्ली से जनवरी–दिसम्बर 2023 की अवधि के लिए आयोजित श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। नराकास की 24 जनवरी, 2024 को आयोजित 58वीं बैठक में कार्यपालक निदेशक (मा.सं.), श्री एम. इसादोर, महाप्रबंधक (कॉर्पोरेट प्रशासन), श्री आर. के. श्रीवास्तव एवं अपर महाप्रबंधक (राजभाषा), सुश्री चन्द्रकला मिश्र ने बीएचईएल की ओर से यह पुरस्कार प्राप्त किया। नराकास के सदस्य कार्यालयों के लिए प्रशासनिक शब्द अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए भी कॉर्पोरेट कार्यालय को नराकास उपक्रम–1 दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया।

बीएचईएल, तिरुच्चि 'नराकास राजभाषा शील्ड' से सम्मानित

बीएचईएल, तिरुच्चि को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ठ प्रदर्शन हेतु सार्वजनिक उपक्रम श्रेणी में वर्ष 2022–23 के लिए द्वितीय पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), तिरुच्चिराप्पल्लि की दिनांक 15.02.2024 को आयोजित छमाही बैठक एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के दौरान यह पुरस्कार नराकास के अध्यक्ष, श्री एस अंबलगन, आईआरएसएस, तिरुच्चि द्वारा इकाई के महाप्रबंधक (एमएम एवं मा.सं), श्री पे. समुद्रपांडी को प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में नराकास के अध्यक्ष द्वारा बीएचईएल की तिरुच्चि इकाई में किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन की सराहना की गई तथा नराकास की गतिविधियों में बीएचईएल की राजभाषा टीम के सहयोग की भूरी– भूरी प्रशंसा भी गई। नराकास की संयुक्त हिन्दी प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करने हेतु बीएचईएल तिरुच्ची इकाई के 11 कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। राजभाषा विभाग में पदस्थ श्री गिरीश लाल, उप अधिकारी (अनुवाद) एवं श्री सोहन सिंह चौहान, सहायक अधिकारी (अनुवाद) को उनके सराहनीय योगदान हेतु विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पावर सेक्टर-पश्चिमी क्षेत्र, नागपुर में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन

प्रतिवर्ष 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर इस वर्ष पावर सेक्टर–पश्चिमी क्षेत्र, नागपुर में 21.02.2024 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन हर्षोल्लास से किया गया। समारोह के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में आंतरिक संकाय सुश्री लतिका एम. मेनन, उप प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग ने 'मलयालम – परिचय एवं साहित्य' विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर श्री संजीव कुमार राय, कार्यपालक निदेशक, पा.से.–प.क्षे. तथा श्री अजय कुमार, महाप्रबंधक ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

कॉर्पोरेट आरएंडडी, हैदराबाद नराकास द्वारा 'राजभाषा ट्रॉफी' से सम्मानित

हैदराबाद–सिकन्दराबाद स्थित उपक्रमों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 58वीं अर्धवार्षिक बैठक एवं वार्षिक समारोह दिनांक 27.10.2023 को बीडीएल कंचनबाग, हैदराबाद में आयोजित किया गया।

इस बैठक में वर्ष 2022–23 के दौरान राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु बीएचईएल कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास को मध्यम वर्ग के कार्यालय श्रेणी के अंतर्गत 'राजभाषा ट्रॉफी – द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

श्री के. रविशंकर, महाप्रबंधक प्रभारी (कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास), हैदराबाद ने अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, बीडीएल एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोमोडोर श्री ए. माधव राव से 'राजभाषा ट्रॉफी' प्राप्त किया।

पावर सेक्टर-पश्चिमी क्षेत्र के कर्मचारी श्री कमल कुलश्रेष्ठ की विशेष उपलब्धि

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल, महामहिम श्री विश्वभूषण हरिचंदन ने राजभवन में बीएचईएल भिलाई साईट के सुरक्षा अधिकारी, श्री कमल कुलश्रेष्ठ को डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। डॉ. कमल कुलश्रेष्ठ ने दुर्घटनाओं की रोकथाम में प्रबंधन की भूमिका विषय पर शोध किया है। डॉ. कमल कुलश्रेष्ठ द्वारा महामहिम राज्यपाल महोदय को औद्योगिक सुरक्षा के विभिन्न उपाय से संबंधित द्विभाषी स्वरचित पुस्तकें भेंट की गई जिसकी प्रशंसा राज्यपाल महोदय ने ट्वीट करके भी की।

कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास, हैदराबाद में विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन

कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास, हैदराबाद में राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 10.01.2024 को विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर 'आहार की आयुर्वेदिक अवधारणाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर व्याख्याता के रूप में डॉ. वी. श्रीदेवी, अनुसंधान अधिकारी, एनआईआईएमएच उपस्थित थीं। उन्होंने आयुर्वेदिक चिकित्सा के सिद्धांतों पर आधारित खाने के पैटर्न और स्वास्थ्य सुधार की संभावनाओं के बारे में अपने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से बताया।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री के रविशंकर, कार्यपालक निदेशक (कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास) उपस्थित थे। उन्होंने प्रतिभागियों को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए बताया कि हिन्दी को विश्व स्तर पर

पहुंचाने की जिम्मेदारी प्रत्येक कर्मचारी की है। श्रीमती बी. जे. वसुन्धरा, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया।

कॉर्पोरेट आरएडंडी, हैदराबाद में तकनीकी आलेख प्रस्तुतीकरण कार्यक्रम संपन्न

हिन्दी में प्रशासनिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 15.12.2023 को आईएमसी भवन में राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी में तकनीकी आलेख प्रस्तुतीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को दो समूहों– हिन्दी एवं अन्य भाषी वर्ग में आयोजित किया गया। उत्तम प्रस्तुतीकरणों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी भाषी समूह से श्री विकास वर्मा, श्री राकेश रंजन राही, श्री मिथलेश कुमार, श्री जयंत सिंह ने भाग लिया तथा अन्य भाषा भाषी समूह से श्रीमती साई रम्या, श्री जगन्नाथ जोशी, श्री पी के पटनायक, श्री शिबानी शंकर मिश्रा, श्री सुशांत कुमार रथ, श्रीमती बी सिरीशा एवं श्री एंथनी हैरिसन ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने तकनीकी आलेखों को पॉवर पॉईंट के माध्यम से प्रस्तुत किया। निर्णायक के रूप में श्री अमरीश गुप्ता, अपर महाप्रबंधक एवं श्री एन वी श्रीनिवास, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक उपस्थित थे। उत्तम प्रस्तुतीकरणों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

बीएचईएल, हरिद्वार 'नराकास राजभाषा शील्ड' से सम्मानित

बीएचईएल, हरिद्वार को सार्वजनिक उपक्रम श्रेणी में वर्ष 2022–23 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), हरिद्वार द्वारा 'उत्कृष्ट कार्यान्वयन' श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार समिति की 37वीं अर्धवार्षिक बैठक में समिति के अध्यक्ष एवं टीएचडीसी आईएल के निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेंद्र सिंह के कर–कमलों से बीएचईएल, हरिद्वार के कार्यपालक निदेशक, श्री टी एस मुरली, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री आलोक कुमार एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री हरीश सिंह बगवार ने प्राप्त किया।

बीएचईएल, हरिद्वार के कर्मचारी नराकास प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों द्वारा जुलाई–दिसंबर छमाही के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में हरिद्वार इकाई के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता की तथा 07 कर्मचारी विजेता रहे। नराकास की 29 जनवरी, 2024 को आयोजित अर्धवार्षिक बैठक में सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कॉर्पोरेट कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस-2024 के उपलक्ष्य में विशेष व्याख्यान का आयोजन

विश्व हिंदी दिवस–2024 के उपलक्ष्य में 11 जनवरी, 2024 को 'वैश्विक भाषा के रूप में हिन्दी' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान में अतिथि वक्ता के रूप में प्रोफेसर (डॉ.) कुमुद शर्मा, हिंदी विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कृष्ण कुमार ठाकुर, निदेशक (मानव संसाधन) ने की।

ईडीएन में 'तनाव प्रबंधन' विषय पर विशेष राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

ईडीएन बेंगलूरु में दिनांक 27.12.2023 को 'तनाव प्रबंधन '(Stress Management) विषय पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में उप महाप्रबंधक और उनसे ऊपर के सभी कार्यपालकों को नामित किया गया था। श्री बी. श्याम बाबु, कार्यपालक निदेशक (ईडीएन) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने इस कार्यक्रम में प्रतिभागिता की। गतिविधि आधारित इस विशेष कार्यशाला में डॉ. मंजु ढोंडियाल, पूर्व उप निदेशक, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान को संकाय के रूप में आमंत्रित किया गया था।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा ईएमआरपी, मुम्बई का राजभाषा निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति ने दिनांक 14 फरवरी, 2024 को ईएमआरपी, मुम्बई का राजभाषा निरीक्षण किया। निरीक्षण बैठक की अध्यक्षता संसदीय समिति की माननीय सदस्य श्रीमती कांता कर्दम ने की। इस निरीक्षण बैठक में ईएमआरपी, मुम्बई के प्रतिनिधित्व के लिए मंत्रालय की ओर से श्री अरुण दीवान, निदेशक, भारी उद्योग मंत्रालय, श्री कुमार राधारमण, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारी उद्योग मंत्रालय, बीएचईएल की ओर से श्री एम. इसादोर, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन), श्रीमती चन्द्रकला मिश्र, अपर महाप्रबंधक (राजभाषा), कॉर्पोरेट कार्यालय और निरीक्षित कार्यालय के प्रमुख श्री एस. चन्द्रशेखर, अपर महाप्रबंधक (ईएमआरपी) उपस्थित थे। समिति के माननीय सदस्यों ने भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा संबंधी नियमों, विनियमों को लागू करने में इकाई द्वारा किये गए प्रयासों के प्रति संतोष व्यक्त किया। संसदीय राजभाषा समिति ने इकाई द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी में प्रदर्शित दस्तावेजों का अवलोकन कर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा भी की।

बीएचईएल कर्मचारियों ने नराकास प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते

नराकास के तत्वावधान में विभिन्न उपक्रमों द्वारा नवंबर–दिसंबर 2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में दिल्ली–एनसीआर स्थित इकाईयों/प्रभागों में कार्यरत बीएचईएल के 09 कर्मचारियों ने पुरस्कार जीते। नराकास (उपक्रम–1), नई दिल्ली की दिनांक 24 जनवरी, 2024 को आयोजित 58वीं बैठक में विजेताओं को प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।

अनिरुद्ध रंजन
प्रबंधक
उद्योग क्षेत्र
आशु भाषण
प्रथम

मनीषा शुक्ला
अभियंता
पीएस–एसएसबीजी
रचनात्मक समाचार वाचन
द्वितीय

ओमेन्दर सिंह
प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
हिन्दी प्रतिवेदन लेखन
द्वितीय

दिनेश कुमार शर्मा
अभियंता
उद्योग क्षेत्र
हिन्दी शब्दार्थ लेखन
द्वितीय

संतोष कुमार
अभियंता
कॉर्पोरेट कार्यालय
हिन्दी टिप्पण लेखन
प्रोत्साहन

रमेश कुमार बहल
प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
राजभाषा प्रश्नमंच
प्रोत्साहन

गौरव अब्रोल
प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
हिन्दी कविता पाठ
प्रोत्साहन

अतुल व्यास
अभियंता
कॉर्पोरेट कार्यालय
हिन्दी निबंध लेखन
प्रोत्साहन

विकास राजौरा
प्रबंधक
पीएसबीजी–I
हिन्दी आशु भाषण
प्रोत्साहन

अरुणिमा के 34वें अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए पुरस्कृत कर्मचारी

अरुणिमा के प्रत्येक अंक में प्रकाशित उत्कृष्ट 15 रचनाओं के लेखकों को पुरस्कृत किया जाता है। पुरस्कार प्राप्त करने वाले रचनाकारों का चयन निर्णायक मण्डल द्वारा किया जाता है। अरुणिमा के 34वें अंक में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार प्राप्त करने वाले लेखकों का विवरण इस प्रकार हैः–

संदीप शुक्ला
आर्टीजन
हीप, हरिद्वार
यादों के झरोखे से
प्रथम

हरी चंद
सहायक अधिकारी
कॉर्पोरेट कार्यालय
गजल
द्वितीय

आँचल चौधरी
प्रबंधक
पीईएम
अंकुर का द्वंद
द्वितीय

रमेश कुमार बहल
प्रबंधक
कॉर्पोरेट कार्यालय
स्मार्ट ग्रिड समाधान
तृतीय

राम किशोर त्रिपाठी
अभियंता
एचईपी, भोपाल
कृतज्ञता
तृतीय

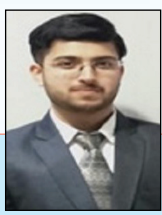

सुभाष अरोड़ा
सहा. अधिकारी
कॉर्पोरेट कार्यालय
आयकर रिटर्न
तृतीय

डॉ अनीता कुमारी
वरि. प्रबंधक
हीप, हरिद्वार
मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक सोच का प्रभाव
प्रशंसा

देव कुमार
उप अभियंता
टीपी, झाँसी
नारी
प्रशंसा

संजय मिश्र
अधिकारी
टीपी, झाँसी
बीएचईएल गाथा
प्रशंसा

आशिर्बाद हेम्ब्रम
उप अभियंता
आरओडी मुख्यालय
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
प्रशंसा

दीपक कुमार पाण्डेय
अभियंता
हीप, हरिद्वार
भारत में अंतरिक्ष य......
प्रशंसा

गौरव कनौजिया
अभियंता
पीएसएसआर
औद्योगिक सुरक्षा
प्रशंसा

शशि कांत पुर्बे
वरिष्ठ प्रबंधक
एचपीईपी, हैदराबाद
क्लाउड कंप्यूटिंग
प्रशंसा

के. रविशंकर
कार्यपालक निदेशक
कॉर्पो. अनु. एवं वि.
एकान्त गीत
प्रशंसा

पंकज कुमार
कार्यपालक
आईवीपी, गोइंदवाल
अरुणिमा
प्रशंसा

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम

हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित) के लिए निर्धारित लक्ष्य

क क्षेत्र से		ख क्षेत्र से		ग क्षेत्र से	
1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को	100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को	90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को	55%
2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को	100%	2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को	90%	2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को	55%
3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को	65%	3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को	55%	3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को	55%
4. क क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%	4. ख क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%	4. ग क्षेत्र से क तथा ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55%

अन्य कार्यों के लिए निर्धारित लक्ष्य

क्र.	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
1.	हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
2.	हिंदी में टिप्पण/टिप्पणी	75%	50%	30%
3.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
4.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
9.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
10.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
11.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	(i) मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स. /निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
13.	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%

शब्दों से संबंधित कुछ सामान्य अशुद्धियाँ एवं उनके शुद्ध रूप

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	अतिथी	अतिथि	आधीन	अधीन	अनाधिकार	अनधिकार
अनुदित	अनूदित	अनुग्रहीत	अनुगृहीत	अभ्यस्थ	अभ्यस्त	अस्मर्थ	असमर्थ
अमावश्या	अमावस्या	अलोकिक	अलौकिक	असोक	अशोक	आर्दश	आदर्श
आर्शिवाद	आशीर्वाद	आल्हाद	आह्लाद	इतिहासिक	ऐतिहासिक	इष्ठ	इष्ट
उज्वल	उज्ज्वल	उधोग	उद्योग	ऊत्थान	उत्थान	उपलक्ष	उपलक्ष्य
उपरोक्त	उपर्युक्त	उर्जा	ऊर्जा	उपन्यासिक	औपन्यासिक	एकत्रित	एकत्र
ओद्योगिक	औद्योगिक	कल्यान	कल्याण	कार्यांवयन	कार्यान्वयन	कृप्या	कृपया
कवित्री	कवयित्री	कालीदास	कालिदास	क्यूँ	क्यों	क्षत्रीय	क्षत्रिय
गंवार	गँवार	गुरू	गुरु	गृहणी	गृहिणी	ग्रहस्थ	गृहस्थ
घबड़ाना	घबराना	घनिष्ट	घनिष्ठ	चरन	चरण	छमा	क्षमा
जेष्ठ	ज्येष्ठ	ज्योत्सना	ज्योत्स्ना	झाड़ू	झाड़ू	ढ़ेर	ढेर
तिथी	तिथि	दवाईयाँ	दवाइयाँ	दाइत्व	दायित्व	दु:ख	दुख
दुनियां	दुनिया	दुदर्शा	दुर्दशा	दुसरा	दूसरा	दुस्कर	दुष्कर
दृष्टव्य	द्रष्टव्य	धनाड्य	धनाढ्य	नमश्कार	नमस्कार	नवम्	नवम
निष्टा	निष्ठा	नीती	नीति	निस्वार्थ	नि:स्वार्थ	निरिक्षण	निरीक्षण
नुपुर	नूपुर	पंक्ती	पंक्ति	पडता	पड़ता	पत्नि	पत्नी

राजभाषा कार्यान्वयन- क्या करें, क्या न करें

क्या करें

1. कार्यालय में काम करते समय हमेशा इन अंकों का प्रयोग करें– 1, 2,3,4
2. हिंदी में लिखे पत्र या ईमेल का उत्तर हिंदी में ही दें
3. अपने हस्ताक्षर द्विभाषी रखें।
4. अपना विजिटिंग कार्ड, रबर स्टैम्प और नेम प्लेट द्विभाषी या हिंदी में ही बनवाएं और उपयोग करें।
5. रजिस्टरों और फाइलों में हिंदी में प्रविष्टि करें।
6. सभी ई–मेल हिंदी या द्विभाषी रूप में लिखें।
7. राजभाषा विभाग की सभी प्रोत्साहन योजनाओं में भाग लेते रहें।

क्या न करें

1. कार्यालय में काम करते समय इन अंकों का प्रयोग कभी न करें– १, २,३,४,५....
2. हिंदी में मिले पत्र या ईमेल का उत्तर अंग्रेजी में न दें।
3. कोई भी आदेश या परिपत्र केवल अंग्रेजी में न भेजें और न स्वीकार करें।
4. धारा 3(3) के केवल अंग्रेजी में बने ड्राफ्ट दस्तावेज पर हस्ताक्षर न करें क्योंकि धारा 3(3) के दस्तावेज को द्विभाषी रूप में जारी करने की जिम्मेदारी उस पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की होती है।

आलेख

'अनुवाद' बना नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार स्तंभ

प्रो. पूरन चंद टंडन

लगभग 45 केंद्रीय विश्वविद्यालय और 900 के आसपास अन्य विश्वविद्यालयों वाला यह देश, भारत, दुनिया भर में सबसे बड़ी शिक्षा–प्रणाली वाला देश है। लगभग 16 लाख विद्यालय, 50 से अधिक राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय महत्व की संस्थाएँ, लगभग 25 आई.आई.टी. संस्थाएँ, 30 के आसपास एन.आई.टी. तथा अन्य शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थान भारत की शिक्षा–पद्धति और नीति की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। बृहत् जनसंख्या, विराट भूगोल तथा अनंत चुनौतियों–समस्याओं वाले इस देश ने शिक्षा को महत्व तो दिया किंतु लगभग 34 वर्षों के पश्चात् समकालीन अपेक्षाओं–आवश्यकताओं को देखते हुए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने का भी पुण्य प्रयास किया है। स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकीय शिक्षा, कानूनी शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान एवं व्यवसाय–क्षेत्र की शिक्षा जैसे अनेक आयाम हैं जिनपर इस नई शिक्षा पद्धति ने बहुत ही बड़े स्तर पर सुदीर्घ विमर्श–विवेचन से अध्ययन–चिंतन आधृत नई प्रणाली और सार्थक पद्धति अपनाने का रचनात्मक साहस किया है।

अब शिक्षा का अधिकार, नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक 5+3+3+4 का नया फार्मूला अर्थात् चार चरणों में विभक्त इस पूरी शिक्षा–पद्धति की बुनियादी विकास यात्रा का मार्ग प्रशस्त किया गया है। राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरण के गठन से पर्यावरण हितैषी शिक्षण–प्रशिक्षण पर बल, शिक्षण के बहु–विकल्पीय अवसरों की उपलब्धि, रेमेडियल शिक्षा की सशक्त व्यवस्था, कमजोर, असमर्थ, निर्धन तथा पिछड़े वर्ग के छात्रा–छात्राओं के लिए अतिरिक्त शिक्षण की व्यवस्था, लेखन–कौशल, भाषा और गणित आदि तकनीकी विषयों का मेल, पठन–पाठन तथा संवादात्मक अभिव्यक्ति–कौशल की संस्कृति का विकास, पठनीयता की अभिरुचि जाग्रत करने के प्रयास तथा व्यवहार एवं रोजगारमूलक तकनीकी शिक्षा अर्जन के नए–नए द्वार खोलने का दर्शन इसी विलक्षण परिकल्पना का परिचायक है।

राष्ट्र की नई शिक्षा नीति में नई वैश्विक चुनौतियों को देखते हुए, उसका व्यापक और मुकाबला करने वाली शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट मोबाइल फोन, ट्विटर, ब्लॉग राइटिंग, ई–लर्निंग सिस्टम से अभिज्ञता, ऑनलाइन शिक्षण–प्रशिक्षण उपकरणों के अनुप्रयोग की तकनीक का बोध, सभी शिक्षकों का इस दृष्टि से प्रशिक्षण, अधुनातन एवं अद्यतन विश्व–ज्ञान की सभी संभावनाओं को उद्घाटित करने के उपाय तो इस नई शिक्षा पद्धति के प्रेरक तत्व हैं ही, 'लर्निंग विदाउट बर्डन' अर्थात् बिना किसी बोझ की अनुभूति के शिक्षा अर्जित करना, शिक्षा को मनोरंजक एवं अभिरुचिपरक बनाना भी इसके मानचित्र का हिस्सा रहा है।

सत्तर–बहत्तर वर्ष की आजादी के बाद भी हमारी शिक्षा–पद्धति एवं व्यवस्था अंग्रेजी की बैसाखियों पर ही चलती रही है। लाखों–करोड़ों विद्यार्थी स्कूल और कॉलेजों में प्रवेश लेकर भी बीच यात्रा में ही पढ़ना–लिखना इसीलिए छोड़ते रहे कि उन्हें अंग्रेजी नहीं आती। अंग्रेजी ने उच्च शिक्षा को तो पूर्णतः आतंकित किया ही है न जाने कितने ही कालिदास, कितने ही भर्तृहरि, कितने ही महाकवि भास अंग्रेजी–आधृत शिक्षा पद्धति के भय के कारण पूर्णतः प्रतिभाशाली होकर भी शिक्षा से वंचित रह गए। नई शिक्षा पद्धति ने इन सभी त्रुटियों, चुनौतियों, समस्याओं का गहन–गंभीर अध्ययन कर कुछ नए एवं सार्थक परिदृश्य खड़े किए हैं। अंतरानुशासनात्मक शिक्षा, बहु–अनुशासनात्मक शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षा अर्जन के विकल्प, कौशल–विकास आधारित शिक्षा, भारतीय परंपराओं को उद्घाटित करने एवं उनका गहन ज्ञानार्जन कराने वाली शिक्षा, विश्व–स्तरीय अनुसंधान–उन्मुख शिक्षा, रोजगारमूलक उच्च शिक्षा, उच्च गुणवत्ता पर बल देने वाली शिक्षा तथा मानवता और भाईचारे को बढ़ाने वाली, मूल्य–बोध कराते हुए बच्चों और युवाओं को केवल धनार्जन की मशीन न बनाकर उन्हें एक सुसंस्कृत नागरिक, राष्ट्र–समर्पित मानव बनाने वाली शिक्षा का सूत्रपात कराने का आह्वान इस शिक्षा पद्धति में किया गया है।

केवल उपाधि बाँटना उद्देश्य न रहे, केवल नौकरी माँगने का स्वप्न न रहे, रोजगार प्रदान करने वाली शिक्षा पद्धति तैयार हो सके। आत्मनिर्भर नागरिक तैयार हों, केवल रटंतु विद्या या किताबी विद्या मात्र न हो, मानसिक, आत्मिक एवं आध्यात्मिक विकास भी शिक्षा द्वारा संभव हो सके, यह प्रयास भी इस परिवर्तन के मूल में स्पष्ट परिलक्षित होते हैं।

इस नई शिक्षा पद्धति और नीति ने भारतीय भाषाओं के विकास तथा हिंदी और अनुवाद–अनुशासन को विशिष्ट महत्व देते हुए एक सशक्त आधारशिला रख दी है। हमारे विद्यार्थी अपनी मातृभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा आदि की कीमत पर अंग्रेजी के अध्येता बनाए जा रहे थे। अब भारतीय भाषाओं में, राष्ट्र की महत्वपूर्ण भाषा हिंदी में अधुनातन–अद्यतन शिक्षा अर्जन भी संभव हो, इसकी व्यवस्था की गई है। अनुवाद से अथवा मौलिक लेखन से अब ज्ञान–विज्ञान की पाठ्य–पुस्तकें निर्मित हों, संदर्भ–ग्रंथ तैयार किए–कराए जाएँ, ई–लर्निंग की सामग्री का निर्माण हो जिससे हम भारत का नव–निर्माण कर सकें। शिक्षण–शास्त्र में अनुवाद की सशक्त भूमिका सुनिश्चित हो। अब अनुवाद दोयम दर्जे का विषय या अनुशासन न रहे। अब अनुवाद को 'पाप' या 'प्रवंचना' न कहा जाए बल्कि उसकी आंतरिक शक्ति एवं उपादेयता को सही अर्थों में समझा जाए जिससे समस्त जीवनोपयोगी क्षेत्रों की शिक्षा मिल सके और स्वभाषा में मिल सके। अनुवाद को अब राष्ट्रीय विकास का, बहुआयामी नव–निर्माण का सशक्त उपकरण, सार्थक साधन तथा परिणामगामी सेतु बनाकर उसका यथासंभव दोहन किया जाए।

अनुवाद से अध्ययन–अध्यापन की अद्यतन सामग्री का निर्माण हो, अनुवाद की कसौटी निर्धारित हो, अनूदित पाठ्य–सामग्री की गुणवत्ता निर्धारित हो। पुस्तकों, पांडुलिपियों, अभिलेखों, उपेक्षित दुर्लभ ग्रंथों, कालजयी भारतीय संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाली विलक्षण रचनाओं के भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद हों, विदेशी भाषाओं में भी युद्ध–स्तर पर आदर्श अनुवाद हों ताकि विश्व के समक्ष भारतीय मनीषा और प्रतिभा की सही–सही छवि उभरकर आए। भारतीय भाषाओं के शब्दकोश, विश्वकोश बनें, ई–कोश निर्मित हों, अद्यतन शब्दावलियाँ बनाई जाएं, अनुप्रयोग कोश बनाए जाएं तथा भारतीय भाषाओं की बृहत् शब्द–संपदा को समृद्ध एवं संपन्न बनाया जाए, इसके भी प्रावधान किए गए हैं।

तत्काल भाषांतरण पर बल दने का सुझाव भी दिया गया है। 'अनुवाद और विवेचना' अथवा 'अनुवाद और निर्वचन' के क्षेत्र में मानक कार्य–योजनाएँ बनाने, उनका कार्यान्वयन करने का संकल्प लेने पर भी बल दिया गया है। नीति ने 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन' की स्थापना की घोषणा भी की है। भाषा तथा विषयों को आधुनिकीकरण एवं प्रौद्योगिकी से जोड़ने में इससे लाभ मिलेगा। संभावना है कि हर राज्य में एक 'अनुवाद अकादमी' बने, कम–से–कम एक या दो 'अनुवाद विश्वविद्यालय' बनें और 'अनुवाद प्राधिकरण' की स्थापना अनेक राष्ट्रीय स्वप्नों को साकार कर सकेगी।

नई शिक्षा नीति ने विद्यालयी पाठ्यक्रमों के अनुवाद की, भारतीय भाषाओं में उनकी उपलब्धता की, शिक्षण–सामग्री की एकरूपता की चिंता भी की है। इससे समेकित भारतीय संस्कृति को स्वर मिलेगा, परस्पर भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान–संपदा का बोध हो सकेगा।

भारतीय भाषाओं की भी अंग्रेजी–हिंदी तथा हिंदी–अंग्रेजी की तरह ज्ञान–विज्ञानमूलक अवधारणात्मक शब्दावली तैयार करने का संकल्प भी नीति के उद्देश्यों में शामिल है। इससे भारतीय एकता, राष्ट्रीय अस्मिता तथा गौरवशाली भारतीय अतीत एवं विरासत की द्योतक संपदा का परिचय भी मिल सकेगा। बहु–अनुशासनात्मक (बहु–विषयक) शिक्षा की ओर अग्रसर होने का संकल्प स्तुत्य एवं प्रणम्य संकल्प है। इस तरह के प्रयासों से भारतीय साहित्य, कला, ज्ञान–विज्ञान, समाजशास्त्र आदि विषयों को उद्घाटित करने, उनका प्रचार–प्रसार करने का स्वप्न भी पूरा हो पाएगा।

अनुवाद के पाठ्यक्रम सभी विश्वविद्यालयों में प्रारंभ करने, इन पाठ्यक्रमों के क्रेडिट निर्धारण तथा अंतरण करने की व्यवस्था करवाने, अभ्यास पुस्तकें, वर्क–बुक, पत्र–पत्रिकाओं में समावेश कराने, विद्यालयी स्तर पर अनुवाद–शिक्षण को जोड़ने तथा ज्ञान की नई संकल्पनाओं को खोजने पर भी बल दिया गया है। वास्तव में अनुवाद को 'सेवा प्रदाता' अनुशासन बनाने अर्थात् 'सर्विस प्रोवाइडर' के रूप में उसका विकास करने का मार्ग भी प्रशस्त किया गया है। इसी से भारतीय भाषाओं में तथा विदेशी भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान–संपदा का प्रचार–प्रसार एवं आदान–प्रदान संभव हो सकेगा। अनुवाद से हम उपेक्षित अभिलेखों को, दस्तावेजों को, कलात्मक समानताओं को, ज्ञान–विज्ञान की उपलब्धियों तथा प्रदेय को विश्व के समक्ष उद्घाटित कर सकेंगे। 'नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर इंडियन लैंग्वेजिज' की स्थापना करते हुए पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश आदि भाषाओं की विरासत को भी अनुवाद द्वारा उजागर किया जा सकेगा। बहु–भाषावादी साहित्य–संस्कृति का विकास भी इसी से संभव हो सकेगा।

मौलिक लेखन एवं अनुवाद–कर्म में तकनीकी, प्रौद्योगिकी, मशीन–तंत्र की यथासंभव मदद लेने, नए 'ऐप' बनाने, कंप्यूटर के फॉन्ट निर्धारित करने, नए–नए सॉफ्टवेयर बनाने आदि के लक्ष्य निर्धारित करते हुए नई शिक्षा पद्धति 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का सपना साकार करने का मूल मंत्र लेकर आई है।

इस प्रकार नई शिक्षा नीति में अनुवाद की रचनात्मक भूमिका का निर्धारण संगीत, दर्शन, भारतीय पारंपरिक विद्याओं, कलाओं, सिद्धांतों तथा अनेक अनुशासनों में एक 'मील का पत्थर' स्थापित करेगी। स्वतंत्र भारत में आजादी के पश्चात् युवाओं के जो स्वप्न अधूरे रह गए थे, बिखर गए थे और 'सारा आकाश' उन्हें अपने लिए शून्य प्रतीत होता था, अब उसमें आशाओं के तारे टिमटिमाते प्रतीत हो रहे हैं, आलोक विकीर्ण करता चाँद मुस्कुराता दिखाई देने लगा है।

भारी उद्योग मंत्रालय की
हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य

आलेख

भाषा और अनुवाद

लेखा सरीन

भाषा

भाषा – भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

Language is not only a symbol but also a product of culture.

भाषा संस्कृति का प्रतीक ही नहीं बल्कि उससे निष्पन्न भी होती है।

हमारी हिंदी भाषा संस्कृत से निष्पन्न हुई है। हमारे अधिकांश शब्द संस्कृत की धातुओं से ही बने हैं जैसे भारत = भा रत यहां भा का अर्थ है ज्ञान और रत का अर्थ डूबा हुआ अर्थात ज्ञान में डूबा हुआ देश। भारत में जितने महाकाव्य, वेद, उपनिषद, पुराण रचे गए, क्या किसी देश में इतने लिखे गए?

आचार्य दंडी ने भाषा को ऐसे प्रकाश की संज्ञा दी है जिसके अभाव में पूरी सृष्टि अंधकार में डूब जाती है।

हमारा देश लंबे समय तक गुलाम रहा। सत्ता परिवर्तन के साथ– साथ भाषा बदलती रही। वैदिक काल में तीन–चार भाषाएं प्रचलित थीं। बौद्ध काल में संस्कृत अभिभावी थी। मुगल साम्राज्य में फारसी, अरबी थी। ब्रिटिश काल में अंग्रेजी शासन व्यवस्था की भाषा थी। भारतीय जनमानस की भाषा अंग्रेजी नहीं थी। लेकिन भारतीयों को अंग्रेजी सीखनी पड़ी।

स्वाधीनता आंदोलन में जिस भाषा ने देश को एक सूत्र में बांधा था वह हिंदी भाषा ही थी। लंबे समय की गुलामी के बाद जब देश आजाद हुआ और संविधान बनाने की बात हुई तो राजकाज का समस्त कार्य अपनी किसी भाषा में करने का प्रश्न उठा। बहुभाषी देश में किसी एक भाषा को राजकाज की भाषा चुनना आसान नहीं था। स्वतंत्र भारत के सांसद अपनी अपनी भाषा को राजकाज की भाषा बनाना चाहते थे। उस समय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा – ऐसी भाषा को देश के राजकाज की भाषा चुना जाए जिसमें निम्नलिखित गुण हों :–

1. भाषा सरकारी नौकरी के लिए आसान होनी चाहिए।
2. भाषा के द्वारा भारत का आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक कामकाज पूरा होना चाहिए।
3. उस भाषा को भारत के अधिकतर लोग बोलते हों।
4. वह भाषा राष्ट्र के लिए आसान होनी चाहिए।

5. उस भाषा के दूरगामी परिणामों पर ध्यान दिया जाए।

इस दृष्टि से हिंदी ही देश की राजभाषा अर्थात राजकाज की भाषा बननी चाहिए। यद्यपि दक्षिण के लोगों ने इसका विरोध किया किंतु वोटिंग के जरिए हिंदी को एकमत (unanimously) से देश की राजभाषा घोषित कर दिया गया। चूंकि आजादी से पहले शासन का समस्त कार्य अंग्रेजी में हो रहा था इसलिए एक ही दिन में पूरा कार्य हिंदी में करना संभव प्रतीत नहीं हुआ और संविधान में यह प्रावधान कर दिया गया कि 15 वर्ष की अवधि तक अंग्रेजी हिंदी के साथ सहभाषा के रूप में जारी रहेगी। यहीं से द्विभाषिकता की स्थिति उत्पन्न हो गई और भारत सरकार में अनुवाद की आवश्यकता उत्पन्न हो गई। राजभाषा अधिनियम 1963 के बनने से 14 तरह के सरकारी दस्तावेज अनिवार्य रूप से द्विभाषिक रूप से जारी करना अनिवार्य कर दिया गया। सरकारी कार्यालयों में हिंदी अनुवादकों की भर्ती की गई। इस व्यवस्था का परिणाम यह हुआ कि सरकारी कार्यालयों में मूल रूप से कार्य अंग्रेजी में ही होता रहा और साथ में उसका हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया जाने लगा। जबकि स्वतंत्रता के बाद देश का प्रशासनिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक सभी तरह का काम हिंदी में होना चाहिए था और आवश्यकता पड़ने पर उसका अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध कराया जाना चाहिए था। आज भी स्थिति यह है कि मंत्रालयों, विभागों में रिपोर्ट आदि अंग्रेजी में तैयार की जाती है और फिर उसका अनुवाद करवा कर द्विभाषिक रूप से उसे जारी किया जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्षों बाद भी हिंदी की स्थिति यह थी कि–

"गद्दी वाले ही नहीं

रद्दी वाले भी

हिंदी को कम महत्व देते थे

इसीलिए अंग्रेजी अखबार की तुलना में

हिंदी अखबार के कम पैसे देते थे"

आज स्थिति बदली है और देश– विदेश में भी हिंदी का सम्मान बढ़ा है। जब देश आजाद होने वाला था तब तत्कालीन शिक्षा मंत्री लार्ड मैकाले को कहा गया कि अब तो देश आजाद होने वाला है तो आप शिक्षा नीति पर इतना काम क्यों कर रहे हैं? तब लॉर्ड मैकाले ने उत्तर दिया कि हम तो यहां से चले जाएंगे पर काले अंग्रेज छोड़कर जाएंगे। हमारी मानसिकता आज भी वही है। हम अंग्रेजी बोलने वालों, अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वालों को अधिक सम्मान देते हैं। जबकि हिंदी सभी प्रादेशिक भाषाओं को एकसूत्र में पिरोने में सक्षम है। देश के लगभग 90 प्रतिशत लोग हिंदी को समझते और बोलते हैं।

अनुवाद :

अनुवाद शब्द भी वद् धातु से बना है जिसका अर्थ है कहना। वद् धातु में अनु उपसर्ग लगा है अर्थात पीछे पीछे कहना। अनुवाद दो भिन्न–भिन्न भाषा–भाषी व्यक्तियों, दो देशों के बीच सेतु का काम करता है। यह कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साहित्य से सिनेमा तक और संसद से सड़क तक सेतु का कार्य करता है।

आज अनुवाद के माध्यम से हिंदी भाषा का साहित्य भाषागत सीमा को पार करके विश्व की अनेक भाषाओं में उपलब्ध है। अज्ञेय, जयशंकर प्रसाद, कैलाश वाजपेयी, महादेवी वर्मा, प्रेमचंद, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी जैसे अनेक साहित्यकारों की रचनाओं का जापानी भाषा में अनुवाद हुआ है। कबीर, सूर, तुलसी, मीराबाई की रचनाओं का रूसी भाषा में अनुवाद उपलब्ध है। तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरित मानस और प्रेमचंद की अनेक रचनाओं का अनुवाद चीनी भाषा में हुआ है। इसी तरह फ्रेंच, पॉलिश, जर्मन आदि अनेक भाषाओं में हिंदी साहित्य का अनुवाद उपलब्ध है।

अनुवाद का कार्य तलवार की धार पर चलने के समान है। अनुवाद में जितना गहरा डूबा जाए उतना ही उत्तम अनुवाद होता है। आधुनिक विश्व निर्माण तथा अद्यतन विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। मूल रचनाकार चाहता है कि उसकी कृति का अनुवाद हो और पूरी दुनिया उसे जाने। संपूर्ण विश्व को परस्पर जोड़ने, एक–दूसरे के समाज और संस्कृति को समझने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्रशासनिक कार्यों में आजादी से पहले भी अनुवाद की आवश्यकता थी और आजादी के बाद भी संवैधानिक व्यवस्था के तहत द्विभाषिकता की स्थिति पैदा होने से अनुवाद की आवश्यकता हुई। उस समय जनमानस और अधिकारियों के बीच संवाद के लिए अनुवाद की आवश्यकता थी। हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए भी अनुवाद का सहारा लिया गया। सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति बनी। आज सरकारी आदेश, अनुदेश, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक गतिविधियों में हिंदी के प्रयोग की अनिवार्यता है।

आजादी के समय हमारे पास कोई राजकाज की भाषा नहीं थी। 1949 में हमने हिंदी को राजभाषा घोषित किया। 1961 में शब्दावली आयोग बना और विभिन्न विषयों के शब्द बनाए गए।

प्रशासनिक कार्यों में हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद होता है लेकिन आज स्थिति यह है कि मूल कार्य भी हिंदी में होने लगा है। पहले अंग्रेजी ऊपर होती थी हिंदी नीचे किंतु अब हिंदी ऊपर और अंग्रेजी नीचे होती है।

विभिन्न प्रकार के कोड, मैनुअल, संहिताओं आदि के अनुवाद का कार्य केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा किया जाता है। दैनिक प्रकृति का अनुवाद मंत्रालयों, विभागों में कार्यरत अनुवाद अधिकारी करते हैं। आज प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अनुवाद कार्य की व्यवस्थाएं है। बहुत से सॉफ्टवेयर हैं जिनसे अनुवाद किया जा सकता है।

अनुवाद मुख्यतः एक साधन है। इसमें अभ्यास का बहुत महत्व है। इसीलिए कहा जाता है कि अनुवाद एक कला भी है और विज्ञान भी है। जैसे संगीत का निरंतर अभ्यास करने से उसमें निखार आता है, उसी तरह अनुवाद का निरंतर अभ्यास करने से अनुवाद कला को निखारा जा सकता है।

सहायक निदेशक
केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली

गृह (GRIHA)–ग्रीन रेटिंग फॉर इंटीग्रेटेड हैबिटेट असेसमेंट)–एक परिचय

शरद कुमार तिवारी

विषय सूची –

- गृह की उत्पत्ति
- गृह क्या है?
- गृह का उद्देश्य
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गृह
- भारत में गृह
- गृह प्रमाणन के मानदंड
- गृह प्रमाणित भवन के लाभ
- बीएचईएल न्यू बिल्डिंग प्रोजेक्ट

गृह की उत्पत्ति ?

गृह ग्रीन रेटिंग फॉर इंटीग्रेटेड हैबिटेट असेसमेंट का संक्षिप्त रूप है और हरित भवनों का राष्ट्रीय मानक है जिसे भारत सरकार ने 2007 में अपनाया था। यह राष्ट्रीय रेटिंग प्रणाली TERI (द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट), नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE), भारत सरकार द्वारा विकसित की गई है। यह राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत मानकों या बेंचमार्क के आधार पर किसी भवन के परफ़ॉर्मेंस का मूल्यांकन करता है। गृह भवनों के पूरे जीवन चक्र में पर्यावरण से संबंधित उनके समग्र निष्पादन का विश्लेषण करता है। गृह परिषद भारत में संधारणीय (ससटेनबल) आवासों से संबंधित वैज्ञानिक और प्रशासनिक मुद्दों को हल करने का स्वतंत्र निकाय/संस्था है। आंकड़ों के अनुसार, गृह के पास वर्तमान में लगभग 550 प्रोजेक्ट रजिस्टर्ड हैं।

गृह का उद्देश्य

संस्था का मुख्य लक्ष्य भवन की संसाधन खपत को कम करना है। इसके अलावा, इसका उद्देश्य कुछ सीमाओं और रेटिंग मानदंडों के अनुसार अपशिष्ट उत्पादन और समग्र पारिस्थितिक प्रभावों को कम करना है। गृह भवनों को कुछ बेंचमार्क और सीमाओं के साथ तुलना करके उनके संसाधन उपभोग, अपशिष्ट उत्पादन और समग्र पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

पांच 'R' सिद्धांत –

मना करना (Refuse): मानक स्तर से कम को मना करना और केवल अंतरराष्ट्रीय रुझानों, सामग्रियों, प्रौद्योगिकियों, उत्पादों आदि को अपनाना, विशेष रूप से उन स्थानों पर जहां स्थानीय विकल्प आसानी से उपलब्ध हैं।

कम करना (Reduce): सिस्टम, उच्च ऊर्जा खपत उत्पादों, प्रक्रियाओं आदि पर निर्भरता कम करना।

पुनः उपयोग (Reuse): लागत कम करने के लिए सामग्रियों, उत्पादों और पारंपरिक प्रौद्योगिकियों के साथ भवनों को डिजाइन करना।

पुनर्चक्रण (Recycling): निर्माण स्थल, परिचालन, निर्माण एवं विध्वंस के दौरान उत्पन्न सभी संभावित अपशिष्ट का पुनर्चक्रण करना।

पुनः आविष्कार (Reinvent): इंजीनियरिंग सिस्टम, डिज़ाइन एवं पद्धतियों का पुनः आविष्कार करना ताकि भारत विश्व के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गृह का महत्व

गृह को निम्न बिन्दुओं के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दी गई है:

1. सतत विकास (Sustainable Development) को बढ़ावा देने वाले अभिनव साधन के रूप में संयुक्त राष्ट्र से मान्यता प्राप्त।
2. भवन निर्माण क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने के साधन के रूप में श्री अल गोर ने गृह को एक नए संगठन 'द क्लाइमेट रियलिटी प्रोजेक्ट' के रूप में गठित किया।
3. यूएनईपी–एसबीसीआई (UNEP SBCI) ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भवन निर्माण ऊर्जा डेटा एकत्र करने के लिए गृह के इनपुट के आधार पर "कॉमन कार्बन मेट्रिक" विकसित किया है।

भारत में गृह का महत्व–

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने त्वरित पर्यावरणीय मंजूरी के लिए गृह के पूर्व–प्रमाणन को स्वीकार किया है:

- पिंपरी चिंचवड़ नगर निगम, महाराष्ट्र गृह–अनुरूप परियोजनाओं के डेवलपर्स को वित्तीय प्रोत्साहन (प्रीमियम में 50% तक की छूट) देता है।
- नोएडा प्राधिकरण ने 4–और 5–स्टार रेटिंग वाली गृह (GRIHA) परियोजनाओं के लिए फार (FAR& Floor Area Ratio) प्रोत्साहन कार्यक्रम अधिसूचित किया है।
- सीपीडब्ल्यूडी प्लिंथ एरिया दरों को गृह मानदंडों/ बेंचमार्क के अनुसार संशोधित किया गया है।
- गाजियाबाद में सीपीडब्ल्यूडी ग्रीन बिल्डिंग सेंटर ऑफ एक्सेलेंस और गृह की स्थापना की गई है।
- डीडीए, एनबीसीसी और बीएचईएल के दस्तावेजों को न्यूनतम 3 स्टार की गृह अनुपालन रेटिंग के लिए संशोधित किया गया है।
- केरल और असम सरकार ने गृह को अपनाया है।
- गृह को दिल्ली सरकार की कैबिनेट द्वारा अपनाया गया है।

गृह प्रमाणन के लिए मानदंड

भवनों का मूल्यांकन और रेटिंग तीन स्तरीय प्रणाली पर की जाती है। पेशेवरों और विशेषज्ञों की एक टीम प्रारंभिक मूल्यांकन करेगी और अंक प्रदान करेगी। मानदंड निम्नलिखित प्रमुख श्रेणियों में से एक में आते हैं:

- संसाधनों का संरक्षण एवं कुशल उपयोग
- स्वास्थ्य और स्वच्छता

गृह प्रमाणित भवन के लाभ

व्यापक अर्थ में, इस प्रणाली के साथ–साथ इससे जुड़ी गतिविधियाँ ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन, ऊर्जा की खपत और प्राकृतिक संसाधनों पर बोझ को कम करके, बड़े पैमाने पर समाज को लाभान्वित करती हैं। भवन मालिकों, उपयोगकर्ताओं और समग्र रूप से समाज के लिए हरित डिज़ाइन के कुछ लाभ निम्नलिखित हैं:

- ऊर्जा की खपत में कमी।
- प्राकृतिक क्षेत्रों, आवासों और जैव विविधता के विनाश को कम करना।
- मिट्टी के कटाव और अन्य विनाशकारी गतिविधियों को कम करना।
- पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग के माध्यम से अपशिष्ट उत्पादन को कम करना।
- पानी की खपत को कम करना।
- संगठन की साख और विपणन क्षमता को बढ़ाना।
- वायु एवं जल प्रदूषण में कमी ।
- उपयोगकर्ता उत्पादकता में वृद्धि ।

भारत सरकार से वित्तीय सहायता

भारत सरकार ने ग्रीन बिल्डिंग डेवलपर्स के प्रयासों को मान्यता दी है और देश के कुछ हिस्सों में ग्रीन बिल्डरों के लिए शानदार ऑफर की घोषणा की है:

- पुणे नगर निगम के अधिकार क्षेत्र में नई निर्माण परियोजनाओं वाले डेवलपर्स को गृह परिषद द्वारा दी गई स्टार रेटिंग के अनुसार, निगम को देय प्रीमियम शुल्क पर कुछ छूट मिलेगी।
- जयपुर विकास प्राधिकरण अधिनियम 1982 के अनुसार, शहरी विकास और आवास विभाग, राजस्थान सरकार के तहत एक निकाय ने अधिसूचित किया है कि 5,000 वर्ग मीटर से अधिक के भूखंड क्षेत्रों पर निर्मित भवन अतिरिक्त 5% फर्श क्षेत्र अनुपात (एफएआर) के लिए अर्हता प्राप्त कर लेंगी तो उन्हें गृह से 4– या 5–स्टार रेटिंग प्राप्त होगी।

बीएचईएल न्यू बिल्डिंग प्रोजेक्ट

बीएचईएल दो बेसमेंट, एक भूतल और 18 तल वाले एक कार्यालय भवन का निर्माण, नोएडा सैक्टर–16 ए, प्लॉट नंबर–25 पर कर रहा है। इस भवन के निर्माण से लेकर उपयोग तक का कार्य गृह के अनुरूप किया जा रहा है। इस भवन को 5 स्टार गृह रेटिंग प्राप्त करने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं।

अभियंता
बीएचईएल, कॉर्पोरेट कार्यालय, नोएडा

कहानी

उसने कहा था

चंद्रधर शर्मा गुलेरी

बड़े–बड़े शहरों के इक्के–गाड़ी वालों की जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बू कार्ट वालों की बोली का मरहम लगावे। जबकि बड़े शहरों की चौड़ी सड़को पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्के वाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट यौन–संबंध स्थिर करते हैं, कभी उसके गुप्त गुह्य अंगों से डॉक्टर को लजाने वाला परिचय दिखाते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पोरों की चींथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार भर की ग्लानि और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले तंग चक्करदार गलियों में हर एक लडढी वाले के लिए ठहर कर सब्र का समुद्र उमड़ा कर– बचो खालसाजी, हटो भाई, ठहरना भाई, आने दो लालाजी, हटो बाछा कहते हुए सफेद फेटों, खच्चरों और बतकों, गन्ने और खोमचे और भारे वालों के जंगल से राह खेते हैं। क्या मजाल है कि जी और साहब बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती ही नहीं, चलती है पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हुई। यदि कोई बुढ़िया बार–बार चिटौनी देने पर भी लीक से नहीं हटती तो उनकी वचनावली के ये नमूने हैं– हट जा जीणे जोगिए, हट जा करमाँ वालिए, हट जा, पुत्तां प्यारिए, बच जा लम्बी वालिए। समष्टि में इसका अर्थ है कि तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रों को प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहियों के नीचे आना चाहती है? बच जा। ऐसे बम्बू कार्ट वालों के बीच में होकर एक लड़का और एक लड़की चौक की दुकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथने से जान पड़ता था कि दोनों सिख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था और यह रसोई के लिए बड़ियाँ। दुकानदार एक परदेशी से गुंथ रहा था, जो सेर भर गीले पापड़ों की गड्डी गिने बिना हटता न था।

–– तेरा घर कहाँ है?

–– मगरे में। ...और तेरा?

–– माँझे में, यहाँ कहाँ रहती है?

–– अतरसिंह की बैठक में, वह मेरे मामा होते हैं।

–– मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरु बाजार में है।

इतने में दुकानदार निबटा और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ–साथ चले। कुछ दूर जाकर लड़के ने मुसकरा कर पूछा–– तेरी कुड़माई हो गई? इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ाकर 'धत' कहकर दौड़ गई और लड़का मुँह देखता रह गया।

दूसरे तीसरे दिन सब्जी वाले के यहाँ, या दूध वाले के यहाँ अकस्मात्

दोनों मिल जाते। महीना भर यही हाल रहा। दो–तीन बार लड़के ने फिर पूछा–– तेरी कुड़माई हो गई? और उत्तर में वही 'धत' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसी ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लड़की लड़के की संभावना के विरुद्ध बोली–– हाँ, हो गई।

–– कब?

–– कल, देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू। ... लड़की भाग गई।

लड़के ने घर की सीध ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन भर की कमाई खोई, एक कुत्ते को पत्थर मारा और गोभी वाले ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकरा कर अन्धे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।

–– होश में आओ। कयामत आयी है और लपटन साहब की वर्दी पहन कर आयी है।

–– क्या? –– लपटन साहब या तो मारे गये हैं या कैद हो गये हैं। उनकी वर्दी पहन कर कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने इसका मुँह नहीं देखा। मैने देखा है, और बातें की हैं। सौहरा साफ़ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू। और मुझे पीने को सिगरेट दिया है।

–– तो अब? –– अब मारे गए। धोखा है। सूबेदार कीचड़ में चक्कर काटते फिरेंगे और यहाँ खाई पर धावा होगा उधर उन पर खुले में धावा होगा। उठो, एक काम करो। पलटन में पैरों के निशान देखते–देखते दौड़ जाओ। अभी बहुत दूर न गये होंगे। सूबेदार से कहो कि एकदम लौट आवें। खंदक की बात झूठ है। चले जाओ, खंदक के पीछे से ही निकल जाओ। पत्ता तक न खुड़के। देर मत करो।

–– हुकुम तो यह है कि यहीं...

–– ऐसी तैसी हुकुम की! मेरा हुकुम है... जमादार लहनासिंह जो इस वक्त यहाँ सबसे बड़ा अफ़सर है, उसका हुकुम है। मैं लपटन साहब की ख़बर लेता हूँ।

–– पर यहाँ तो तुम आठ ही हो।

–– आठ नहीं, दस लाख। एक–एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ।

लौटकर खाई के मुहाने पर लहनासिंह दीवार से चिपक गया। उसने देखा कि लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले। तीनों को जगह–जगह खंदक की दीवारों में घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की गुत्थी थी, जिसे सिगड़ी के पास रखा। बाहर की तरफ जाकर एक दियासलाई जलाकर गुत्थी रखने... बिजली की तरह दोनों हाथों से उलटी बन्दूक को उठाकर लहनासिंह ने साहब की कुहनी पर तानकर दे मारा। धमाके के साथ साहब के हाथ से दियासलाई गिर पड़ी। लहनासिंह ने एक कुन्दा साहब की गर्दन पर मारा और साहब 'आँख! मीन गाट्ट' कहते हुए चित हो गये। लहनासिंह ने तीनों गोले बीनकर खंदक के बाहर फेंके और साहब को घसीटकर सिगड़ी के पास लिटाया। जेबों की तलाशी ली। तीन–चार लिफ़ाफ़े और एक डायरी निकाल कर उन्हें अपनी जेब के हवाले किया।

साहब की मूर्च्छा हटी। लहना सिंह हँसकर बोला–– क्यों, लपटन साहब, मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नीलगायें होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढाते हैं और लपटन साहब खोते पर चढ़ते हैं। पर यह तो कहो, ऐसी साफ़ उर्दू कहाँ से सीख आये? हमारे लपटन साहब तो बिना 'डैम' के पाँच लफ़्ज भी नहीं बोला करते थे।

लहनासिंह ने पतलून की जेबों की तलाशी नहीं ली थी। साहब ने मानो जाड़े से बचने के लिए दोनों हाथ जेबों में डाले। लहनासिंह कहता गया–– चालाक तो बड़े हो, पर माँझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आँखें चाहिए। तीन महीने हुए एक तुर्की मौलवी मेरे गाँव में आया था। औरतों को बच्चे होने का ताबीज बाँटता था और बच्चों को दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछाकर हुक्का पीता रहता था और कहता था कि जर्मनी वाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़–पढ़ कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गये हैं। गौ को नही मारते। हिन्दुस्तान में आ जायेंगे तो गोहत्या बन्द कर देंगे। मंडी के बनियों को बहकाता था कि डाकखाने से रुपये निकाल लो, सरकार का राज्य जाने वाला है। डाक बाबू पोल्हू राम भी डर गया था। मैंने मुल्ला की दाढ़ी मूंड़ दी थी और गाँव से बाहर निकालकर कहा था कि जो मेरे गाँव में अब पैर रखा तो –– साहब की जेब में से पिस्तौल चला और लहना की जाँघ में गोली लगी। इधर लहना की हेनरी मार्टिन के दो फ़ायरों ने साहब की कपाल–क्रिया कर दी।

धड़ाका सुनकर सब दौड़ आये।

बोधा चिल्लाया–– क्या है?

लहनासिंह में उसे तो यह कह कर सुला दिया कि 'एक हडका कुत्ता आया था, मार दिया' और औरों से सब हाल कह दिया। बंदूकें लेकर सब तैयार हो गये। लहना ने साफ़ा फाड़ कर घाव के दोनों तरफ पट्टियाँ कसकर बांधी। घाव माँस में ही था। पट्टियों के कसने से लहू बन्द हो गया।

इतने में सत्तर जर्मन चिल्लाकर खाई में घुस पड़े। सिखो की बंदूको की बाढ ने पहले धावे को रोका। दूसरे को रोका। पर यहाँ थे आठ (लहना सिंह तक–तक कर मार रहा था। वह खड़ा था औऱ लेटे हुए थे) और वे सत्तर। अपने मुर्दा भाईयों के शरीर पर चढ़कर जर्मन आगे घुसे आते थे। थोड़े मिनटो में वे... अचानक आवाज आयी ––'वाह गुरुजी की फतह ! वाहगुरु दी का खालसा!' और धड़ाधड़ बंदूको के फायर जर्मनो की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्कों के पाटों के बीच में आ गए। पीछे से सूबेदार हजारासिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने से लहनासिंह के साथियों के संगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछे वालों ने भी संगीन पिरोना शुरु कर दिया।

एक किलकारी और–– 'अकाल सिक्खाँ दी फौज आयी। वाह गुरु जी दी फतह! वाह गुरु जी दी खालसा! सत्त सिरी अकाल' और लड़ाई ख़तम हो गई। तिरसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खो में पन्द्रह के प्राण गए। सूबेदार के दाहिने कन्धे में से गोली आर पार निकल गयी। लहनासिंह की पसली में एक गोली लगी। उसने घाव को खंदक की गीली मिट्टी से पूर लिया। और बाकी का साफ़ा कसकर कमर बन्द की तरह लपेट लिया। किसी को ख़बर नही हुई कि लहना के दूसरा घाव –– भारी घाव –– लगा है। लड़ाई के समय चांद निकल आया था। ऐसा चांद जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थी जैसी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणो पदेशाचार्य' कहलाती। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन–मनभर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी

जब मैं दौड़ा दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहनासिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरन्त बुद्धि को सराह रहे थे और कर रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते। इस लड़ाई की आवाज तीन मील दाहिनी ओर की खाई वालों ने सुन ली थी। उन्होने पीछे टेलिफ़ोन कर दिया था। वहाँ से झटपट दो डॉक्टर और दो बीमार ढोने की गाड़ियाँ चलीं, जो कोई डेढ घंटे के अन्दर अन्दर आ पहुँचीं। फील्ड अस्पताल नजदीक था। सुबह होते–होते वहाँ पहुँच जाएंगे, इसलिए मामूली पट्टी बांधकर एक गाड़ी में घायल लिटाये गए और दूसरी में लाशें रखी गईं। सूबेदार ने लहनासिह की जाँघ में पट्टी बंधवानी चाही। बोधसिंह ज्वर से बर्रा रहा था। पर उसने यह कह कर टाल दिया कि थोड़ा घाव है, सवेरे देखा जायेगा। वह गाड़ी में लिटाया गया। लहना को छोडकर सूबेदार जाते नहीं थे। यह देख लहना ने कहा–– तुम्हे बोधा की कसम है और सूबेदारनी जी की सौगन्ध है तो इस गाड़ी में न चले जाओ।

–– और तुम?

–– मेरे लिए वहाँ पहुँचकर गाड़ी भेज देना। और जर्मन मुर्दों के लिए भी तो गाड़ियाँ आती होंगी। मेरा हाल बुरा नही हैं। देखते नही मैं खड़ा हूँ? वजीरासिंह मेरे पास है ही।

–– अच्छा, पर...

–– बोधा गाड़ी पर लेट गया। भला, आप भी चढ़ आओ। सुनिए तो, सूबेदारनी होराँ को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना।

–– और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझ से जो उन्होने कहा था, वह मैंने कर दिया।

गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते–चढ़ते लहना का हाथ पकड़कर कहा–– तूने मेरे और बोधा के प्राण बचाये हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी से तू ही कह देना। उसने क्या कहा था?

–– अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैंने जो कहा, वह लिख देना और कह भी देना।

गाड़ी के जाते ही लहना लेट गया। ––वजीरा, पानी पिला दे और मेरा कमरबन्द खोल दे। तर हो रहा है।

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ़ हो जाती है। जन्मभर की घटनाएँ एक–एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ़ होते है, समय की धुन्ध बिल्कुल उन पर से हट जाती है। लहनासिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहाँ आया हुआ है। दहीवाले के यहाँ, सब्जीवाले के यहाँ, हर कहीं उसे आठ साल की लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है कि तेरी कुड़माई हो गई? तब वह 'धत' कहकर भाग जाती है। एक दिन उसने वैसे ही पूछा तो उसने कहा––हाँ, कल हो गयी, देखते नही, यह रेशम के फूलों वाला सालू? यह सुनते ही लहनासिंह को दुःख हुआ। क्रोध हुआ। क्यों हुआ?

–– वजीरासिंह पानी पिला दे।

पच्चीस वर्ष बीत गये। अब लहनासिंह नं. 77 राइफ़ल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा, न मालूम वह कभी मिली थी या नहीं। सात दिन की छुट्टी लेकर जमीन के मुकदमे की पैरवी करने वह घर गया। वहाँ रेजीमेंट के अफ़सर की चिट्ठी मिली। फौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हजारासिंह की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधासिंह भी लाम पर जाते हैं, लौटते हुए हमारे घर होते आना। साथ चलेंगे।

सूबेदार का घर रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था। लहनासिंह सूबेदार के यहाँ पहुँचा। जब चलने लगे तब सूबेदार बेड़े में निकल कर आया। बोला–– लहनासिंह, सूबेदारनी तुमको जानती है। बुलाती है। जा मिल आ।

लहनासिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती है? कब से? रेजीमेंट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। 'दरवाजे पर जाकर मत्था टेकना' कहा। असीस सुनी। लहनासिंह चुप।

–– मुझे पहचाना?

–– नहीं।

–– तेरी कुड़माई हो गयी? ... धत... कल हो गयी... देखते नहीं, रेशमी बूटों वाला सालू... अमृतसर में...

भावों की टकराहट से मूर्च्छा खुली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।

–– वजीरासिंह, पानी पिला –– उसने कहा था।

स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है–– मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमकहलाली का मौक़ा आया है। पर सरकार ने हम तीमियों की एक घघरिया पलटन क्यों न बना दी जो मैं भी सूबेदारजी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भरती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया। सूबेदारनी रोने लगी–– अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन टाँगे वाले का घोड़ा दहीवाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़ों की लातों पर चले गये थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्त के पास खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।

रोती–रोती सूबेदारनी ओबरी में चली गयी। लहनासिंह भी आँसू पोछता हुआ बाहर आया।

–– वजीरासिंह, पानी पिला –– उसने कहा था।

लहना का सिर अपनी गोद में रखे वजीरासिंह बैठा है। जब मांगता है, तब पानी पिला देता है। आध घंटे तक लहना फिर चुप रहा, फिर बोला–– कौन? कीरतसिंह?

वजीरा ने कुछ समझकर कहा–– हाँ।

–– भइया, मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पट्ट पर मेरा सिर रख ले।

वजीरा ने वैसा ही किया।

–– हाँ, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस। अब के हाड़ में यह आम खूब फलेगा। चाचा–भतीजा दोनों यहीं बैठकर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है उतना ही बड़ा यह आम, जिस महीने उसका जन्म हुआ था उसी महीने मैंने इसे लगाया था।

वजीरासिंह के आँसू टप–टप टपक रहे थे। कुछ दिन पीछे लोगों ने अख़बारों में पढ़ा–––

फ्रांस और बेल्जियम–– 67वीं सूची–– मैदान में घावों से मरा –– न. 77 सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह।

हिंदी के सुप्रसिद्ध कहानीकार

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं पुरस्कार वितरण

बीएचईएल के दिल्ली–एनसीआर स्थित कार्यालयों में विश्व हिंदी दिवस–2024 के उपलक्ष्य में 05 प्रतियोगिताओं – सुनो कहानी (कर्मचारियों के 6 से 10 वर्ष की आयु वाले बच्चों हेतु), श्रुतलेख, आशु भाषण, छाया गीत संचालन तथा कविता पाठ का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में 211 कर्मचारियों ने भाग लिया। पुरस्कृत वितरण समारोह दिनांक 06 मार्च, 2024 को किया गया। विजेताओं को निदेशक (मा.सं.) द्वारा प्रमाण–पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

www.bhel.com

Follow us on

BHELOfficial BHEL_India BHEL_India bhel.india company/bhel